

PRODUCT INDEX

INDEX

1. MARGDARSHIKA
2. THEORY NOTES
3. UNIT WISE MCQ
4. AMRIUT BOOKLET
5. PYQ
6. TREND ANALYSIS
7. TOPPERS TOOL KIT (TTK)
8. MODEL PAPER

CLICK HERE TO GET

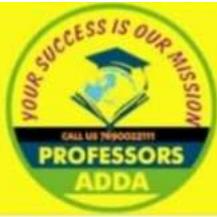
sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available



Download PROFESSORS ADDA APP



+91 7690022111 +91 9216228788



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers



**GET BEST
SELLER
HARD COPY
NOTES**



**PROFESSORS
ADDA**

**CLICK HERE
TO GET**



+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

PROFESSORS ADDA मार्गदर्शिका बुकलेट UPDATED 2025 संस्करण

मार्गदर्शिका बुकलेट यह क्या है,

क्यो पढे इसे ?

- यह UGC NET के विशाल और जटिल पाठ्यक्रम को सरल बनाने वाला एक सुनियोजित रोडमैप है। यह एक गुरु के द्वारा SUBJECT में success मार्ग को दिखाने की तरह है। आपको किसी पर निर्भर होने की जरूरत नहीं है।
- इसका मुख्य लक्ष्य "क्या पढ़ें, कहाँ से शुरू करें, और कितना गहरा पढ़ें" जैसे सवालों का स्पष्ट समाधान देना है। Focus पॉइंट्स को समझाया गया है
- यह आपकी तैयारी को छोटे (manageable) हिस्सों में बाँटकर एक व्यवस्थित दिशा देती है। आजकल परीक्षा का क्या नया ट्रेंड है, वह बताती है

यह किसके लिए है?

- UGC NET, PGT, Asst Professor) की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए उपयोगी है
- जो घर पर तैयारी कर रहे हैं, जो वर्किंग हैं, जिन्हें उचित Guidance नहीं मिल रहा है, जो वीडियो नहीं देखना चाहते हैं, उनके लिए बेहद उपयोगी है। उनके लिए One stop solution है

मुख्य विशेषताएँ और लाभ

- **लाभ :** विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं, सिद्धांतों और उदाहरणों को स्पष्ट करती है।
- **समय की बचत:** आपको अनावश्यक जानकारी से बचाकर सही दिशा दिखाती है। 100% exam oriented है
- **संपूर्ण कवरेज:** सुनिश्चित करती है कि पाठ्यक्रम का कोई भी महत्वपूर्ण हिस्सा न छूटे।
- **आत्मविश्वास में वृद्धि:** एक स्पष्ट योजना होने से तैयारी को लेकर घबराहट कम होती है।

इसका सर्वोत्तम उपयोग कैसे करें?

- Most important को जरूर याद करे
- गाइड में दिए गए क्रम का पालन करें।
- प्रत्येक टॉपिक की बुनियादी बातों पर मज़बूत पकड़ बनाएं।
- पढ़ते समय ProfessorsAdda Booklets में उन टॉपिक पर अवश्य फोकस करे
- विभिन्न अवधारणाओं के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करें।
- गाइड को आधार बनाकर MCQ अभ्यास पत्र और पुराने प्रश्नपत्र हल करें। ProfessorsAdda MCQ + PYQ booklet में यह सब दिया गया है जो की सम्पूर्ण, गुणवत्ता सहित updated है
- यह आपके व्यक्तिगत मार्गदर्शक (personal guide) की तरह काम करती है।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

भूगोल इकाई - 1 का अध्ययन कैसे करें

भूगोल और भूगर्भीय विज्ञान (Geography and Geological Science)

यह खंड मौलिक अवधारणाओं और पृथ्वी के इतिहास को शामिल करता है।

भूवैज्ञानिक समय स्केल (Geological Time Scale): भूवैज्ञानिक समय के विभाजनों (ईऑन, युग, अवधि, युग, आयु) और उनमें हुई महत्वपूर्ण घटनाओं को समझें, जिनमें पृथ्वी का निर्माण, जीवन की उत्पत्ति, महाद्वीपीय निर्माण, जलवायु परिवर्तन और विलुप्ति घटनाएँ शामिल हैं। प्रमुख ईऑन (क्रिप्टोज़ोइक और फ़ैनेरोज़ोइक) और उनके उप-विभाजनों पर ध्यान दें।

- **भूवैज्ञानिक समय स्केल का निर्माण (Formation of the Geological Time Scale):** स्केल के निर्माण में उपयोग की जाने वाली विधियों के बारे में जानें, जैसे क्षेत्रीय अवलोकन, जीवाश्म रिकॉर्ड, स्तरीय सहसंबंध, रेडियोधर्मी डेटिंग, पेलियोक्लाइमेटिक अध्ययन और पृथ्वी की कक्षा और घूर्णन का विश्लेषण।
- **प्रमुख घटनाएँ और परिवर्तन (Major Events and Transformations):** जीवन के विकास, महाद्वीपीय बदलाव (पंगिया), जलवायु परिवर्तन, विलुप्ति घटनाओं और मानव विकास पर ध्यान केंद्रित करें।
- **मानव युग और सभ्यता (Human Epoch and Civilization):** प्लेस्टोसीन और होलोसीन काल का अध्ययन करें, जिसमें आधुनिक मनुष्यों का विकास, प्रारंभिक संस्कृतियाँ, कृषि की शुरुआत और शहरों और सभ्यताओं का उदय शामिल है।
- **भूवैज्ञानिक समय स्केल का महत्व (Importance of the Geological Time Scale):** पृथ्वी के इतिहास को समझने में इसके महत्व और वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों से इसकी प्रासंगिकता को समझें।

भू-आकृति विज्ञान अवधारणाएँ और सिद्धांत (Geomorphological Concepts and Theories)

यह भाग भू-आकृतियों और उन्हें आकार देने वाली प्रक्रियाओं के अध्ययन में गहराई से उतरता है।

- **बुनियादी सिद्धांत (Basic Principles):** भौतिक भूगोल को भौतिक पर्यावरण और उसे प्रभावित करने वाले कारकों के अध्ययन के रूप में समझें, जिसमें पृथ्वी की सतह, वायुमंडल और आंतरिक भाग शामिल हैं।
- **भू-आकृति विज्ञान विचार का विकास (Evolution of Geomorphological Thought):** 1950 के बाद भू-आकृति विज्ञान में हुए परिवर्तनों के बारे में जानें, जिसमें डेविसन मॉडल की अस्वीकृति, मात्रात्मक तरीकों की शुरुआत और परिदृश्य विकास के गतिशील संतुलन सिद्धांत शामिल हैं।
- **भू-आकृति विज्ञान की अवधारणा (Concept of Geomorphology):** भू-आकृति विज्ञान को पृथ्वी की सतह और उसकी परतों पर बनने वाली भू-आकृतियों के व्यवस्थित अध्ययन के रूप में परिभाषित करें। भू-आकृतियों को प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक उच्चावच में वर्गीकृत करें और उनके उद्गम और विकास का अध्ययन करें।
- **भू-आकृतियों का विकास (Landform Development Methods):** भू-आकृति विकास के अध्ययन

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

के विभिन्न दृष्टिकोणों का अन्वेषण करें, जैसे कालानुक्रमिक मूल्यांकन, विकासवादी या जननिक अवधारणाएँ (इमिलियानी और डेविस के विचारों सहित), और क्षरण अवधारणाएँ (पॉवेल द्वारा आधार तल अवधारणा और डेविस द्वारा समप्राय मैदान अवधारणा सहित)।

- **भू-आकृति विकास से संबंधित सिद्धांत (Principles Related to Landform Development):** प्रमुख सिद्धांतों का अध्ययन करें जैसे गिलबर्ट का सिद्धांत (साम्यावस्था और लयबद्ध इतिहास सहित) और डेविस का सिद्धांत (भौगोलिक चक्र, सरिता जीवन का पूर्ण चक्र, ढाल का विकास)। पेंक के सिद्धांत और डेविस के मॉडल की उनकी आलोचना की भी जाँच करें।
- **पुस्तकें एवं उनके लेखक (Books and Authors):** भू-आकृति विज्ञान और भूविज्ञान से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों और उनके लेखकों के लिए दी गई तालिका देखें।

भूपर्पटी का उद्गम एवं विकास (Origin and Evolution of Earth's Crust)

यह खंड पृथ्वी की परत के निर्माण और विशेषताओं पर केंद्रित है।

- **उद्गम एवं विकास (Origin and Evolution):** पृथ्वी के गर्म गैसीय द्रव्यमान के ठंडा होने से पृथ्वी के निर्माण और महाद्वीपों और महासागरों के बाद के विकास के व्यापक रूप से स्वीकृत दृष्टिकोण के बारे में जानें।
- **भूपर्पटी की संकल्पना (Concept of Earth's Crust):** भूपर्पटी को पृथ्वी की ठोस बाहरी परत के रूप में परिभाषित करें, जो विभिन्न चट्टानों से बनी है। पृथ्वी की संरचना और भूपर्पटी (सियाल और सीमा) की संरचना के संबंध में डेसकार्टेस, लाइबनिट्स और होम्स द्वारा प्रस्तावित अवधारणाओं का अध्ययन करें।
- **भूपर्पटी के तत्व (Elements of the Crust):** पृथ्वी की परत में पाए जाने वाले प्रमुख तत्वों और उनके प्रतिशत के लिए दी गई तालिका देखें।
- **घनत्व और मोटाई (Density and Thickness):** भूपर्पटी के घनत्व और महाद्वीपीय और महासागरीय क्षेत्रों में इसकी मोटाई में भिन्नता को समझें। मोहोरोविसिस (मोहो) असांतत्य के बारे में जानें जो भूपर्पटी को मेंटल से अलग करता है।
- **भूपर्पटी के उद्गम से संबंधित परिकल्पनाएँ (Hypotheses on the Origin of the Earth's Crust):** कांट की वायव्य राशि परिकल्पना, लाप्लास की निहारिका परिकल्पना, केल्विन की परिकल्पना, सोलास की परिकल्पना, लोथियन ग्रीन का चतुष्फलकीय सिद्धांत, लेपवर्थ और लव की परिकल्पनाएँ, जींस का सिद्धांत, चैंबरलिन तथा मोल्टन का सिद्धांत, जेफ्रीज का सिद्धांत, और स्वैस की परिकल्पना सहित विभिन्न परिकल्पनाओं का अध्ययन करें।
- **पृथ्वी के विकास के मॉडल (Models of Earth's Growth):** पृथ्वी की परत के विकास के संबंध में विषमांग अभिवृद्धि मॉडल और प्लेट विवर्तनिकी मॉडल को समझें।
- **भूपर्पटी के भाग (Parts of the Crust):** भूपर्पटी को महाद्वीपीय, महासागरीय और संक्रमण भूपर्पटी में उनकी भौतिक, रासायनिक और भूगर्भीय विशेषताओं के आधार पर अंतर करें। महाद्वीपीय भूपर्पटी के उप-विभाजनों (क्रेटाँन, शील्ड, प्लेटफॉर्म, पर्वतनी पेटियाँ, मैदान) और महासागरीय भूपर्पटी की विशेषताओं का

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

अध्ययन करें। महासागरीय भूपर्पटी की संरचना के लिए दी गई तालिका देखें।

पृथ्वी और सौर मंडल में इसका स्थान (Earth and its Place in the Solar System)

यह खंड पृथ्वी की मूल विशेषताओं और गतियों को शामिल करता है।

- **पृथ्वी की कक्षाएँ और घूर्णन (Earth's Orbit and Rotation):** सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की परिक्रमा, अपनी धुरी पर इसका घूर्णन, और दिन, रात और ऋतुओं जैसी परिणामी घटनाओं को समझें। लीप वर्ष और विषुव और संक्रांति के बारे में जानें।
- **पृथ्वी की संरचना (Earth's Structure):** पृथ्वी की आंतरिक परतों: आंतरिक कोर, बाहरी कोर, मेंटल और पपड़ी का अध्ययन करें, जिसमें उनकी संरचना और मोटाई शामिल है।
- **भू-रचना और भूगर्भीय गतिविधियाँ (Geological Activities):** प्लेट विवर्तनिकी और भूकंप और ज्वालामुखी से इसके संबंध को समझें।
- **पृथ्वी का वायुमंडल (Earth's Atmosphere):** वायुमंडल की संरचना और पृथ्वी के तापमान को बनाए रखने और इसे हानिकारक विकिरण और उल्काओं से बचाने में इसकी भूमिका के बारे में जानें। वायुमंडल पर मानवीय गतिविधियों के प्रभाव को समझें।
- **अक्षांश और देशांतर (Latitude and Longitude):** अक्षांश और देशांतर रेखाओं को परिभाषित करें और समझें और पृथ्वी पर स्थिति को परिभाषित करने में उनकी भूमिका जानें।

पृथ्वी का आंतरिक भाग (Interior of the Earth)

यह भाग पृथ्वी के आंतरिक भाग की संरचना और संरचना का अन्वेषण करता है।

- **संरचना और संरचना (Structure and Composition):** तीन मुख्य परतों (क्रस्ट, मेंटल और कोर) और उनके उप-विभाजनों को दोहराएँ।
- **सूचना के स्रोत (Sources of Information):** पृथ्वी के आंतरिक भाग को समझने के लिए प्रत्यक्ष स्रोतों (सतह की चट्टानें, खनन, ड्रिलिंग, ज्वालामुखी विस्फोट) और अप्रत्यक्ष स्रोतों (उल्कारिपिंड, गुरुत्वाकर्षण, चुंबकीय क्षेत्र, भूकंपीय गतिविधि) के बारे में जानें।
- **पृथ्वी की परतें (Earth's Layers):** क्रस्ट (महाद्वीपीय और महासागरीय), मेंटल (ऊपरी और निचला, एस्थेनोस्फीयर और स्थलमंडल सहित), और कोर (बाहरी और आंतरिक) सहित प्रत्येक परत की विशेषताओं का अध्ययन करें।
- **भूकंपीय विक्षेप (Seismic Discontinuities):** विभिन्न भूकंपीय विच्छिन्नताओं (कोनोराड, मोहोरिविक, रेपिटि, गुटेनबर्ग, लेहमैन) को समझें जो परतों के बीच की सीमाओं को दर्शाते हैं।
- **तापमान, दबाव और घनत्व (Temperature, Pressure, and Density):** जानें कि पृथ्वी के अंदर गहराई के साथ तापमान, दबाव और घनत्व कैसे भिन्न होते हैं।

प्लेट विवर्तनिकी (Plate Tectonics)

यह खंड प्लेट विवर्तनिकी के सिद्धांत और निहितार्थों पर केंद्रित है।

- **सिद्धांत का निरूपण (Formulation of the Theory):** प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के निरूपण के कारण हुए विकास को समझें, जिसमें सीफ्लोर के प्रसार की अवधारणा, पुराचुंबकत्व, समुद्र तल की आयु, द्वीप चाप, पनडुब्बी खाइयाँ, भूकंप, ज्वालामुखी और हॉटस्पॉट शामिल हैं।
- **टेक्टोनिक प्लेट (Tectonic Plates):** टेक्टोनिक प्लेटों को स्थलमंडल के कठोर स्लैब के रूप में परिभाषित करें और प्रमुख और छोटी प्लेटों के साथ-साथ महाद्वीपीय और महासागरीय प्लेटों के बीच अंतर करें। समझें कि प्लेट विवर्तनिकी इन प्लेटों के विकास, प्रकृति, गति, विरूपण, प्लेट मार्जिन और परिणामी लैंडफॉर्म के लिए एक सामूहिक शब्द है।
- **प्लेट टेक्टोनिक्स का सिद्धांत (Theory of Plate Tectonics):** मुख्य सिद्धांत सीखें कि पृथ्वी के स्थलमंडल को सात प्रमुख और कई छोटी प्लेटों में विभाजित किया गया है। समझें कि प्लेटों की गति से तनाव होता है और ऊपर महाद्वीपीय चट्टानों के निर्माण में परिणत होता है, जिससे तह, गलती और ज्वालामुखी गतिविधि होती है। अल्फ्रेड वेगेनर ने सोचा कि महाद्वीप चलते हैं, लेकिन, यह गलत है। उन्होंने आगे माना कि सभी महाद्वीप शुरू में एक सुपर-महाद्वीप, पैंगिया के रूप में मौजूद थे।
- **प्रमुख और छोटी प्लेटें (Major and Minor Plates):** सात प्रमुख प्लेटों के नाम और विभिन्न छोटी प्लेटों से खुद को परिचित कराएँ।
- **प्लेट्स के आंदोलन के पीछे बल (Forces Behind Plate Movement):** समझें कि मेंटल में संवहन धाराएं प्लेट मूवमेंट के पीछे प्राथमिक बल हैं।
- **प्लेट मूवमेंट की दरें (Rates of Plate Movement):** सीखें कि प्लेट मूवमेंट की दरें कैसे निर्धारित की जाती हैं और वे काफी भिन्न होती हैं।
- **प्लेट टेक्टोनिक्स के सिद्धांत का महत्व (Significance of Plate Tectonics):** प्लेट टेक्टोनिक्स के महत्व को समझें जैसे भूकंप, ज्वालामुखी, और महासागरीय घाटियों और महाद्वीपों के अस्तित्व की व्याख्या करता है।
- **प्लेटों का एक-दूसरे के सापेक्ष में संचलन (Movement of Plates with Respect to One Another):** रचनात्मक (अपसारी), संरक्षी (रूपांतरण), और विनाशत्मक (अभिसारी) प्लेट सीमाओं और प्रत्येक से जुड़ी भूगर्भीय विशेषताओं के बीच अंतर करें।
- **प्लेट सीमांत के विकास की प्रक्रिया (Process of formation of Plate Boundaries):** अपसारी (अंतः महाद्वीपीय दरार, अंतरप्लेट विरलन, महासागरीय कटक निर्माण) और अभिसारी (महासागरीय-महाद्वीपीय टक्कर, महासागरीय महासागरीय टक्कर, महाद्वीपीय महाद्वीपीय टक्कर) प्लेट सीमाओं के निर्माण में शामिल प्रक्रियाओं का अध्ययन करें।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

चट्टानों और चट्टानों के प्रकार (Rocks and Types of Rocks)

यह खंड चट्टानों की संरचना, वर्गीकरण और निर्माण को शामिल करता है।

- **चट्टानें (Rocks):** चट्टानों को खनिजों के ठोस समुच्चय के रूप में परिभाषित करें जो पृथ्वी की पपड़ी का निर्माण करती हैं। विभिन्न विशेषताओं के आधार पर चट्टानों के गुणों और वर्गीकरण के बारे में जानें।
- **चट्टानों के प्रकार (Types of Rocks):** चट्टानों को उनके निर्माण के तरीके के आधार पर तीन मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत करें: आग्नेय पत्थर, अवसादी चट्टानें, और रूपांतरित चट्टानें।
- **आग्नेय पत्थर (Igneous Rocks):** स्थलमंडल की आंतरिक परतों में प्राप्त, अग्नि के समान गर्म गलित तप्त पदार्थ अर्थात् 'मैग्मा' के ठंडे होने से होती है। निर्माण प्रक्रिया और शीतलन स्थान के आधार पर ज्वालामुखीय (बाह्य) और प्लूटोनिक (घुसपैठिया) चट्टानों में वर्गीकरण के बारे में जानें। आग्नेय चट्टानों की विशेषताओं का अध्ययन करें। ग्रेनाइट, बेसाल्ट, डायोराइट, ग्रेब्रो, रायोलाइट आदि आग्नेय चट्टानों के उदाहरण हैं।
- **अवसादी चट्टानें (Sedimentary Rocks):** अनाच्छादन की प्रक्रिया से अवसादों के निक्षेपण और कंक्रीट होने से अवसादी चट्टानों का निर्माण होता है। अवसादी चट्टानों की विशेषताओं का अध्ययन करें, जिसमें जीवाश्मों की उपस्थिति शामिल है। निर्माण के तरीके के आधार पर अवसादी चट्टानों को वर्गीकृत करें: यंत्रवत रूप से बना, संगठित रूप से, और रासायनिक रूप से निर्मित। बलुई पत्थर, शेल, चूना पत्थर, लोस, कांग्लोमरेट आदि अवसादी चट्टानों के उदाहरण हैं।
- **रूपांतरित या कायांतरित चट्टानें (Metamorphic Rocks):** आग्नेय या अवसादी शैल/चट्टान के मौलिक स्वरूप में परिवर्तन होने से कायांतरित शैल का निर्माण होता है। रूपांतरण की प्रक्रिया (गतिक, तापीय, संपर्क, क्षेत्रीय) और परिणामी बनावट (फोलिएशन, बैंडिंग) के बारे में जानें। नीस (Gneiss), शिस्ट (Schist), संगमरमर, क्वार्ट्जाइट आदि रूपांतरित चट्टानों के उदाहरण हैं।
- **शिला चक्र (Rock Cycle):** चट्टानों के तीन प्रकारों के बीच परिवर्तन की एक सतत प्रक्रिया के रूप में रॉक चक्र को समझें।
- **संबंधित शर्तें (Related Terms):** खनिज, मैग्मा, लावा, पेट्रोलॉजी, अपक्षय, कटाव, डायजेनेसिस, जोड़ना, संघनन जैसे शब्दों से खुद को परिचित कराएँ।
- **चट्टान : संक्षेप में (Rock: In Nutshell):** आग्नेय, अवसादी और रूपांतरित चट्टानों की मुख्य विशेषताओं के लिए सारांश देखें।

महाद् द्वीपीय बहाव सिद्धांत (Continental Drift Theory)

यह खंड महाद्वीपीय बहाव का समर्थन करने वाले सिद्धांत और सबूतों को शामिल करता है।

- **सिद्धांत (Theory):** समुद्र तल पर महाद्वीपों की गति के रूप में महाद्वीपीय बहाव की अवधारणा को समझें। अल्फ्रेड वेगेनर के पैंगिया सिद्धांत और लॉरेशिया और गोंडवानालैंड में इसके विखंडन के बारे में जानें।
- **महा द्वीपीय बहाव के चरण (Continental Drift के चरण):** पैंगिया के अस्तित्व से लेकर महाद्वीपों के वर्तमान विन्यास तक महाद्वीपीय बहाव के विभिन्न चरणों का अध्ययन करें।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- **महा द्वीपीय बहाव के लिए जिम्मेदार बल (Forces Responsible):** महाद्वीपीय बहाव के लिए जिम्मेदार प्रस्तावित बलों को समझें, जैसे ध्रुव-पलायन बल और ज्वारीय धाराएं। स्वीकार करें कि ये बल बाद में अपर्याप्त पाए गए।
- **कॉन्टिनेंटल बहाव सिद्धांत के समर्थन में साक्ष्य (Evidence Supporting the Theory):** वेगेनर द्वारा प्रदान किए गए साक्ष्य का अध्ययन करें, जिसमें महाद्वीपों का जिग-साँ फिट, महासागरों में समान आयु की चट्टानें, जीवाश्म साक्ष्य, और जमा शामिल हैं।
- **कॉन्टिनेंटल बहाव सिद्धांत की आलोचना (Criticism of the Theory):** वेगेनर के सिद्धांत की आलोचना को समझें, जैसे कि जिग-साँ फिटिंग में खामियां, अपर्याप्त बल, दिशात्मक असंगतियाँ, और पूर्व-कार्बोनिफेरस इतिहास को समझाने में विफलता।
- **कॉन्टिनेंटल बहाव सिद्धांत की वर्तमान स्थिति (Current Status):** समझें कि हालांकि सिद्धांत में कमियाँ थीं, यह प्लेट टेक्टोनिक्स के आधुनिक सिद्धांत का अग्रदूत था।

भूकम्प (Earthquake)

यह खंड भूकंप, उनके कारणों, प्रभावों और वितरण पर केंद्रित है।

- **भूकम्प (Earthquake):** पृथ्वी की सतह पर होने वाले अचानक कंपन को भूकंप कहते हैं जो पृथ्वी के आंतरिक भाग में ऊर्जा के निकलने के कारण होता है। फोकस और अधिकेंद्र जैसे शब्दों को समझें।
- **भूकम्पीय तरंगें (Seismic Waves):** भूगर्भिक तरंगों (P और S तरंगों) और धरातलीय तरंगों (L तरंगों) के बीच अंतर करें। प्रत्येक प्रकार की तरंगों की विशेषताओं, गति और यात्रा के माध्यम का अध्ययन करें।
- **भूकम्प के कारण (Cause of Earthquake):** भूकंप का प्राथमिक कारण प्लेट विवर्तनिकी और प्लेट मूवमेंट से उत्पन्न असंतुलन है। विभिन्न प्लेट सीमाओं (रचनात्मक, विनाशकारी, संरक्षी) पर भूकंप कैसे आते हैं, इसे जानें। ज्वालामुखी विस्फोट, गलती, वलन, बड़े जलाशय और खनन गतिविधियों जैसे अन्य कारणों का अध्ययन करें।
- **अन्तः प्लेट संचलन (Intraplate Movement):** समझें कि महाद्वीपीय संचलन के कारण प्लेटों के भीतर भी भूकंप आ सकते हैं।
- **भूकम्प का पूर्वानुमान (Earthquake Prediction):** भूकंप की भविष्यवाणी के लिए संभावित संकेतकों के बारे में जानें, जैसे रेडॉन गैस का उत्सर्जन और जानवरों का व्यवहार।
- **भूकम्प की माप (Measurement of Earthquake):** तीव्रता और परिमाण के आधार पर भूकंपों को कैसे मापा जाता है, इसे समझें। रिक्टर स्केल और मरकेली स्केल के बारे में जानें।
- **भूकम्पों का विश्व वितरण (World Distribution of Earthquake):** दुनिया भर में प्रमुख भूकम्पीय पेटियों का अध्ययन करें: परि-प्रशांत महासागरीय पेटि, मध्य अटलांटिक पेटि और मध्य महाद्वीपीय पेटि।
- **भूकम्प के प्रभाव (Effects of Earthquake):** भूकंप के विनाशकारी प्रभावों को समझें, जिसमें जमीन का हिलना, धरातलीय विसंगति, भूस्खलन, मृदा सर्पण, धरातलीय झुकाव, हिम-स्खलन, सुनामी, बाढ़ और जानमाल का नुकसान शामिल है। कुछ लाभकारी प्रभावों को स्वीकार करें जैसे झीलों और प्राकृतिक बंदरगाहों का निर्माण और मूल्यवान खनिजों का सतह पर आना।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- **भूकम्प के प्रकार (Types of Earthquakes):** फोकस की स्थिति (सामान्य, माध्यमिक, गहरा) और स्थिति (स्थलीय, सागरीय) के आधार पर भूकम्पों को वर्गीकृत करें। उनके कारणों (ज्वालामुखीय, विवर्तनिक, पाताली) के आधार पर उन्हें वर्गीकृत करें।
- **भूकंपीय तरंगों का संचरण और छाया क्षेत्र (Seismic Waves Transmission and Shadow Zone):** समझें कि भूकंपीय तरंगें पृथ्वी के आंतरिक भाग से कैसे यात्रा करती हैं और P और S तरंगों के लिए भूकंपीय तरंग छाया क्षेत्रों की अवधारणा।
- **तीव्रता व परिमाण मापने की विधियाँ (Methods of Measuring the Intensity and Magnitude of Earthquake):** विभिन्न परिमाण पैमानों (स्थानीय, सतह-तरंग, शरीर-तरंग, क्षण परिमाण) और तीव्रता पैमानों (संशोधित मरकेली तीव्रता पैमाना) और उनके अनुप्रयोगों के बारे में जानें। रिक्टर पैमाने के बारे में विस्तार से जानें।
- **भूकंपीय क्षेत्रों का सीमांकन (Demarcation of Seismic Zone):** भारत में भूकंपीय क्षेत्रों को भूगर्भीय और विवर्तनिक ढाँचों के आधार पर कैसे सीमांकित किया जाता है, इसे जानें।

ज्वालामुखी (VOLCANO)

यह खंड ज्वालामुखी, उनके कारणों, प्रकारों, भू-आकृतियों और वितरण को शामिल करता है।

- **ज्वालामुखी (VOLCANO):** पृथ्वी की सतह पर ऐसे मुख या दरार को ज्वालामुखी कहते हैं जिससे पृथ्वी के आंतरिक हिस्सों से गर्म लावा, गैस, राख और चट्टानों के टुकड़े बाहर निकलते हैं। ज्वालामुखीयता की प्रक्रिया को समझें।
- **ज्वालामुखीयता और प्लेट विवर्तनिकी (Volcanism and Plate Tectonics):** ज्वालामुखीयता और प्लेट विवर्तनिकी के बीच मजबूत संबंध को समझें, जिसमें अधिकांश ज्वालामुखी प्लेट सीमाओं या हॉटस्पॉट के पास स्थित होते हैं।
- **ज्वालामुखी स्थलरूप (Volcanic Landforms):** ज्वालामुखीय गतिविधि द्वारा बनाई गई घुसपैठिया (बैथोलिथ, लैकोलिथ, सिल, डाइक) और बाह्य (लावा प्रवाह, ज्वालामुखी पर्वत, पठार) भू-आकृतियों के बीच अंतर करें।
- **रचनात्मक और विनाशात्मक पहलू (Constructive and Destructive Aspects):** समझें कि ज्वालामुखीयता रचनात्मक (नई भू-आकृतियों और उपजाऊ मिट्टी का निर्माण) और विनाशकारी (जीवन और संपत्ति को नुकसान पहुंचाना) दोनों हो सकती है।
- **ज्वालामुखीय घटनाएँ (Volcanic Events):** समझें कि ज्वालामुखीय घटनाएँ अचानक और तीव्र होती हैं, जिससे पृथ्वी की पपड़ी में तत्काल और गंभीर परिवर्तन होते हैं।
- **ज्वालामुखी की संरचना (Structure of a Volcano):** क्रेटर और काल्डेरा सहित ज्वालामुखी के हिस्सों के बारे में जानें। समझें कि मैग्मा में सिलिका की मात्रा कैसे विस्फोट की तीव्रता को प्रभावित करती है।
- **ज्वालामुखियों के प्रकार (Types of Volcanoes):** उनकी गतिविधि के आधार पर ज्वालामुखियों को वर्गीकृत करें: सक्रिय, सुषुप्त और मृत। प्रत्येक प्रकार के उदाहरणों का अध्ययन करें।
- **उद्गार के आधार पर ज्वालामुखी का वर्गीकरण (Classification Based on Eruption):**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

ज्वालामुखी को उनके उद्गार की प्रकृति के आधार पर वर्गीकृत करें: दरारी उद्गार और केंद्रीय उद्गार। विभिन्न प्रकार के केंद्रीय उद्गार (हवाई, स्ट्राम्बोली, वुलकेनियन, पीलियन, विसुवियस) का अध्ययन करें।

- **ज्वालामुखी उद्गार के कारण (Causes of Volcanic Eruption):** ज्वालामुखी विस्फोट के भूगर्भीय कारणों को समझें, जिसमें प्लेट विवर्तनिकी, कमजोर भू-पटल, भू-गर्भ में अत्यधिक तापमान और गैसों की उत्पत्ति शामिल है।
- **ज्वालामुखी से निःसृत पदार्थ (Materials Emitted):** ज्वालामुखी विस्फोट के दौरान निकलने वाले विभिन्न पदार्थों के बारे में जानें, जिनमें गैसें (जलवाष्प, कार्बन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड), तरल पदार्थ (लावा), और ठोस पदार्थ (राख, लेपिली, ज्वालामुखी बम) शामिल हैं। सिलिका सामग्री (अम्लीय और पैथिक क्षारीय) के आधार पर लावा का वर्गीकरण समझें।
- **ज्वालामुखीय स्थलाकृतियाँ (Volcanic Landforms (Detailed)):** बाह्य स्थलाकृतियों का विस्तार से अध्ययन करें, जिसमें सिण्डर शंकु, मिश्रित शंकु, परिपोषित शंकु, लावा पठार और ज्वालामुखीय पर्वत शामिल हैं। अंतर्वेधी स्थलाकृतियों का विस्तार से अध्ययन करें, जिसमें बैथोलिथ, लैकोलिथ, डाइक, सिल, फैंकोलिथ और लोपोलिथ शामिल हैं।
- **ज्वालामुखी का विश्व वितरण (World Distribution of Volcanoes):** प्रमुख ज्वालामुखीय पेटियों, विशेष रूप से परिप्रशांत महासागरीय पेटि (अग्नि वलय), मध्य महाद्वीपीय पेटि और मध्य अटलांटिक मेखला का अध्ययन करें। अन्य बिखरे हुए ज्वालामुखीय क्षेत्रों के बारे में जानें।
- **ज्वालामुखी से मानव को लाभ (Benefits of Volcanoes):** मनुष्यों के लिए ज्वालामुखीय गतिविधि के फायदे समझें, जैसे उपजाऊ मिट्टी, खनिज संसाधन और भू-तापीय ऊर्जा।
- **विश्व के प्रमुख ज्वालामुखी (Major Volcanoes):** दुनिया भर के प्रमुख ज्वालामुखियों और उनके स्थानों की सूची के लिए तालिका देखें।

वलन और भ्रंश (Folds and Faults)

यह खंड वलन और भ्रंश के निर्माण और प्रकारों और उनके द्वारा बनाई गई भू-आकृतियों को शामिल करता है।

- **वलन (Folds):** चट्टान की परतों में दबाव के कारण उत्पन्न लहरदार मोड़ों को वलन कहते हैं। अपनति (ऊपर उठे हुए भाग) और अभिनति (नीचे धंसे हुए भाग) के बीच अंतर करें।
- **वलन के प्रकार (Types of Folds):** उनकी विशेषताओं के आधार पर विभिन्न प्रकार के वलनों का अध्ययन करें, जैसे अधिवलन, सममित वलन, असममित वलन, एकनत वलन, समनत वलन, परिवलित वलन, अधिक्षिप्त वलन, प्रतिवलन ग्रीवा खण्ड।
- **वलन द्वारा निर्मित भू-आकृतियों की विशेषताएँ (Landforms Made by Folding):** नति/डिप और नतिलंब (स्ट्राइक) जैसे वलित संरचनाओं से संबंधित शब्दों को समझें।
- **भ्रंश (FAULT):** भ्रंश को पृथ्वी की सतह पर एक दरार या टूट के रूप में परिभाषित करें जहाँ चट्टान के ब्लॉक एक दूसरे के सापेक्ष में खिसक जाते हैं। भ्रंश के विभिन्न भागों (भ्रंश तल, भ्रंश नति, शीर्ष भित्ति, पाद भित्ति, शिफ्ट, स्लिप, श्री, हीव, हेज, भ्रंश रेखा, भ्रंश कगार) को समझें।
- **भ्रंश के प्रकार (Types of Faults):** सामान्य भ्रंश, विपरीत या उत्क्रम भ्रंश, अधिक्षेप भ्रंश, सोपानी भ्रंश

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

सहित विभिन्न प्रकार के भ्रंशों का अध्ययन करें।

- **भ्रंश से उत्पन्न स्थलाकृतियाँ (Landforms Created by Faulting):** भ्रंश से उत्पन्न भू-आकृतियों के बारे में जानें, जैसे भ्रंश घाटी (ग्रैबेन) और होस्ट या ब्लॉक पर्वत। राइन घाटी और भारत में नर्मदा और दामोदर नदी घाटियों जैसे भ्रंश घाटियों के उदाहरणों का अध्ययन करें। रैम्प घाटी के बारे में जानें।

पर्वत, पठार, मैदान, झील, नदियों का अपवाह तंत्र व प्रारूप एवं मरुस्थल (Mountains, Plateaus, Plains, Lakes, Rivers, and Deserts)

यह खंड प्रमुख भू-आकृतियों का अवलोकन प्रदान करता है।

- **पर्वत (Mountain):** पर्वत को पृथ्वी की सतह के ऊंचे चट्टानी भाग के रूप में परिभाषित करें जिसमें तेज ढलान और संकीर्ण शिखर होते हैं। आयु (प्री-कैम्ब्रियन, कैलिडोनियन, हर्सिनियन, अल्पाइन), ऊंचाई (निम्न, ऊंचे, साधारण ऊंचे, अधिक ऊंचे), और उद्गम (वलित, ज्वालामुखी, अवशिष्ट) के आधार पर विभिन्न वर्गीकरणों को समझें। दुनिया भर के प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं और चोटियों का अध्ययन करें। पर्वत निर्माण के प्रमुख सिद्धांतों पर तालिका देखें।
- **पठार (Plateau):** पठार को कम से कम एक खड़ी ढलान और एक सपाट शीर्ष के साथ ऊंचे भू-आकृतियों के रूप में परिभाषित करें। बहिर्जात बलों (अंतरापर्वतीय, महाद्वीपीय, पर्वतपदीय, ज्वालामुखी, गुंबदाकार) और अंतर्जात बलों (हिमानी, जल, पवन) द्वारा उनके निर्माण के आधार पर पठारों को वर्गीकृत करें। दुनिया भर के प्रमुख पठारों का अध्ययन करें।
- **मैदान (Plain):** मैदानों को समतल और विस्तृत भू-भाग के रूप में परिभाषित करें, जो आमतौर पर कम ऊंचाई पर होते हैं। उनके निर्माण के आधार पर मैदानों को वर्गीकृत करें: संरचनात्मक, अपरदनात्मक (पेनिप्लेन, हिमानी, पवन, कास्ट), और निक्षेपात्मक (जलोढ़, हिमानी, पवन, सरोवरीय)। दुनिया भर के प्रमुख मैदानों का अध्ययन करें।
- **झील (Lake):** झीलों को पृथ्वी की सतह पर जल से भरे गड्ढों के रूप में परिभाषित करें। उनकी विशेषताओं के बारे में जानें। दुनिया भर की प्रमुख झीलों का अध्ययन करें।
- **मरुस्थल (Desert):** मरुस्थलों को शुष्क या अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के रूप में परिभाषित करें, जो अक्सर उपोष्णकटिबंधीय उच्च दबाव क्षेत्रों में पाए जाते हैं। वास्तविक मरुस्थल (रेतीले), पथरीले मरुस्थल और चट्टानी मरुस्थल में वर्गीकृत करें। दुनिया भर के प्रमुख मरुस्थलों का अध्ययन करें।

भूस्खलन और हिमस्खलन (Landslide and Avalanche)

यह खंड भूस्खलन और हिमस्खलन को भू-आकृतिक खतरों के रूप में शामिल करता है।

- **भूस्खलन (Landslide):** भूस्खलन को गुरुत्वाकर्षण के कारण ढलान से चट्टान, मलबे या पृथ्वी के नीचे की ओर बढ़ने के रूप में परिभाषित करें। विभिन्न प्रकार के भूस्खलन (गिरना, ढहना, फैलना, स्लाइड और प्रवाह) और योगदान करने वाले कारकों (ढाल की अस्थिरता, अपक्षय, घटती भूमि का निर्माण, तुरंत और दीर्घकालिक कारण) को समझें। भूस्खलन के खतरों को कम करने के तरीकों के बारे में जानें (परिहार,

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

कतरनी तनाव को कम करना, जल निकासी में सुधार, कतरनी प्रतिरोध में वृद्धि)।

- **हिमस्खलन (Avalanche):** हिमस्खलन को बर्फ और बर्फ के टुकड़े ढलानों से गिरने के रूप में परिभाषित करें। सामग्री के आधार पर हिमस्खलन के विभिन्न प्रकारों (हिमपात, मलबे, चट्टान) को समझें। हिमस्खलन से होने वाले नुकसान और निवारक उपायों (वनीकरण, नियंत्रण उपाय, कृत्रिम ट्रिगर) के बारे में जानें। भारत में हिमस्खलन प्रवण क्षेत्रों की पहचान करें, विशेषकर हिमालय में। हिमस्खलन क्षेत्रीकरण (रेड जोन, ब्लू जोन, पीला क्षेत्र) और हिमस्खलन नियंत्रण संरचनाओं (रोकथाम और संरक्षण संरचनाएं) के बारे में जानें।

यूजीसी नेट परीक्षा की तैयारी के लिए, आपको दस्तावेज़ में उल्लिखित परिभाषाओं, कारणों, प्रक्रियाओं, प्रकारों और उदाहरणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए इन विषयों में से प्रत्येक का गहन अध्ययन करना चाहिए। प्रदान किए गए आरेखों और तालिकाओं पर विशेष ध्यान दें क्योंकि वे महत्वपूर्ण जानकारी का सारांश प्रस्तुत करते हैं।

भूगोल इकाई- 1

भू-आकृति विकास से संबंधित सिद्धांत (Principles Related to Landform Development)

भू-आकृति के विकास के संबंध में कोई भी सिद्धांत पूर्णतः सर्वमान्य नहीं है, फिर भी कुछ सिद्धांतों का महत्त्व है. जो निम्नलिखित हैं-

गिलबर्ट का सिद्धांत (Gilbert's Theory)

ग्रोव कार्ल गिलबर्ट (1843-1918), जिन्होंने उत्तर अमेरिका के क्षेत्रों का अध्ययन करने के बाद जलीय प्रक्रिया से संबंधित विधियों और उनसे उत्पन्न स्थलस्वरूपों के आधार पर कुछ नियमों का प्रतिपादन किया, जिनमें

मुख्यतः समांग ढाल का नियम, जलविभाजकों का नियम, गति संतुलन, संरचना का नियम आदि है। गिलबर्ट ने स्थलस्वरूपों के अध्ययन में गुणात्मक तत्त्वों की अपेक्षाकृत मात्रात्मक तत्त्वों को महत्त्व अधिक दिया।

गिलबर्ट ने लेकोलिथ आकृति के निर्माणक्रम में ऊपर की ओर उठते मैग्मा एवं नदी के आधार पर साम्यावस्था के संदर्भ में नियम दिया, जिसके अनुसार, "किसी भी आकृति के अंतिम स्वरूप पर क्रियाशील बल का कुल परिणाम जीरो होता है।" इसी तरह समय के संदर्भ में गिलबर्ट द्वारा बताया गया कि "भूगर्भिक समय लयबद्ध है।"

जैसे- पृथ्वी की गतियों द्वारा जलवायु प्रभावित होती है और जिनसे भू-आकृतिक प्रक्रियाएँ प्रभावित होती हैं अर्थात् पृथ्वी की गतियाँ लयबद्ध होती हैं।

उपर्युक्त सभी संदों को एकत्रित कर गिलबर्ट के सिद्धांत को इस प्रकार समझ सकते हैं कि "स्थलस्वरूप साम्यावस्था की स्थिति में रहते हैं और उनका इतिहास लयबद्ध रहता है एवं उनका तरंगित आकार होता है।"



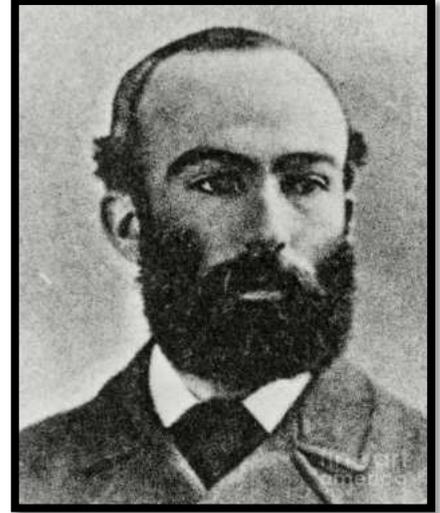
PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

डेविस का सिद्धांत (Davis's Theory)

डब्ल्यू.एम. डेविस (1850-1934) अमेरिका के महान भू-वैज्ञानिक थे। इन्होंने भू-आकृतिक विकास के संबंध में सबसे पहले वास्तविक समान्य सिद्धांत (General Theory) प्रस्तुत किया। यह सिद्धांत अन्य तीन सिद्धांतों से मिलकर बना है, जो इस प्रकार हैं-

1. भौगोलिक चक्र (Geographical Cycle)
2. सरिता जीवन का पूर्ण चक्र (Complete Cycle of River)



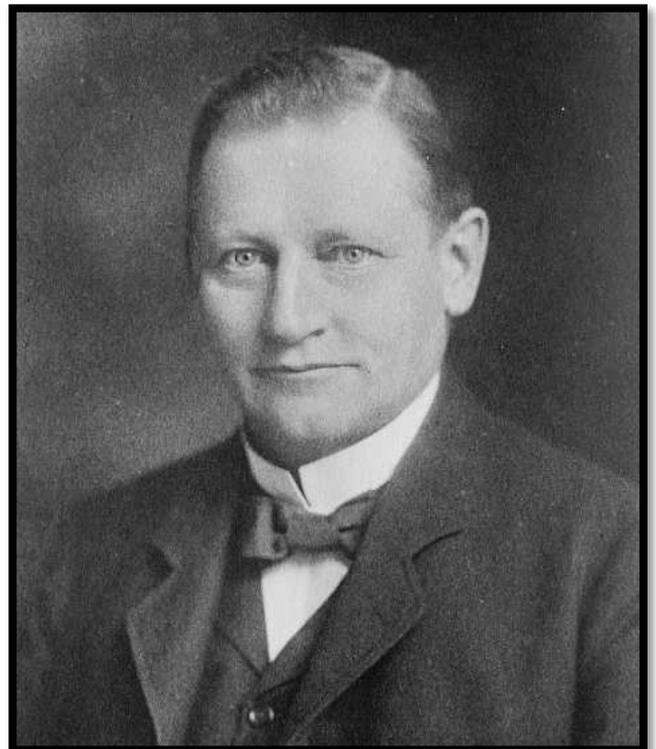
ढाल का विकास (Development of Slope)

3. शुरुआत में डेविस ने अपने उपर्युक्त सिद्धांतों का प्रयोग आर्द्र शीतोष्ण क्षेत्र के लिये किया, लेकिन बाद में इनका प्रयोग अन्य जलवायु प्रदेशों के लिये भी किया। डेविस के अनुसार "विभिन्न भू-आकृतियों में समय के अनुसार, क्रमिक परिवर्तन होता है और यह परिवर्तन एक सुनिश्चित उद्देश्य की तरफ उन्मुख होता है।"

पेंक का सिद्धांत (Penck's Theory)

ये एक जर्मन भू-वैज्ञानिक थे। इन्होंने अपने भौगोलिक चक्र सिद्धांत को प्रकट करते समय डेविस के अपरदन चक्र के प्रति आलोचना व्यक्त की। डेविस ने बताया कि अपरदन के प्रारंभ होने से पहले प्रत्येक भू-आकृति का उत्थान पूर्ण हो जाता है लेकिन पेंक ने अपने सिद्धांत में बताया कि अपरदन एवं उत्थान की क्रिया एक साथ होती है।

पेंक के अनुसार, विभिन्न प्रकार के शैलों में भौतिक और रासायनिक विघटन एवं अपघटन के लिये प्रतिरोध की मात्रा अलग-अलग होती है, जिससे अनेक प्रकार की आकृतियों का निर्माण होता है। चट्टानों की प्रकृति के आधार पर भू-आकृति के विकास का निर्धारण होता है। जैसे- अधिक कठोर



All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

चट्टान पर तीव्र ढाल का निर्माण, जबकि कम कठोर चट्टान पर मंद ढाल का निर्माण एवं निवर्तन अधिक होने से घाटी कम गहरी एवं चौड़ी होती है।

भू-आकृति/भू-विज्ञान से संबंधित पुस्तकें एवं उनके लेखक

पुस्तक का नाम	लेखक
ऐसेज इन जियोमॉर्फोलॉजी	जॉर्ज हैरी ड्यूरी
मॉर्फोलॉजी ऑफ द अर्थ	एल.सी. किंग
द अनस्टेबल अर्थ	जे.ए. स्टियर्स
टेक्रीक्स इन जियोमॉर्फोलॉजी	सी.ए.एम. किंग
प्रिंसिपल्स ऑफ जियोमॉर्फोलॉजी	विलियम डी. थॉर्नबरी
जियोमॉर्फोलॉजी	बी.डब्ल्यू. स्पाक्स
द स्पिरिट एंड परपज ऑफ ज्योग्राफी	एस.डब्ल्यू. वूलड्रिज व डब्ल्यू.जी. ईस्ट
इंट्रोड्यूसिंग फिजिकल ज्योग्राफी	एलन स्ट्राहलर
एन आउटलाइन ऑफ जियोमॉर्फोलॉजी	एस.डब्ल्यू. वूलड्रिज व आर.एस. मॉर्गन
द स्टडी ऑफ लैंडफॉर्म	आर.जे. स्माल
प्रांसेस इन जियोमॉर्फोलॉजी	क्लीफोर्ड इम्बलटन व जॉन थोर्नेस
जियोमॉर्फोलॉजी एंड टाइम	जे.बी. थोर्नेस व डी. बंसडेन
जियोमॉर्फोलॉजी फ्रॉम द अर्थ	कार्ल डब्ल्यू. बटजर
द जियोमॉर्फिक साइकल	डब्ल्यू.एम. डेविस
प्रिंसिपल्स ऑफ फिजिकल जियोमॉर्फोलॉजी	आधर होम्स
मॉर्फोलॉजिकल एनालिसिस ऑफ लैंडफॉर्म	वाल्टर पेंक
इंट्रोडक्सन टू कंट्रोल जियोमॉर्फोलॉजी	जॉन पालिक
लाइमस्टोन जियोमॉर्फोलॉजी	स्टीफन दुडगिल
वर्क ऑफ द रिवर	सी.एच. क्रिकमे
प्रिंसिपल ऑफ जियोमॉर्फोलॉजी	चार्ल्स लाइल
इलस्ट्रेशन ऑफ दि हटोनियन थ्योरी ऑफ दि अर्थ	जॉन प्लेफेयर

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

भूपर्पटी का उद्गम एवं विकास (Origin and Evolution of Earth's Crust)

- विभिन्न विद्वानों ने भूपर्पटी के उद्गम एवं विकास से संबंधित अलग-अलग विचार प्रस्तुत किए हैं।
- लगभग 4.5 से 5 अरब वर्ष पूर्व जब पृथ्वी सूर्य से अलग हुई थी, तब इसका तापमान बहुत अधिक था।
- आरंभ में पृथ्वी गैसीय अवस्था में थी और बाद में ठंडी होकर तरल अवस्था में पहुँची।
- इस प्रारंभिक समय में महाद्वीप एवं महासागर का निर्माण नहीं हुआ था।
- प्री-कैम्ब्रियन कल्प तक पृथ्वी पूरी तरह से निर्जीव थी।
- विश्व की प्राचीनतम चट्टानें लगभग 3.8 अरब वर्ष पुरानी हैं, जिनमें से अधिकांश कायांतरित चट्टानें हैं।
- इससे यह स्पष्ट होता है कि इस समय तक महासागरों की उत्पत्ति हो चुकी थी।
- आर्कियन कल्प की चट्टानों के अध्ययन से पता चलता है कि इन चट्टानों में रवों (Crystals) का निर्माण 2.7 किलोमीटर की गहराई पर 550 से 8000 डिग्री सेल्सियस तापमान पर हुआ होगा।
- इन रवेदार चट्टानों के नीचे 35 किलोमीटर मोटाई की भूपर्पटी थी।
- इससे यह स्पष्ट है कि इस समय तक 50-70 किलोमीटर मोटाई वाली महाद्वीपीय भूपर्पटी का निर्माण हो चुका था।

भूपर्पटी की संकल्पना (Concept of Earth's Crust)

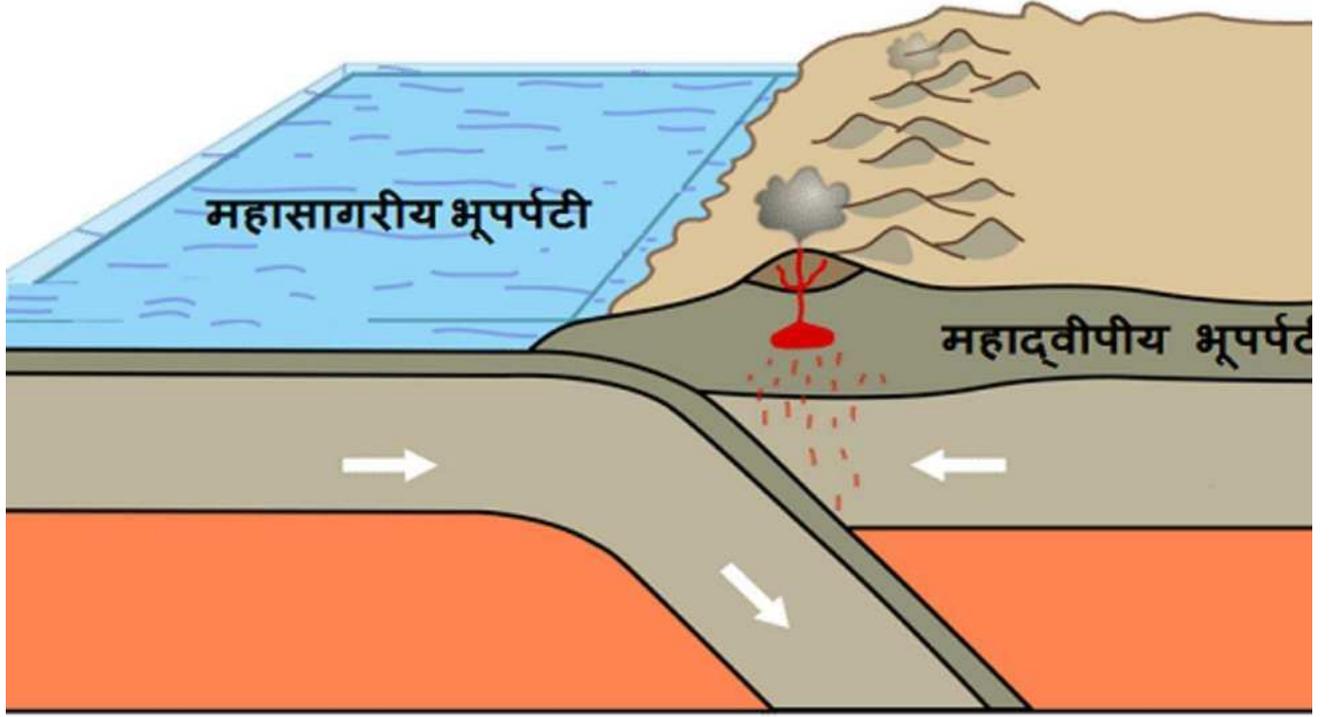
- भू-विज्ञान में किसी ग्रह की ऊपरी ठोस परत को भूपर्पटी अथवा क्रस्ट (Crust) कहते हैं। इसे भू-पृष्ठ के नाम से भी जाना जाता है।
- यह पृथ्वी की ऊपरी सतह है, जो विभिन्न प्रकार की चट्टानों से बनी हुई है।
- भूगोलवेत्ता डेस्कार्टेंस के अनुसार, भूपर्पटी भारी दबावयुक्त चट्टानों का आवरण है जो हल्की रेत, मृदा, चीका आदि के जमाव से बनी है।
- भूगोलवेत्ता लाइवनिज के अनुसार, प्रारंभिक अवस्था में पृथ्वी गर्म थी, जो बाद में ठंडी हुई। इसके ठंडे होने के क्रम में सर्वप्रथम इसका ऊपरी चट्टानी भाग ठंडा हुआ और उसने ठोस रूप ग्रहण किया, जिसे भूपर्पटी कहा गया।
- ब्रिटिश भू-वैज्ञानिक होम्स ने पृथ्वी को दो मंडलों में विभक्त किया है: भूपर्पटी तथा आधार (Substratum)।
- होम्स के अनुसार, भूपर्पटी में सियाल (SIAL) तथा सीमा (SIMA) के ऊपरी भाग सम्मिलित हैं।
- सीमा के निचले भाग तथा निफे (NIFE) के द्वारा आधार का निर्माण हुआ है।
- भूपर्पटी में विभिन्न प्रकार के खनिज तत्व पाए जाते हैं, जैसे- आयरन, ऑक्साइड, लैटेराइट, फेरिक्रेट, एल्युमीनियम ऑक्साइड, सिलिका एवं कैल्शियम कार्बोनेट।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET



भूपर्पटी के तत्व

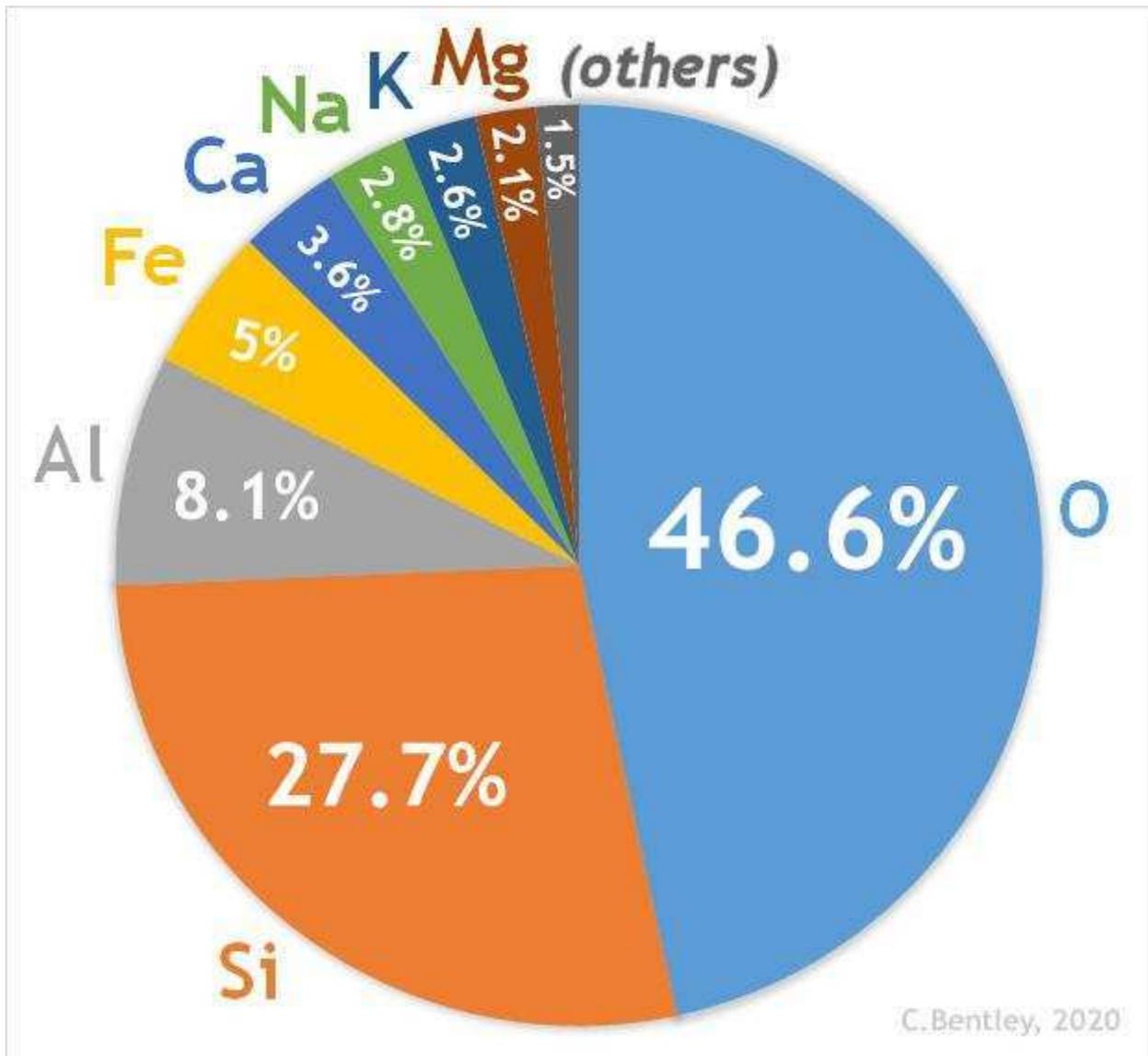
तत्व	प्रतिशत
ऑक्सीजन (O ₂)	46.6
सिलिकॉन (SI)	27.72
एल्यूमीनियम (AI)	8.13
लोहा (Fe)	5
कैल्शियम (Ca)	3.63
सोडियम (Na)	2.83
पोटैशियम (K)	2.59
मैग्नीशियम (Mg)	2.09

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET



भूपर्पटी का घनत्व 2.67 से 3.3 ग्राम प्रति घन सेंटीमीटर है। यह घनत्व जल से अधिक जबकि मैटल से कम होता है। भूपर्पटी के नीचे मैटल है, जिसे मोहोरोविसिस (मोहो) असांतत्य द्वारा भूपर्पटी (क्रस्ट) से अलग किया जाता है। वहीं गुटेनबर्ग असांतत्य द्वारा मैटल को निर्फ से अलग किया जाता है।

भू-पटल की गहराई लगभग 8 से 65 किमी. के बीच मानी जाती है, परंतु इसकी औसत गहराई 33 किमी. मानी जाती है। इसके ऊपरी भाग में परतदार या तलछटी चट्टानें पाई जाती हैं। महाद्वीपीय भागों में इसकी मोटाई 40 किमी. मानी जाती है। परतदार चट्टानों के नीचे रवेदार चट्टानों की परत मिलती है, जिसके ऊपरी भाग में ग्रेनाइट तथा नीस चट्टानें मिलती हैं तथा सबसे नीचे बेसाल्ट चट्टानें उपस्थित रहती हैं।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

वहीं महासागरीय चट्टानों के नीचे भू-पटल की मोटाई 5 से 10 किमी. के मध्य मिलती है। यहाँ परतदार चट्टानें कम मिलती हैं, अगर कहीं मिलती भी हैं तो अत्यंत पतली होती हैं। यहाँ ग्रेनाइट चट्टानें बिल्कुल नहीं पाई जातीं। महासागरीय बेसिनों में मुख्य रूप से बेसाल्ट प्रकार की चट्टानें पाई जाती हैं।

पर्वत, पठार, मैदान, झील, नदियों का अपवाह तंत्र व प्रारूप एवं मरुस्थल

पर्वत (Mountain)

सामान्य धरातल से एकदम ऊँचा उठा हुआ चट्टानी भाग, जिसका आधार चौड़ा एवं शीर्ष सँकरा होता है, पर्वत कहलाता है।

विस्तृत आधार, अत्यधिक ऊँचाई, तीव्र ढाल तथा चोटी युक्त शिखर ऐसी कुछ विशेषताएँ हैं जो पर्वतों को अन्य उच्चावचों से अलग करती हैं।

कई विद्वानों ने पर्वतों को अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया है-



All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

प्रोफेसर फिच के अनुसार, "पर्वत वह भूखंड है जो समुद्र तल से 600 मीटर या अधिक ऊँचा हो तथा जिसका ढाल समतल भूमि के साथ 26° से 35° का कोण बनाए।"

पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के पर्वत पाए जाते हैं। वे एक-दूसरे से आयु, बनावट, ऊँचाई, स्थिति, निर्माणकारी प्रक्रिया आदि के आधार पर भिन्न-भिन्न होते हैं। विद्वानों द्वारा इन्हें अलग-अलग आधार पर वर्गीकृत किया गया है, जो निम्नलिखित हैं-

आयु के आधार पर वर्गीकरण

पर्वतों को उनके निर्माण काल के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है-

- प्री-कैम्ब्रियन पर्वत (Pre-Cambrian Mountains): ये पृथ्वी पर सबसे प्राचीन पर्वत हैं। इनका निर्माण प्री-कैम्ब्रियन युग में हुआ था। इन पर्वतों के प्रमुख उदाहरण हैं- उत्तरी अमेरिका का लॉरेशियन एवं अल्गोमन, भारत का अरावली आदि।
- कैलिडोनियन या मध्य पेलियोजोइक पर्वत (Caledonian or Mid Paleozoic Mountains): इनका निर्माण डेवोनियन और सिलुरियन काल के दौरान हुआ था। इनके प्रमुख उदाहरण हैं- उत्तरी अमेरिका का अप्लेशियन पर्वत तथा उत्तरी आयरलैंड के पर्वत आदि।
- हीनियन पर्वत (Hercynian Mountains): इन पर्वतों का निर्माण लगभग 23 करोड़ वर्ष पहले कार्बोनीफेरस व पर्मियन कल्पों के बीच हुआ था। इसके अंतर्गत तिरग्रशान अल्ताई (एशिया), पूर्वी कार्डिलेरा (ऑस्ट्रेलिया) तथा वास्जेस व ब्लैक फॉरेस्ट (यूरोप) आदि पर्वत आते हैं।
- अल्पाइन पर्वत (Alpine Mountains): ये पृथ्वी के सबसे नवीन वलित पर्वत हैं। इस श्रेणी में हिमालय, आल्प्स, राँकिज, एंडीज आदि पर्वत प्रमुख हैं।

ऊँचाई के आधार पर वर्गीकरण

ऊँचाई के आधार पर पर्वतों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है-

- निम्न पर्वत (Low Mountains): इसके अंतर्गत ऐसे पर्वतों को रखा जाता है, जिनकी ऊँचाई 2000 फीट से लेकर 3000 फीट तक होती है।
- कम ऊँचे पर्वत (Rough Mountains) : इसके अंतर्गत 3000 फीट से लेकर 4000 फीट तक की ऊँचाई वाले पर्वतों को रखा जाता है।
- साधारण ऊँचे पर्वत (Rugged Mountains): इन पर्वतों की ऊँचाई 4500 फीट से 6000 फीट तक होती है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

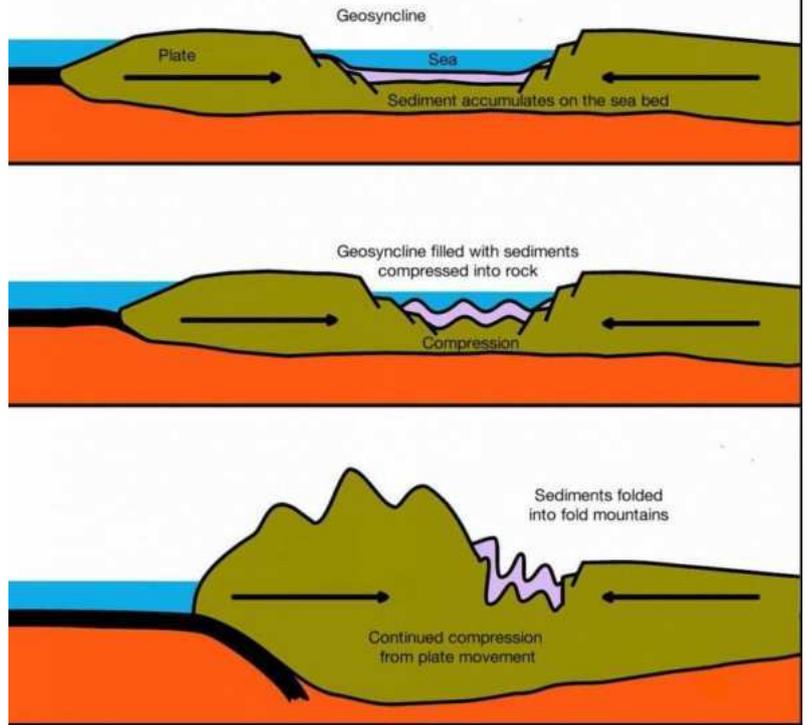
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- अधिक ऊँचे पर्वत (Siessan Mountains): इन पर्वतों की ऊँचाई 6000 फीट से अधिक होती है।

उत्पत्ति के आधार पर वर्गीकरण

पर्वतों को उनकी उत्पत्ति की प्रक्रिया तथा विशेषताओं के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है-

- वलित पर्वत (Fold Mountain):** जब चट्टानों में आंतरिक बल के कारण वलन या मोड़ पड़ जाते हैं तो उसे वलित या मोड़दार पर्वत कहते हैं। विश्व के सभी महाद्वीपों में इनका विस्तार देखने को मिलता है। हिमालय, आल्प्स, रॉकिज, एटलस आदि वलित पर्वत समूह हैं। वलित पर्वतों में अपनति एवं अभिनति देखने को मिलती है। संपीडन के आधार पर वलित पर्वत को साधारण, जटिल एवं युवा वलित पर्वत के रूप में विभाजित किया जाता है। वलित पर्वत न केवल ऊँचाई एवं तलछटी में बल्कि जलीय सागरों में भी छिपे हैं। ऐसे सागर को भूसन्नतियाँ कहा जाता है। भूसन्नतियों को वलित सागर का पालना भी कहा जाता है।



- ज्वालामुखी पर्वत (Volcanic Mountain):** ज्वालामुखी विस्फोट से निकलने वाले गाढ़े लावा के जमाव के कारण पर्वत निर्माण की प्रक्रिया संपन्न होती है। इससे निकलने वाले गाढ़े पदार्थ ज्वालामुखी के मुख से अधिक दूर नहीं फैल पाते हैं और एक पर्वत का रूप ले लेते हैं। विश्व का सबसे ऊँचा ज्वालामुखी पर्वत एकांकागुआ है।



All Subject's Complete Study Material KIT available.

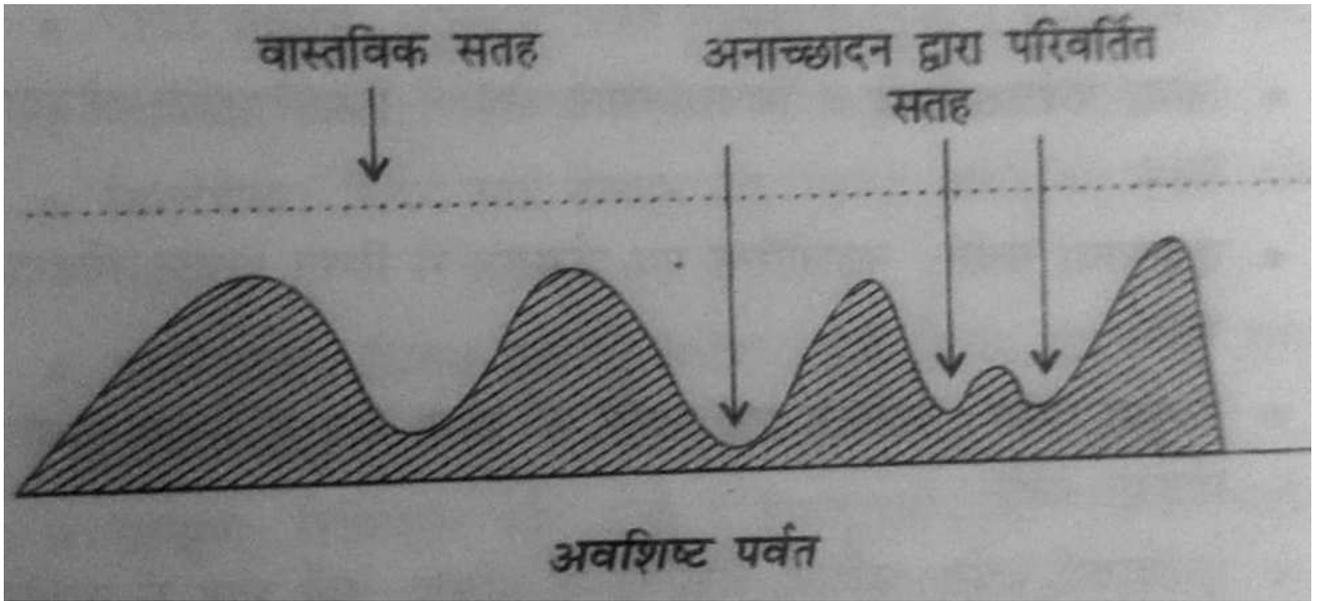
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

कोटोपैक्सी विश्व का सबसे ऊँचा सक्रिय ज्वालामुखी पर्वत है। अन्य ज्वालामुखी पर्वत हैं- हवाई द्वीप, एल्यूशियन द्वीप आदि।

- **अवशिष्ट पर्वत (Residual Mountain):** अपरदन के द्वारा पर्वतों का कटाव होकर जो भाग बच जाता है तो उसे अवशिष्ट पर्वत कहते हैं। इसे घर्षित पर्वत भी कहा जाता है। भारत में विंध्याचल पर्वत, अरावली, सतपुड़ा, महादेव तथा अमेरिका की कोलोरेडो पर्वत श्रृंखलाएँ अवशिष्ट पर्वत के उदाहरण हैं।



अवशिष्ट पर्वत

विश्व के प्रमुख पर्वत (Major Mountains of the World)

उत्तरी अमेरिका के प्रमुख पर्वत

- ब्रूक्स श्रेणी: यू.एस.ए. के अलास्का के उत्तरी भाग में स्थित यह श्रेणी पश्चिम से पूर्व की ओर फैली हुई है।
- अलास्का श्रेणी: यू.एस.ए. के अलास्का स्थित रॉकी का ही उत्तरी विस्तार, वलित पर्वत श्रेणी जहाँ उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप की सर्वोच्च चांटी माउंट मैकिन्ले है।
- रॉकी पर्वत श्रृंखला: उत्तरी अमेरिका में पश्चिम तट के समानांतर स्थित उत्तर से दक्षिण में विस्तृत अल्पाइन क्रम का वलित पर्वत।
- सियरा नेवादा: यू.एस.ए. के कैलिफोर्निया प्रदेश में स्थित विश्व का सबसे बड़ा ब्लॉक पर्वत।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- सियरा माद्रे: मेक्सिको के पश्चिमी भाग में स्थित वलित पर्वत श्रेणी।
- अप्लेशियन पर्वत: अत्यधिक प्राचीन वलित मोड़दार पर्वत. यू.एस.ए. के उत्तर-पूर्व भाग में स्थित, खनिज संसाधन संपन्न।
- मैकेंजी पर्वत: उत्तर-पश्चिम कनाडा में स्थित वलित पर्वत राँकी पर्वत का उत्तरी विस्तार।
- एलेधनी पर्वत: अप्लेशियन व वृहत् झील प्रदेशों के मध्य स्थित मोड़दार पर्वत।
- तटीय श्रेणी: यू.एस.ए. व कनाडा के पश्चिम तटीय भागों में राँकी पर्वत का विस्तार।
- कॉस्केड श्रेणी: राँकी व कोस्ट श्रेणी के मध्य स्थित वलित पर्वत। इसके पदीय भागों में कई अंतर्पर्वतीय पठार एवं बेसिन अवस्थित हैं।
- बलू माउंटेन: राँकी व कॉस्केड श्रेणी के मध्य वलित पर्वत।
- वासाच श्रेणी: यू.एस.ए. में स्थित ब्लॉक पर्वत, खनिज हेतु प्रसिद्ध।

दक्षिण अमेरिका के प्रमुख पर्वत

- पश्चिमी कार्दिलेरा: यह दक्षिणी अमेरिका के उत्तर-पश्चिमी भाग में तट के समानांतर वलित पर्वतों का एक जटिल क्रम है। जहाँ अनेक ज्वालामुखी पर्वत भी मिलते हैं।
- एंडीरा पर्वत श्रेणी: उत्तर से दक्षिण में विस्तृत विश्व की सबसे लंबी पर्वतमाला। इसकी सर्वोच्च चोटी एकांकागुआ है।

अफ्रीका के प्रमुख पर्वत

- एटलस पर्वत: उत्तर-पश्चिम अफ्रीका में स्थित अल्पाइन क्रम का मोड़दार पर्वत। इसकी सर्वोच्च चोटी टॉबकल है।
- अहागर पर्वत: इसे होगर पर्वत भी कहा जाता है। यह अहागर पठान (अल्जीरिया) के ऊपर स्थित है।
- अहागर पर्वत: इसे होगर पर्वत भी कहा जाता है। यह अहागर पठार (अल्जीरिया) के ऊपर स्थित है।
- लोमा पर्वत: गिनी व सियरालियोन क्षेत्र में स्थित प्राचीन मोड़दार पर्वत।
- एडामावा पर्वत: नाइजीरिया एवं कैमरून में स्थित प्राचीन मोड़दार पर्वत।
- मितुंबा पर्वत: जांबिया एवं जायरे के सीमा क्षेत्र में स्थित प्राचीन मोड़दार पर्वत।
- ड्रैकेसबर्ग पर्वत: दक्षिण अफ्रीका के दक्षिण-पूर्वी भाग में प्राचीन मोड़दार पर्वत, रिंज व बाल नदियों का उद्गम क्षेत्र।

यूरोप के प्रमुख पर्वत

- स्कैंडिनेवियन पर्वत: यह स्कैंडिनेवियाई प्रायद्वीप में विस्तारित एक वलित पर्वत है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- जूरा: जुरेंसिक काल में निर्मित मोड़दार पर्वत, फ्राँस व स्विट्जरलैंड की सीमा बनाता है। राइन व डेन्यूब नदियों का उद्गम स्रोत।
- आल्पस : अल्पाइन क्रम का मोड़दार पर्वत, फ्राँस व इटली की सीमा बनाता है।
- कारपेथियन पर्वत: अल्पाइन क्रम का मोड़दार पर्वत। कारपेथियन पर्वत व डिनारिक आल्पस के मध्य हंगरी का मैदान स्थित है। विस्टुला. नीस्टर आदि नदियों का उद्गम स्थल।
- बाल्कन पर्वत: बाल्कन प्रायद्वीप में स्थित मोड़दार पर्वत, अल्पाइन पर्वतीकरण में निर्मित।
- बुराल पर्वत: यूरोप व एशिया की सीमा निर्धारित करने वाला वलित पर्वत, युराल नदी का उद्गम स्रोत।
- काकेशस श्रेणी: काला सागर व कैस्पियन सागर के मध्य अल्पाइन पर्वतीकरण, यूरोप की सर्वोच्च चोटी एल्ब्रुश अवस्थित।
- कैटाक्षियन: उत्तरी स्पेन में आइबेरिया प्रायद्वीप में स्थित अल्पाइन क्रम का मोड़दार पर्वत।
- पिरेनीज: अल्पाइन क्रम का मोड़दार पर्वत, फ्राँस व स्पेन की सीमा बनाता है।
- बॉस्जेज: हर्सीनियन पर्वतीकरण में निर्मित, ब्लॉक पर्वत का उदाहरण. फ्राँस व जर्मनी की सीमा बनाता है।
- ब्लैक फॉरेस्ट: जर्मनी में स्थित हॉस्ट पर्वत, हर्सीनियन पर्वतीकरण का उदाहरण। ब्लैक फॉरेस्ट व बॉस्जेज ब्लॉक पर्वतों के मध्य राइन की भू-भ्रंश घाटी स्थित है।
- पेनाइन पर्वत श्रेणी: इंग्लैंड के उत्तर-दक्षिण में फैला हुआ प्राचीन मोड़दार पर्वत, वर्तमान अवशिष्ट पर्वत।
- डिनारिक आल्पस: भूतपूर्व यूगोस्लाविया के क्षेत्र में स्थित अल्पाइन क्रम के पर्वत, चूना पत्थर संरचना हेतु प्रसिद्ध।
- पेंडस पर्वत: ग्रीस में स्थित अल्पाइन क्रम का मोड़दार पर्वत:।।
- एपिनाइन पर्वत: इटली में स्थित अल्पाइन क्रम का मोड़दार पर्वत।
- पाण्टिक श्रेणी: तुर्की के उत्तरी भाग में मोड़दार पर्वत, अल्पाइन पर्वतीकरण में निर्मित।
- टॉगस श्रेणी: तुर्की के दक्षिणी भाग में स्थित अल्पाइन पर्वत। टॉरिस व पाण्टिक पर्वत श्रेणियों के मध्य ही अनातोलिया का पठार स्थित है।

एशिया के प्रमुख पर्वत

- जाग्रोस श्रेणी: मध्य-पश्चिम ईरान में स्थित अल्पाइन पर्वतीकरण। सर्वोच्च चोटी हजारना।
- हिंदूकुश श्रेणी: पामीर गाँठ से निकला नवीन मोड़दार पर्वत, पाकिस्तान व अफगानिस्तान की सीमा का निर्धारक, खैबर दर्रा इसी में स्थित है।
- सुलेमान श्रेणी: पामीर गाँठ से निकली पर्वत श्रेणी, अल्पाइन पर्वतीकरण, पाकिस्तान में स्थित। हिमालय के पश्चिमी मोड़ से निकला है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- हिमालय पर्वत श्रेणी: पूर्व-पश्चिम में स्थित विश्व की सबसे लंबी पर्वत श्रेणी, सर्वोच्च चोटी-माउंट एवरेस्ट।
- काराकोरम पर्वत श्रेणी: पामीर गाँठ से निकला भारत स्थित अल्पाइन क्रम का मोड़दार पर्वत, काराकोरम दर्श व सियाचिन ग्लेशियर इसी में स्थित हैं।
- तिएन शान: चीन में स्थित वलित पर्वत, हर्सीनियन पर्वतीकरण का उदाहरण।
- अल्ताई पर्वत: यह केंद्रीय एवं पूर्वी एशिया में विस्तारित पर्वत श्रृंखला है।
- नान ज्ञान: चीन में स्थित वलित पर्वत, हर्सीनियन पर्वतीकरण का उदाहरण।
- एल्बुर्ज श्रेणी: कैस्पियन सागर के दक्षिण भाग में ईरान में स्थित अल्पाइन पर्वतीकरण, सर्वोच्च चोटी देमावंदा ईरान का पठार एल्बुर्ज व जाग्रोस पर्वत श्रेणियों के मध्य ही स्थित है।
- किरघर श्रेणी: सुलेमान पर्वत श्रेणी का दक्षिणी विस्तार, बोलन व गोमल दर्रा यहीं है।
- कुनलुन श्रेणी: पामीर की गाँठ से निकला अल्पाइन क्रम का मोड़दार पर्वत, चीन में स्थित।
- साल्ट रेंज : पाकिस्तान में स्थित ब्लॉक पर्वत का उदाहरण, जिप्सम व सेंधा नमक के लिये विख्यात।
- श्यान पर्वत: मंगोलिया व रूस की सीमा का निर्धारक, हर्सीनियन पर्वतीकरण का उदाहरण।
- खिंगन पर्वत: चीन स्थित नवीन वलित पर्वत।
- वाब्लोनोवी श्रेणी: रूस व चीन की सीमा का निर्धारक, आमूर नदी यहीं से निकलती है।
- स्टेनोवाँय श्रेणी: रूस में स्थित, नवीन वलित पर्वत का उदाहरण।
- बर्बोयांस्क पर्वत: रूस के पूर्वी भाग (साइबेरिया) में स्थित, कई नदियों का उद्गम स्रोत।
- कोलिमा श्रेणी: रूस के पूर्वी क्षेत्र में स्थित उत्तर-दक्षिण पर्वत श्रेणी। इसे जिदान श्रेणी भी कहते हैं।
- कमचटका श्रेणी: पूर्वी रूस के कमचटका प्रायद्वीप में स्थित वलित पर्वत।

ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख पर्वत

- हैमरस्ले श्रेणी: यह पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पश्चिम में पिलवारा क्षेत्र में अवस्थित है। यह रेंज खनिजों, मुख्यतः लौह अयस्क के लिये महत्वपूर्ण है।
- मैकडोनाल्ड श्रेणी: मध्य ऑस्ट्रेलिया क्षेत्र में स्थित पर्वत श्रेणी, अनेक छोटी नदियों का उद्गम स्रोत।
- मसोव श्रेणी: दक्षिण ऑस्ट्रेलिया में स्थित संसाधन संपन्न पर्वत श्रेणी।
- ग्रेट डिवाइडिंग रेंज ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी भाग में उत्तर से दक्षिण तट के समानांतर स्थित पर्वत श्रेणी अल्पाइन पर्वतीकरण का उदाहरण, सर्वोच्च चोटी- मा. कोशियुस्को।
- ग्रे रेंज: पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में स्थित पर्वत श्रेणी।
- डार्लिंग श्रेणी: ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी भाग में स्थित पर्वत श्रेणी।
- ब्लू पर्वत: दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में स्थित पर्वत श्रेणी, ग्रेट डिवाइडिंग रेंज का विस्तार।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- रेनॉल्ड श्रेणी: मध्य ऑस्ट्रेलिया में स्थित पर्वत श्रेणी।
- ब्रोकेन हिल: दक्षिण ऑस्ट्रेलिया में स्थित लेड और जिंक से संपन्न पहाड़ी क्षेत्र, व्यापक आर्थिक महत्त्व।
- माउंट ईसा : ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में संसाधन-संपन्न पर्वत श्रेणी।
- दक्षिणी आल्प्स : न्यूजीलैंड के दक्षिणी द्वीप में स्थित पर्वत श्रेणी।
- ट्रांस-अंटार्कटिक पर्वत: अंटार्कटिक स्थित प्राचीन मोड़दार पर्वत मा. ऐरेबस (सक्रिय ज्वालामुखी) यहीं स्थित है। माउंट विंसनमैसिफ यहाँ की सर्वोच्च चोटी है।
- क्वीन मॉड श्रेणी: यह अंटार्कटिक महाद्वीप को दो बराबर भागों में बाँटती है।

पर्वत निर्माण के प्रमुख सिद्धांत

सिद्धांत	प्रतिपादक
भू-सन्नति सिद्धांत	कोबर
तापीय संकुचन सिद्धांत	जेफरीज
संवहन तरंग सिद्धांत	होम्स
रेडियो सक्रियता सिद्धांत तथा तापीय चक्र सिद्धांत	जॉली
प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत	हैरी हेस, मैकेंजी, मॉर्गन आदि।

विश्व के प्रमुख पर्वत शिखर/चोटी (Major Mountain Peaks of the World)

- माउंट मैकिले: अलास्का श्रेणी में स्थित उत्तरी अमेरिका की सबसे ऊँची चोटी (ज्वालामुखी निर्मित)।
- माउंट एलबर्ट : राँको को मुख्य श्रेणी का सर्वोच्च शिखर।
- माउंट रैनियर: कॉस्केड श्रेणी का सर्वोच्च शिखर (ज्वालामुखी निर्मित)।
- माउंट मिचेल अप्लेशियन पर्वत श्रेणी का सर्वोच्च पर्वत।
- माउंट व्हिटने: कॉस्केड श्रेणी के दक्षिणी भाग में स्थित पर्वत चोटी।
- पोपोकेटपिटल: मेक्सिको स्थित ज्वालामुखी पर्वत शिखर।
- टिल्टेपेक: सियरा माद्रे डेलसुर (प. सियरा माद्रे) की सबसे ऊँची चोटी।
- ओरिजावा: सियरा माद्रे ओरिएंटल (पूर्वी सियरा माद्रे) की सबसे ऊँची चोटी।
- एल्बुश: कॉकेशस पर्वत श्रेणी में स्थित यूरोप की सर्वोच्च चोटी।
- गैलडोपिजेन: पश्चिमी नॉर्वे में स्थित स्कैंडिनेवियन पर्वतीय श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी।
- माउंट ब्लैक: आल्प्स पर्वत की सबसे ऊँची चोटी फ्राँस में स्थित।
- ग्रैन सेसो माउंट कोनों ग्रैंडे: इटली की एपेनाइन श्रेणी में स्थित सर्वोच्च चोटी।
- नटलेयाना/दवाना: ड्रेकेंसबर्ग पर्वत श्रेणी को सबसे ऊँची चोटी।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- नरोदनाया: मध्य रूस स्थित यूराल पर्वत श्रेणी की सर्वोच्च चोटी।
- गोरा वेलुखा: मध्य एशिया स्थित अल्ताई पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी।

पठार (Plateau)

- सामान्यतः पृथ्वी के वे स्थलखंड जिनका कम-से-कम एक ढाल समोपवती सतह से ऊँचा व खड़े ढाल वाला हो तथा ऊपरी भाग मेज के आकार की तरह सपाट हो, पठार कहलाते हैं।
- पठार भूपटल पर द्वितीय श्रेणी के उच्चावच के अंतर्गत सम्मिलित किये जाते हैं।
- ऊँचाई की दृष्टि से पर्वतों के बाद तथा क्षेत्रीय विस्तार के दृष्टिकोण से मैदान के पश्चात् पठारों का स्थान है। समस्त भूपटल के 33% भाग पर पठारों का विस्तार है।



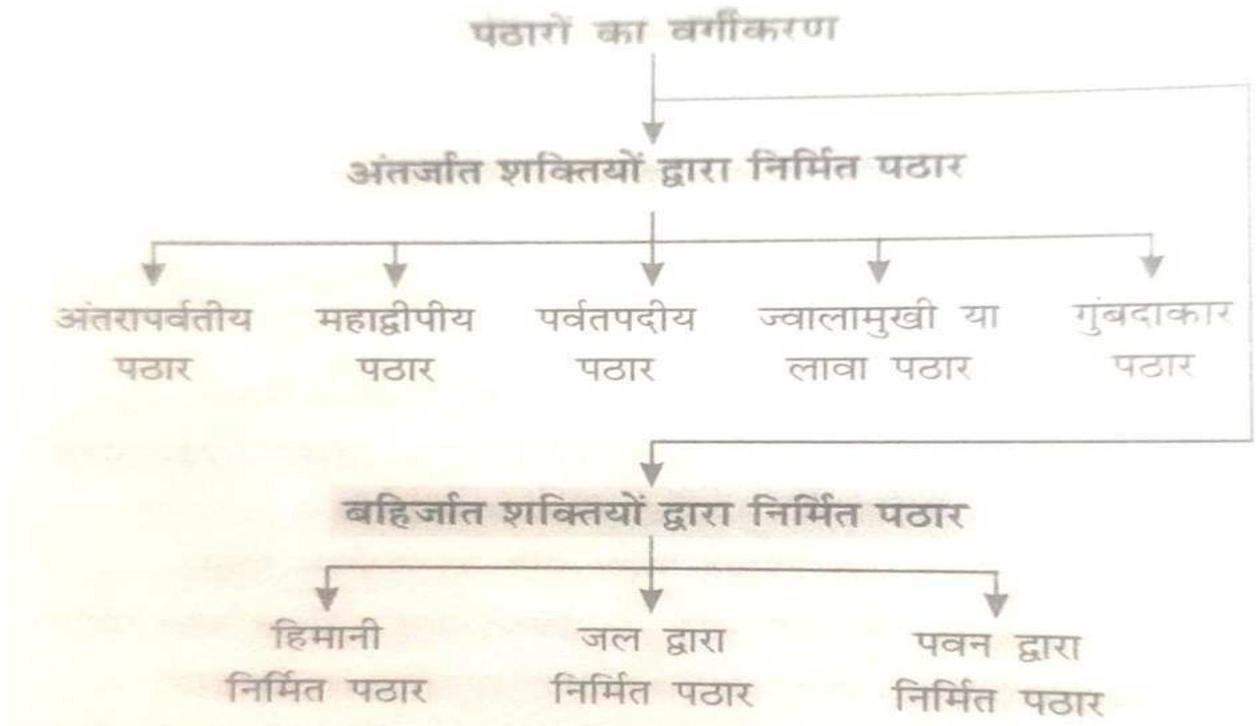
पठार की सामान्य विशेषताएँ (General Properties of a Plateau)

- पठार के किनारे वाले ढाल खड़े किंतु शिखर सपाट तथा अधिक विस्तृत होता है।
- मैदान की अपेक्षा पठारों पर उच्चावचों की अधिकता होती है।
- पठारों पर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भी होती हैं तथा नदियों की घाटी कम गहरी होती है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

पठारों का वर्गीकरण



अंतर्जात शक्तियों द्वारा निर्मित पठार:

- अंतर्जात शक्तियों द्वारा विभिन्न प्रकार के पठारों का निर्माण हुआ है।
- भूपटल के उत्थान के कारण उच्च पठारों का निर्माण हुआ है।
- इन पठारों के निर्माण में पटल विरूपणी बल की प्रमुख भूमिका है।
- अंतर्जात शक्तियों द्वारा निम्नलिखित प्रकार के पठारों का निर्माण होता है:
 - **अंतरापर्वतीय पठार:**
 - यह पठार चारों ओर से पर्वतों से घिरे रहते हैं।
 - इन पठारों का निर्माण अंतर्जात बल द्वारा वलित पर्वतों के निर्माण के साथ हुआ है।
 - भूपटल के सर्वाधिक विस्तृत तथा जटिल पठार इसी श्रेणी में सम्मिलित किये जाते हैं।
 - उदाहरण: तिब्बत का पठार, बोलीविया का पठार, कोलंबिया का पठार, ईरान का पठार, ग्रेट बेसिन।
 - **महाद्वीपीय पठार:**
 - यह पठार पर्वतीय भागों से दूर मैदानी भाग या सागरीय तट से संलग्न होते हैं।
 - ये काफी विस्तृत एवं अति प्राचीन पठार हैं, जिन्हें शील्ड कहा जाता है।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- उदाहरण: प्रायद्वीपीय भारत का पठार (उत्तम उदाहरण), अरब का पठार, ब्राजील का पठार, ऑस्ट्रेलिया का पठार।
- **पर्वतपदीय पठार:**
 - यह पठार पर्वतों के आधार पर स्थित होते हैं।
 - ये पठार पर्वत से संलग्न लंबी उच्च भूमि के रूप में मैदान या समुद्र तक विस्तृत होते हैं।
 - इन पठारों का मैदान की ओर ढाल तीव्र व खड़ा होता है।
 - उदाहरण: यू.एस.ए. का पीडमांट पठार, दक्षिण अमेरिका का पैटागोनिया का पठार।
- **ज्वालामुखी या लावा पठार:**
 - इन पठारों का निर्माण दरारी उद्भेदन के फलस्वरूप उत्सर्जित लावा के द्वारा होता है।
 - ये पठार बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित होते हैं।
 - उदाहरण: दक्कन का पठार (भारत), कोलंबिया का पठार (यू.एस.ए.)।
- **गुंबदाकार पठार:**
 - इन पठारों का निर्माण अंतर्जात बल से उत्पन्न वलन क्रिया द्वारा भूखंड के उत्थान से होता है, जिसमें मध्य का भाग ऊँचा तथा किनारे वाला भाग गोलाकार होता है।
 - उदाहरण: भारत में छोटानागपुर का पठार, यू.एस.ए. में ओजार्क पठार।

बहिर्जात शक्तियों द्वारा निर्मित पठार

भूपटल पर पठारों का निर्माण अंतर्जात एवं बहिर्जात दोनों शक्तियों द्वारा होता है, लेकिन पठारों के निर्माण में बहिर्जात बल की कम भूमिका है, क्योंकि यह बल अपरदन द्वारा पठारों का विनाश अधिक करता है। अपरदन के कारकों, यथा- हिमानी, पवन तथा बहते हुए जल द्वारा पठारों का निर्माण होता है। बहिर्जात शक्तियों द्वारा निर्मित पठार निम्नलिखित हैं-

- **हिमानी द्वारा निर्मित पठार:** पर्वतीय भागों में हिमानी अपरदन क्रिया द्वारा सपाट पठार का निर्माण करती है। भारत में गढ़वाल का पठार हिमानी द्वारा निर्मित है। अंटार्कटिका तथा ग्रीनलैंड में हिमानी अपरदन द्वारा अनेक पठारों का निर्माण हुआ है।
- **जल द्वारा निर्मित पठार:** जब किसी क्षेत्र में नदियों के निक्षेपण से पदार्थों का जमाव होता है तथा बाद में भूगर्भिक हलचल के कारण ये क्षेत्र समीप स्थित क्षेत्रों से ऊँचे उठ जाते हैं तो पठारों का निर्माण होता है। विध्य पठार, चेरापूजी पठार (भारत), शान पठार (म्यांमार) जलीय अपरदन से निर्मित पठार हैं। इन पठारों के निर्माण में नदियों के निक्षेप तथा पृथ्वी के लंबवत् संचलन (उत्संवलन) की भूमिका होती है।
- **पवन द्वारा निर्मित पठार:** जब किसी क्षेत्र में पवन द्वारा मिट्टी के बारीक कणों का लंबे समय तक निक्षेप होता है तो ये मिट्टियाँ शैल में परिवर्तित होकर पठार का रूप ले लेती हैं। पोटवार का पठार (पाकिस्तान) तथा लोयस का पठार (चीन) पवन द्वारा निर्मित पठार हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

विश्व के प्रमुख पठार

- **यूकॉन पठार:** मध्य अलास्का में स्थित अंतर्पर्वतीय पठार।
- कनाडियन शील्ड लेब्राडोर प्रायद्वीप में स्थित प्राचीन लॉरेंशिया भू-भाग का क्षेत्र, प्राचीनतम, कठोर चट्टानों से निर्मित।
- **कोलंबिया पठार:** रॉकी व कॉस्केड श्रेणियों के मध्य स्थित यह एक अंतः पर्वतीय पठार है जो अमेरिका में कोलंबिया पठार एवं कनाडा में स्केक पठार कहलाता है। यहीं से कोलंबिया नदी प्रवाहित होती है।
- **ग्रेट बेसिन पठार:** यू.एस.ए. के पश्चिमी भाग में स्थित पर्वतपदीय पठार जहाँ डेथ वैली, ग्रेट साल्ट लेक व योसेमाइट नेशनल पार्क आदि स्थित हैं।
- **कोलोरेडो का पठार:** यह यू.एस.ए. के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में रॉकी व वासेच श्रेणियों के मध्य स्थित एक अंतरपर्वतीय पठार है।
- **अप्लेशियन पठार:** यू.एस.ए. के पूर्वी भाग में स्थित अल-टेनिन व अप्लेशियन पर्वतों के मध्य स्थित अंतरपर्वतीय पठार।
- **पीडमॉण्ट पठार:** अप्लेशियन के पर्वतपदीय क्षेत्र में पठारी भाग।
- **मेक्सिको का पठार:** यह पश्चिमी व पूर्वी सियरा मार्र पर्वत श्रेणियों के मध्य मेक्सिको में स्थित एक अंतः पर्वतीय पठार है। यहाँ मुख्यतः चांदी, तांबा इत्यादि धात्विक खनिज पाए जाते हैं।
- **गुयाना का पठार:** इसका विस्तार वेनेजुएला, गुयाना तथा सूरीनाम में है। यह ओरीनिको नदी बेसिन का क्षेत्र है।
- **माटोग्रोसो पठार:** यह पठार लगभग ब्राजील के मध्य भाग में स्थित है। यह मुख्यतः पशुपालन तथा कोयला एवं मैंगनीज के उत्खनन हेतु प्रसिद्ध है।
- **ब्राजील का पठार:** यह ब्राजील के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित महाद्वीपीय पठार है।
- **पराना पठार:** दक्षिण अमेरिका में स्थित एक लावा निर्मित पठार है।
- **अल्टीप्लेनो पठार बोलीविया पठार:** यह बोलीविया में स्थित एक अंतः पर्वतीय पठार है, जो टिन हेतु प्रसिद्ध है।
- **तामिली का पठार:** अल्जीरिया के पूर्वी भाग में स्थित पठारी भाग।
- **अहागार का पठार:** अल्जीरिया, लीबिया व नाइजर के मध्यवर्ती क्षेत्रों में स्थित उच्चभूमि।
- **तिबेस्ती पठार:** उत्तरी चाड में स्थित पठारी उच्चभूमि जिसका एक छोटा-सा विस्तार दक्षिणी लीबिया में है।
- **इथियोपिया का पठार/अबीसीनिया पठार :** इथियोपियाई उच्चभूमि में स्थित लावा निर्मित पठार, कॉफी उत्पादन क्षेत्र, शिबली व जूबा नदियों का उद्गम क्षेत्र।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- **तुर्फान पठार:** यह पठार मंगोलिया पठार के पश्चिम में स्थित है। जो एक मरुस्थलीय क्षेत्र है।
- मंगोलिया का पठार चीन व मंगोलिया के क्षेत्र में स्थित उच्चभूमि। कुगेरियन बेसिन, तारिम बेसिन व तिएनशान पर्वत के उत्तरी क्षेत्र में स्थित पठारी भाग।
- बोहेमिया का पठार: चेक गणराज्य में स्थित है। यहीं बोहेमिया फॉरेस्ट स्थित है। एल्ब नदी यहीं से निकलती है।
- **शान पठार :** अराकानयोमा के पूर्वी भाग में स्थित म्यांमार का पठार, जो टिन उत्पादन के लिये प्रसिद्ध है।
- अनातोलिया का पठार: टॉरेस व पॉण्टिक पर्वतश्रेणियों के मध्य स्थित तुकों का अंतरपर्वतीय पठार।
- **ईरान का पठार:** एल्बुर्ज व जाग्रोस पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित ईरान का अंतरपर्वतीय पठार।
- **पामीर का पठार:** 'संसार की छत' उपनाम से प्रसिद्ध यह विश्व का सबसे ऊँचा पठार है जो तिब्बत के पठार का ही भाग है। पामीर की गाँठ से कुनलुन, काराकोरम, हिंदूकुश, सुलेमान, किरथर आदि श्रेणियाँ निकलती हैं।
- **तकलामकान का पठार:** चीन के तारिम बेसिन क्षेत्र में स्थित उच्चभूमि है जो जुगेरियन बेसिन, तारिम बेसिन व तिएनशान पर्वत के उत्तरी क्षेत्र में स्थित है।
- **छोटानागपुर का पठार:** दक्कन पठार का उत्तर-पूर्वी भाग। लौह अयस्क, कोयला व अन्य विभिन्न खनिज संसाधनों से संपन्न क्षेत्र। यह भारत का रूर (क्षेत्र) कहलाता है।

मैदान (Plain)

सामान्यतः सागर तल से 150 मी. तक ऊँचे किंतु समतल तथा विस्तृत खंड को मैदान की संज्ञा दी जाती है। मैदान का ऊपरी धरातल सपाट तथा समतल होता है। द्वितीय श्रेणी के उच्चावच में मैदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। संपूर्ण विश्व के 41% भू-भाग पर मैदान का विस्तार है। कुछ मैदान अपेक्षाकृत अधिक ऊँचे तथा कुछ समुद्रतल से नीचे भी हो सकते हैं।



All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

संरचनात्मक मैदान (Structural Plain)

संरचनात्मक मैदानों का निर्माण पृथ्वी की अंतर्जात शक्ति के कारण हुआ है। भूपटल में उत्थान तथा अवतलन या सागरीय स्थलखंड के निर्गमन या निमज्जन के कारण इन मैदानों का निर्माण हुआ है। यू.एस. ए. में ग्रेटप्लेन तथा अटलांटिक तटीय मैदान व भारत में पूर्वी तटीय मैदान संरचनात्मक मैदान के उदाहरण हैं।

अपरदनात्मक मैदान (Erosional Plain)

अपरदनात्मक मैदान के निर्माण में अपरदन के कारकों की प्रमुख भूमिका होती है। अपरदन के कारक (जल, हिमानी, वायु आदि) स्थलखंड की विषमताओं को अपरदन द्वारा एक सपाट तथा आकृतिविहीन मैदान में परिवर्तित कर देते हैं। अपरदनात्मक मैदान निम्नलिखित हैं-

- **नदी निर्मित अपरदनात्मक मैदान:** नदी अपरदन द्वारा निर्मित मैदान को पेनिप्लेन कहा जाता है। नदियाँ अपने अपरदन चक्र की अंतिम अवस्था में उच्च स्थलखंड का अपरदन कर समतल कर देती हैं। इस तरह से निर्मित मैदान को पेनिप्लेन या समप्राय मैदान कहते हैं। इस मैदान में यत्र-तत्र चट्टानों के अवशेष को मोनैडनॉक कहते हैं। मूल रूप से समप्राय मैदान के उदाहरण कम हैं, किंतु उत्थित समप्राय मैदान के उदाहरण अनेक हैं, जैसे- भारत का छोटानागपुर क्षेत्र, यू. एस.ए. का अप्लेशियन क्षेत्र एवं मिसिसिपी घाटी आदि।
- **हिम निर्मित अपरदनात्मक मैदान:** हिमानी अपने क्षेत्रों में उच्च भाग का अपरदन कर उसे सपाट, किंतु उच्चावचयुक्त मैदान में परिवर्तित करती है। हिमानी अपरदित मैदान में घाटियाँ चौड़ी होती है। इस प्रकार के मैदान उत्तरी अमेरिका के उत्तरी भाग तथा भारत के लद्दाख में स्थित हैं। इस प्रकार के मैदान में मिट्टी की परत पतली होती है एवं मैदान में चट्टानी टीले तथा झीलें दृश्यगत होती हैं।
- **पवन निर्मित अपरदनात्मक मैदान:** शुष्क एवं अर्द्धशुष्क प्रदेशों में पवन की अपरदन क्रिया द्वारा निर्मित मैदान को पेडीप्लेन कहते हैं। इस मैदान में स्थित चट्टानी टीलों को इंसेलवर्ग कहते हैं। सहारा के रंग, सेरिर तथा हमदा इस तरह के मैदान के उदाहरण हैं।
- **कार्स्ट मैदान:** चूना पत्थर के क्षेत्रों में भूमिगत जल की घुलन क्रिया द्वारा निर्मित मैदान को कार्ट मैदान कहते हैं। इस तरह के मैदान पूर्ववर्ती यूगोस्लाविया के कार्स्ट प्रदेश, यू.एस.ए. के फ्लोरिडा, यूकाटन, भारत में चित्रकूट, रामगढ़ तथा अल्मोड़ा में दिखाई पड़ते हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

निक्षेपात्मक मैदान (Depositional Plain)

- अपरदन के विभिन्न कारकों द्वारा निक्षेपित मैदानों की अलग-अलग विशेषताएँ हैं। अपरदन के इन कारकों में नदी तथा वायु द्वारा निक्षेप से निर्मित मैदान अधिक महत्वपूर्ण हैं। निक्षेपात्मक मैदान निम्नलिखित हैं-
- **नदी द्वारा निक्षेपित मैदान:** नदी के निक्षेप से निर्मित मैदानों को जलोढ़ मैदान कहते हैं। स्थिति के आधार पर जलोढ़ मैदान को गिरिषद जलोढ़ मैदान, बाढ़ का मैदान व डेल्टा मैदान में वर्गीकृत किया जाता है।
- नदियाँ जब पर्वतीय भागों से नीचे उतरती हैं तो कंकड़, बालू, पत्थर आदि का निक्षेपण पर्वतपदीय क्षेत्रों में करती हैं।
- इससे जलोढ़ पंख का निर्माण होता है। कई जलोढ़ पंखों के आपस में मिलने से गिरिषद जलोढ़ मैदान का निर्माण होता है।
- गिरिषद जलोढ़ मैदान के अंतर्गत भाबर व तराई क्षेत्र आते हैं। नदियाँ अपने मध्य एवं निम्न मैदानी भागों में बाढ़ के मैदान का निर्माण करती हैं।
- बाढ़ के मैदान को बांगर व खादर में वर्गीकृत किया जाता है। डेल्टा मैदान का निर्माण नदियों द्वारा अपने मुहाने पर अवसादों के निक्षेपण से होता है। गंगा एवं ब्रह्मपुत्र का डेल्टा विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

यूजीसी नेट भूगोल - इकाई I: भू-आकृति विज्ञान MCQs

1. अभिकथन (A): प्लेट टेक्टोनिक्स का सिद्धांत पृथ्वी पर विशिष्ट बेल्टों के साथ भूकंप और ज्वालामुखियों के वितरण की व्याख्या करता है।

कारण (R): प्लेट सीमाएं तीव्र भूवैज्ञानिक गतिविधि के क्षेत्र हैं जहां लिथोस्फेरिक प्लेटें परस्पर क्रिया करती हैं, जिससे ऊर्जा निकलती है।

(A) A और R दोनों सत्य हैं , और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

(B) A और R दोनों सत्य हैं , लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(C) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।

(D) A गलत है, लेकिन R सत्य है।

(E) A और R दोनों झूठे हैं ।

सही उत्तर: (A)

स्पष्टीकरण:

- प्लेट टेक्टोनिक्स: यह सिद्धांत, जो महाद्वीपीय विस्थापन का परिष्कृत रूप है, यह प्रस्तावित करता है कि पृथ्वी का स्थलमंडल बड़ी प्लेटों में विभाजित है जो निरंतर गतिशील रहती हैं।
- प्लेट सीमाएँ: ये भूवैज्ञानिक रूप से सबसे अधिक सक्रिय क्षेत्र हैं।
 - अपसारी सीमाएं: प्लेटें अलग-अलग हो जाती हैं (जैसे, मध्य-अटलांटिक रिज), जिसके कारण ज्वालामुखी और उथले भूकंप आते हैं।
 - अभिसारी सीमाएं: प्लेटें एक-दूसरे की ओर गति करती हैं (जैसे, प्रशांत अग्नि वलय), जिसके कारण धंसाव , पर्वत निर्माण, गहरे भूकंप और तीव्र ज्वालामुखी क्रिया होती है।
 - परिवर्तन सीमाएं: प्लेटें एक दूसरे के ऊपर से खिसकती हैं (उदाहरण के लिए, सैन एंड्रियास फॉल्ट), जिसके परिणामस्वरूप बार-बार उथले भूकंप आते हैं।

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- ऊर्जा विमोचन: इन सीमाओं पर संचित घर्षण और तनाव भूकंपीय तरंगों (भूकंप) और मैग्मा (ज्वालामुखी) के रूप में मुक्त होते हैं।
- सत्यता: इसका कारण सीधे तौर पर यह बताता है कि भूकंप और ज्वालामुखी प्लेट सीमाओं के आसपास क्यों केंद्रित होते हैं।

2. निम्नलिखित में से कौन सी भू-आकृति मुख्यतः बहिर्जात शक्तियों से संबंधित है ?

- (A) वलित पर्वत
- (B) दरार घाटियाँ
- (C) ज्वालामुखीय पठार
- (D) जलोढ़ पंखे
- (E) मध्य महासागरीय कटक

सही उत्तर: (D)

स्पष्टीकरण:

- अंतर्जात बल: ये पृथ्वी के भीतर उत्पन्न होने वाली आंतरिक शक्तियां हैं, जो बड़े पैमाने पर भू-आकृति निर्माण (जैसे, पर्वत निर्माण, भ्रंश, ज्वालामुखी) का कारण बनती हैं।
 - (A) वलित पर्वत: संपीड़न द्वारा निर्मित अंतर्जात बल (प्लेट टकराव)। उदाहरण: हिमालय।
 - (B) रिफ्ट घाटियाँ: तनावपूर्ण अंतर्जात बलों (प्लेट विचलन) द्वारा निर्मित। उदाहरण: पूर्वी अफ्रीकी रिफ्ट घाटी।
 - (C) ज्वालामुखीय पठार: अंतर्जात ज्वालामुखीय गतिविधि के कारण लावा के व्यापक प्रवाह से निर्मित। उदाहरण: डेक्कन ट्रैप।
 - (E) मध्य महासागरीय कटक: अंतर्जात प्रक्रिया, ऊपर उठने वाले मैग्मा के कारण अपसारी प्लेट सीमाओं पर निर्मित।
- बहिर्जात बल: ये पृथ्वी की सतह पर कार्य करने वाली बाह्य शक्तियां हैं, जो मुख्य रूप से सौर ऊर्जा और गुरुत्वाकर्षण द्वारा संचालित होती हैं, जिसके कारण

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

अनाच्छादन (अपक्षय, अपरदन, द्रव्यमान क्षय) और निक्षेपण होता है।

- **(D)जलोढ़ पंख:** नदियों द्वारा निर्मित निक्षेपण भू-आकृतियाँ जब वे पहाड़ी क्षेत्र से बाहर निकलती हैं और ढाल में अचानक कमी के कारण अपने तलछट भार को जमा करती हैं। यह बहिर्जात प्रक्रियाओं (नदी के कटाव और निक्षेपण) का एक स्पष्ट परिणाम है।

3. भूआकृतिक चक्र को उसकी संबंधित अवधारणा/जोर से सुमेलित करें:

सूची I (भूआकृतिक चक्र)	सूची II (अवधारणा/जोर)
1. डेविसियन चक्र	(A)अंतर्जात प्रक्रियाएं, प्राइम मूवर
2. पेनक चक्र	(B)युवावस्था, परिपक्वता, वृद्धावस्था के चरण
3. किंग्स साइकिल	(C) ढलानों का समानांतर पीछे हटना
4. हैक का गतिशील संतुलन	(घ) स्थिर अवस्था, समय-स्वतंत्र

सही विकल्प चुनें:

- (A) 1- (A), 2-(B), 3-(C), 4-(D)
- (B) 1-(B), 2-(A), 3-(C), 4-(D)
- (C) 1-(B), 2-(C), 3-(A), 4-(D)
- (D) 1-(C), 2-(B), 3-(D), 4-(A)

सही उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण:

1. डेविसियन चक्र (डब्ल्यू.एम. डेविस): 19वीं सदी के अंत में प्रस्तावित, इसे "क्षरण चक्र" के रूप में भी जाना जाता है। यह अलग-अलग चरणों के माध्यम से भू-आकृतियों के क्रमिक विकास पर जोर देता है: युवावस्था, परिपक्वता और वृद्धावस्था, जो मुख्य रूप से संरचना, प्रक्रिया और चरण से प्रभावित होती है। यह तेजी से उत्थान के बाद लंबे समय तक अनाच्छादन को मानता है।
2. पेंक का चक्र (वाल्थर पेंक): एक जर्मन भू-आकृति विज्ञानी, पेंक ने डेविस के मॉडल की आलोचना की। उन्होंने उत्थान और अनाच्छादन की एक साथ परस्पर क्रिया पर जोर दिया, उत्थान की दर और ढलान विकास पर इसके प्रभाव पर

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

ध्यान केंद्रित किया। "ढलानों की समानांतर वापसी" (या ढलान में गिरावट) की उनकी अवधारणा एक महत्वपूर्ण पहलू है, जहां ढलान अपना कोण बनाए रखते हैं लेकिन खुद के समानांतर पीछे हटते हैं।

3. किंग्स साइकिल (एलसी किंग): उन्होंने बड़े पैमाने पर ढलानों के समानांतर वापसी और पेडिप्लेनेशन की अवधारणा की वकालत की, खासकर शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में। उन्होंने प्रारंभिक राहत बनाने में प्रमुख प्रेरक के रूप में अंतर्जात प्रक्रियाओं की भूमिका पर जोर दिया, इसके बाद परिदृश्य को आकार देने वाली बहिर्जात प्रक्रियाओं पर जोर दिया।

4. हैक का गतिशील संतुलन (जे.टी. हैक): 20वीं सदी के मध्य में प्रस्तावित, यह अवधारणा बताती है कि भूदृश्य स्थिर अवस्था में होते हैं जहाँ उत्थान और अनाच्छादन की दरें संतुलित होती हैं। यह भू-आकृतियों को समय-स्वतंत्र और अलग-अलग चरणों से आगे बढ़ने के बजाय, प्रचलित ऊर्जा स्थितियों के अनुसार लगातार समायोजित होने वाला मानता है।

4. निम्नलिखित में से किसे पृथ्वी की गति के लिए जिम्मेदार अंतर्जात बल माना जाता है?

1. तह
2. दोषयुक्त
3. ज्वालामुखीयता
4. अपक्षय
5. सामूहिक बर्बादी

सही कोड चुनें:

- (A) केवल 1, 2, 4 और 5
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) केवल 2, 3, 4 और 5
(E) उपरोक्त सभी

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

सही उत्तर: (B)

स्पष्टीकरण:

- अंतर्जात बल: ये बल पृथ्वी के आंतरिक भाग से उत्पन्न होते हैं, जो मुख्य रूप से रेडियोधर्मी क्षय से उत्पन्न ऊष्मा और पृथ्वी के निर्माण से बची हुई ऊष्मा द्वारा संचालित होते हैं। ये बड़े पैमाने पर क्रस्टल विकृति का कारण बनते हैं।
 1. बलन: यह तब होता है जब चट्टान की परतें संपीडन बलों के अधीन होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप झुकाव या झुकाव होता है (उदाहरण के लिए, एंटीक्लाइन और सिंक्लाइंस)।
 2. भ्रंशन: इसमें तनाव या संपीडन बलों के कारण समतल पर चट्टान के द्रव्यमान का विखंडन और विस्थापन शामिल होता है।
 3. ज्वालामुखी क्रिया (ज्वालामुखी): पृथ्वी के आंतरिक भाग से सतह तक पिघली हुई चट्टान (मैग्मा) की गति से जुड़ी सभी घटनाओं को संदर्भित करता है, जिसमें विस्फोट और घुसपैठ भी शामिल है।
- बहिर्जात बल: ये पृथ्वी की सतह पर काम करते हैं।
 4. अपक्षय: भौतिक, रासायनिक और जैविक प्रक्रियाओं द्वारा चट्टानों का विघटन और अपघटन। इसमें गति शामिल नहीं होती।
 5. मास वेस्टिंग (मास मूवमेंट): गुरुत्वाकर्षण के सीधे प्रभाव में चट्टान, मिट्टी और रेगोलिथ का ढलान की ओर खिसकना। यह अपरदन का एक रूप है।

5. निम्नलिखित में से कौन सा भूकंपीयता का प्रत्यक्ष परिणाम है ?

- (A) मेन्डर्स का गठन
- (B) रेत के टीलों का विकास
- (C) सुनामी पीढ़ी
- (D) कार्स्ट स्थलाकृति
- (E) हिमनद धारियाँ

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

सही उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण:

- **भूकंपीयता:** किसी क्षेत्र में भूकंप की घटना या आवृत्ति को संदर्भित करता है। भूकंप पृथ्वी की पपड़ी में ऊर्जा का अचानक मुक्त होना है, जिससे भूकंपीय तरंगें पैदा होती हैं।
- **सुनामी उत्पत्ति:** सुनामी समुद्री लहरों की एक श्रृंखला है जो समुद्र तल में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी के कारण उत्पन्न होती है, जो आमतौर पर पानी के नीचे के भूकंपों (भूकंपीयता) के कारण होती है जो समुद्र तल के ऊर्ध्वाधर विस्थापन का कारण बनती है।
- **अन्य विकल्प:**
 - (A)मेन्डर्स: नदी के कटाव और निक्षेपण से निर्मित।
 - (B)रेत के टीले: वायूजनित (वायु) जमाव से निर्मित।
 - (D)कास्ट स्थलाकृति: भूजल द्वारा घुलनशील चट्टानों (जैसे चूना पत्थर) के विघटन से निर्मित।
 - (E)हिमनदीय धारियाँ: हिमनदीय घर्षण के कारण आधारशिला पर खरोँच या खाँचे।

6. अभिकथन (A): अनाच्छादन एक व्यापक शब्द है जिसमें अपक्षय, अपरदन और बड़े पैमाने पर बर्बादी शामिल है।

कारण (R): इन सभी प्रक्रियाओं में पृथ्वी की सतह की सामग्रियों का घिसना और हटाना शामिल है।

(A) A और R दोनों सत्य हैं , और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

(B) A और R दोनों सत्य हैं , लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(C) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।

(D) A गलत है, लेकिन R सत्य है।

(E) A और R दोनों झूठे हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

सही उत्तर: (A)

स्पष्टीकरण:

- **अनाच्छादन:** यह उन सभी प्रक्रियाओं के लिए एक सामान्य शब्द है जो भूमि की सतह को नष्ट कर देती हैं। यह लैटिन शब्द ' डेनुडेरे ' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "नंगा करना।"
- **अनाच्छादन के घटक:**
 - **अपक्षय:** पृथ्वी की सतह पर या उसके आस-पास चट्टानों और खनिजों का इन-सीटू विघटन। यह भौतिक (यांत्रिक), रासायनिक या जैविक हो सकता है। इसमें परिवहन शामिल नहीं है।
 - **अपरदन:** वह प्रक्रिया जिसके द्वारा प्राकृतिक शक्तियां (जैसे जल, वायु, बर्फ और गुरुत्वाकर्षण) अपक्षयित पदार्थों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाती और ले जाती हैं।
 - **मास वेस्टिंग (मास मूवमेंट):** गुरुत्वाकर्षण के सीधे प्रभाव में चट्टान और मिट्टी का ढलान की ओर खिसकना, पानी या बर्फ जैसे परिवहन माध्यम की सहायता के बिना (हालांकि पानी स्नेहक के रूप में कार्य कर सकता है)। उदाहरणों में भूस्खलन, मिट्टी का बहाव और चट्टान का गिरना शामिल हैं।
- **संबंध:** अपक्षय सामग्री प्रदान करता है, और कटाव और बड़े पैमाने पर बर्बादी इसे परिवहन करती है। सभी भूमि की सतह को कम करने और आकार देने में योगदान करते हैं। कारण अनाच्छादन की छत्रछाया में इन प्रक्रियाओं की एकीकृत विशेषता को सही ढंग से समझाता है।

7. निम्नलिखित में से कौन सी ढलान विकास के पेंक मॉडल की प्रमुख विशेषता है ?
- (A) युवावस्था, परिपक्वता और वृद्धावस्था के चरणों के माध्यम से चक्रीय प्रगति।
- (B) समय के साथ संरचना और प्रक्रिया की भूमिका पर जोरा।
- (C) एक साथ उत्थान और अनाच्छादन, जिसके परिणामस्वरूप ढलानों का समानांतर पीछे हटना होता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

(D) पेनप्लेन की ओर भूदृश्य विकास ।

(E) प्रमुख कारक के रूप में जलवायु की भूमिका पर प्राथमिक ध्यान।

सही उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण:

- पेनक का मॉडल: वाल्थर पेनक के मॉडल (जिसे अक्सर "मॉर्फोलॉजिकल एनालिसिस" के रूप में संदर्भित किया जाता है) ने डेविस के चक्र के लिए एक विकल्प पेश किया।
- डेविस से मुख्य अंतर:
 - उत्थान और अनाच्छादन: डेविस के विपरीत, जिन्होंने तीव्र उत्थान के बाद दीर्घकालिक अनाच्छादन की बात मानी थी, पेनक ने तर्क दिया कि उत्थान और अनाच्छादन एक साथ होते हैं ।
 - ढलान विकास: उन्होंने ढलानों के विकास पर उत्थान की दर और उसके प्रभाव पर बहुत ध्यान केंद्रित किया । "ढलानों के समानांतर पीछे हटने" की उनकी अवधारणा केंद्रीय है, जहाँ ढलान पीछे हटते समय अपना कोण बनाए रखते हैं, जिससे पेडिमेंट्स का विकास होता है।
 - मुख्य प्रस्तावकर्ता: पेनक ने गतिशील संतुलन में अंतर्जात (उत्थान) और बहिर्जात (अनाच्छादन) प्रक्रियाओं के बीच अंतःक्रिया पर जोर दिया ।
- अन्य विकल्प:
 - (A) और (D) डेविस मॉडल की विशेषताएँ हैं।
 - (B) एक सामान्य भूआकृतिक सिद्धांत है लेकिन पेनक के अद्वितीय योगदान के लिए विशिष्ट नहीं है।
 - लेकिन उत्थान और अनाच्छादन के बीच परस्पर क्रिया पर उनके जोर की तुलना में यह पेनक के मॉडल की प्राथमिक विशिष्ट विशेषता नहीं है ।

8. भूआकृतिक खतरे का उसके प्राथमिक कारण से मिलान करें:

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

सूची I (भूआकृतिक खतरा)	सूची II (प्राथमिक कारण)
1. भूकंप	(ज्वालामुखी प्रस्फुटन
2. भूस्खलन	(B)भूकंपीय ऊर्जा का अचानक निकलना
3. हिमस्खलन	(ग) ढलानों पर चट्टान/मिट्टी की अस्थिरता
4. ज्वालामुखीय खतरा	(घ) ढलान से नीचे बर्फ/बर्फ का तेजी से खिसकना

सही विकल्प चुनें:

- (A) 1-(A), 2-(B), 3-(C), 4-(D)
(B) 1-(B), 2-(C), 3-(D), 4-(A)
(C) 1-(C), 2-(D), 3-(A), 4-(B)
(D) 1-(D), 2-(A), 3-(B), 4-(C)

सही उत्तर: (B)

स्पष्टीकरण:

- भूकंप:** पृथ्वी की पपड़ी में दोषों के साथ तनाव के कारण संचित भूकंपीय ऊर्जा के अचानक निकलने के कारण होता है। यह ऊर्जा भूकंपीय तरंगों के रूप में फैलती है।
- भूस्खलन:** एक प्रकार का सामूहिक विनाश जिसमें चट्टान, मलबे या मिट्टी का द्रव्यमान ढलान से नीचे की ओर खिसकता है। यह ढलानों पर चट्टान/मिट्टी की अस्थिरता के कारण होता है, जो अक्सर भारी वर्षा, भूकंप या मानवीय गतिविधियों के कारण होता है।
- हिमस्खलन:** पहाड़ की ढलान से बर्फ, बर्फ और कभी-कभी चट्टान और मलबे के एक बड़े हिस्से का तेज़ बहाव। यह ढलान से बर्फ/बर्फ के तेज़ बहाव के कारण होता है, जो अक्सर नई बर्फबारी, तापमान में बदलाव या कंपन के कारण होता है।
- ज्वालामुखीय खतरा:** किसी भी संभावित खतरे को संदर्भित करता है जो ज्वालामुखी विस्फोट से उत्पन्न हो सकता है, जिसमें लावा प्रवाह, राख का गिरना, पाइरोक्लास्टिक प्रवाह, लाहर और जहरीली गैसों शामिल हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

9. महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से कथन सत्य हैं ?

1. इसका प्रस्ताव अल्फ्रेड वेगेनर ने 1912 में दिया था।
2. इससे पता चलता है कि सभी महाद्वीप एक समय में मिलकर एक विशाल महाद्वीप बनाते थे जिसे पैंजिया कहा जाता था।
3. समुद्रतल फैलाव की मजबूत व्याख्यात्मक शक्ति के कारण इस सिद्धांत को शुरू में व्यापक रूप से स्वीकार किया गया था।
4. साक्ष्य में महाद्वीपों की जिगसाँ फिट और महासागरों के पार समान जीवाश्म शामिल थे।
5. इसने महाद्वीपीय गति की क्रियाविधि को पूरी तरह से समझाया।

सही कोड चुनें:

- (A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) केवल 2, 4 और 5
(E) उपरोक्त सभी

सही उत्तर: (B)

स्पष्टीकरण:

1. **1912 में अल्फ्रेड वेगेनर द्वारा प्रस्तावित:** यह सही है। जर्मन मौसम विज्ञानी और भूभौतिकीविद् अल्फ्रेड वेगेनर ने पहली बार महाद्वीपीय बहाव पर अपने विचार प्रस्तुत किए थे।
2. **सुपरकॉन्टिनेंट पैंजिया:** वेगेनर ने परिकल्पना की थी कि लगभग 200 मिलियन वर्ष पहले, सभी महाद्वीप एक ही भूभाग में एकजुट थे जिसे पैंजिया (जिसका अर्थ है "सभी भूमि") कहा जाता था, जो बाद में अलग हो गया। यह सही है।
3. **प्रारंभिक स्वीकृति:** सिद्धांत को शुरू में व्यापक रूप से स्वीकार नहीं किया गया

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

था। जबकि वेगेनर ने सम्मोहक साक्ष्य प्रस्तुत किए, वे महाद्वीपों के गति करने के तरीके के बारे में कोई ठोस तंत्र प्रदान नहीं कर सके, जो एक बड़ी आलोचना थी। सीप्लोर फैलाव बहुत बाद में विकसित हुआ और प्लेट टेक्टोनिक्स के लिए महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान किया, न कि सीधे महाद्वीपीय बहाव के लिए। इसलिए, कथन 3 गलत है।

4. साक्ष्य: वेगेनर ने कई साक्ष्य प्रस्तुत किये:
- जिगसाँ फिट: महाद्वीपीय सीमाओं, विशेष रूप से दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका का उल्लेखनीय फिट।
 - जीवाश्म साक्ष्य: समान जीवाश्म प्रजातियाँ (जैसे, मेसोसॉरस , ग्लोसोप्टेरिस) व्यापक रूप से अलग-अलग महाद्वीपों पर पाई जाती हैं।
 - भूवैज्ञानिक साक्ष्य: महासागरों के पार समान प्रकार की चट्टानें और पर्वत श्रृंखलाएं (जैसे, अप्पलाचियन और कैलेडोनिड्स) पाई जाती हैं।
 - पुराजलवायु साक्ष्य: उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में प्राचीन हिमनदों और ध्रुवीय क्षेत्रों में कोयला जमा होने के साक्ष्य। यह सही है।
5. गति का तंत्र: सिद्धांत ने महाद्वीपीय गति के तंत्र को पूरी तरह से स्पष्ट नहीं किया। वेगेनर ने "ध्रुव-पलायन बल" और ज्वारीय बलों जैसे बलों का प्रस्ताव रखा, जो बाद में अपर्याप्त साबित हुए। तंत्र को बाद में प्लेट टेक्टोनिक्स सिद्धांत के विकास द्वारा प्रदान किया गया था , जिसमें मेंटल संवहन और समुद्र तल प्रसार जैसी अवधारणाएँ शामिल थीं। इसलिए, कथन 5 गलत है।

10. अनाच्छादन की प्रक्रिया मुख्य रूप से किसके लिए जिम्मेदार है:

- (A)ज्वालामुखी विस्फोट के माध्यम से नए भू-आकृतियों का निर्माण करना।
(B)बड़े पैमाने पर क्रस्टल विकृतियाँ जैसे दोष और तह बनाना।
(C) पृथ्वी की सतह को कम और समतल करना।
(D)टेक्टोनिक प्लेटों की गति।
(E)गहरे महासागरीय खाइयों का निर्माण।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

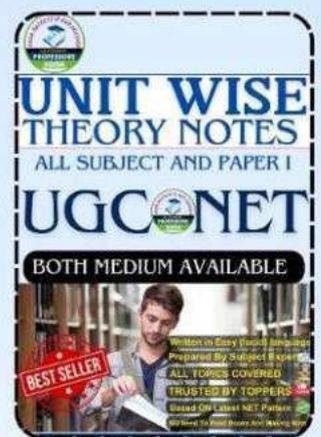
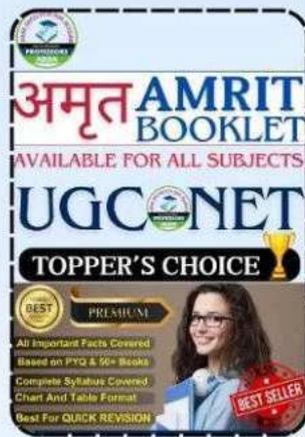
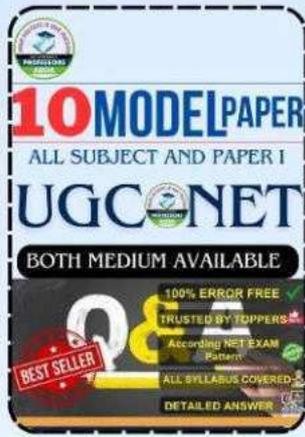
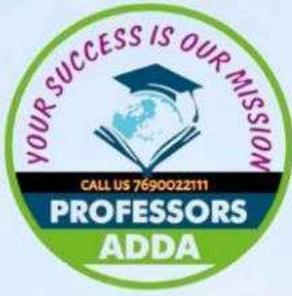
सही उत्तर: (C)

स्पष्टीकरण:

- अनाच्छादन: जैसा कि चर्चा की गई है, अनाच्छादन में अपक्षय, अपरदन और बड़े पैमाने पर बर्बादी शामिल है। ये सतही प्रक्रियाएँ हैं।
- अनाच्छादन का प्रभाव: इन प्रक्रियाओं का संचयी प्रभाव पृथ्वी की सतह का घिसना, क्षरण और समतल होना है। वे अपरदित सामग्री को परिवहन करके उच्च ऊँचाई (पहाड़, पठार) को कम करने और निचले क्षेत्रों (घाटियों, बेसिन) को भरने का काम करते हैं।
- अन्य विकल्प:
 - (A) ज्वालामुखी विस्फोट अंतर्जात प्रक्रियाएँ हैं जो भू-आकृतियों का निर्माण करती हैं।
 - (B) दोष और वलन अंतर्जात बलों (टेक्टोनिक आंदोलनों) के परिणाम हैं।
 - (D) टेक्टोनिक प्लेटों की गति आंतरिक पृथ्वी प्रक्रियाओं (मेंटल संवहन), एक अंतर्जात बल द्वारा संचालित होती है।
 - अंतर्जात प्रक्रिया, सबडक्शन के कारण अभिसारी प्लेट सीमाओं पर बनती हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

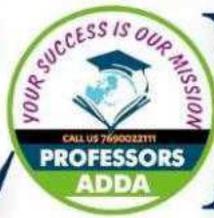
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788



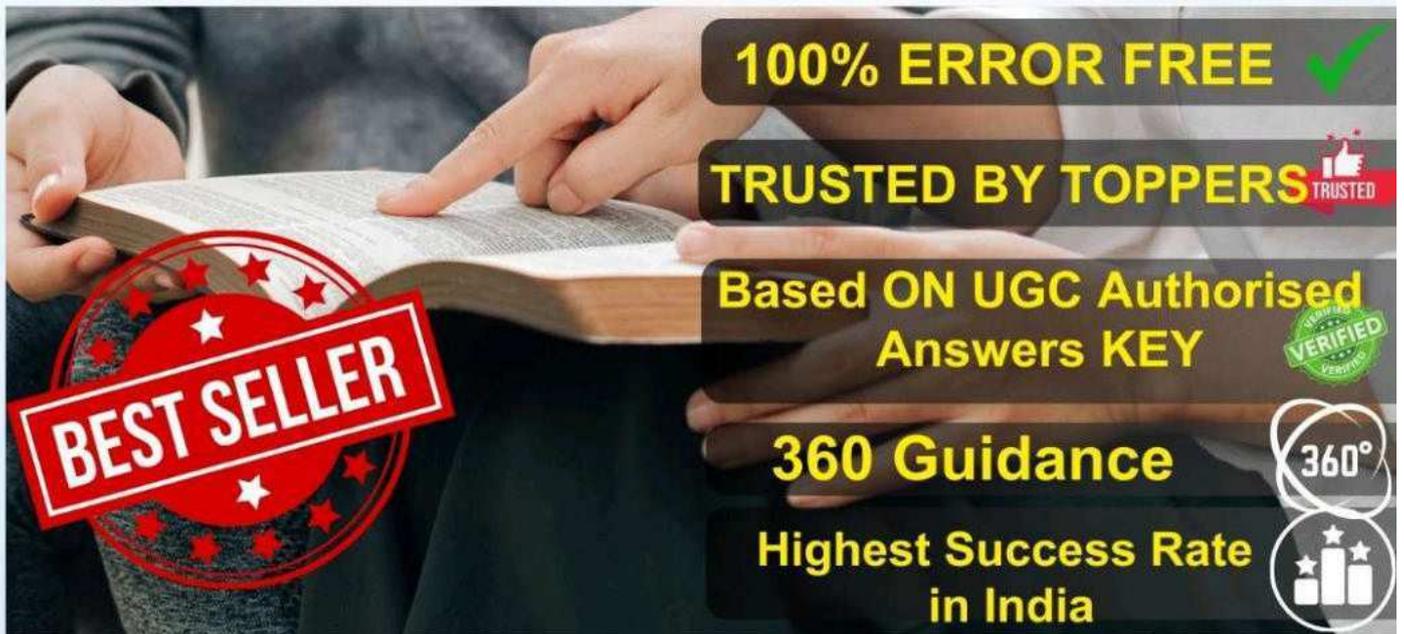
10 YEAR'S PYQ

ALL SUBJECT AND PAPER I

UGC NET



BOTH MEDIUM AVAILABLE



100% ERROR FREE ✓

TRUSTED BY TOPPERS  TRUSTED

Based ON UGC Authorised Answers KEY 

360 Guidance 

Highest Success Rate in India 



+91-76900-22111

+91-92162-28788

यू.जी.सी. NET भूगोल 18-06-2024

1. डेविस और पेंक के भू-आकृतिक चक्रों के संदर्भ में सही कथनों को पहचानिए:
- A. डेविस ने नदीय प्रक्रम के अपरदन चक्र को 'अपरदन का सामान्य चक्र' माना।
B. डेविस ने गिलबर्ट द्वारा प्रस्तावित 'आधार तल' और पावेल द्वारा प्रतिपादित 'प्रवणित सरिताओं' की संकल्पना का प्रयोग किया तथा 'उद्विकासी पैराडाइम' को लागू किया।
C. पेंक मॉडल के समरूपी दृश्य भूमि विकास के चरण के द्वितीय उप-चरण में निरपेक्ष ऊंचाई में वृद्धि होती है और सापेक्ष उच्चावच में भी इसी दर से वृद्धि होती है।
D. डेविस ने ढाल पतन की अवधारणा का प्रयोग किया।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
- (a) केवल A, B और C
(b) केवल A और D
(c) केवल B, C और D
(d) केवल A और C
Ans. (b):
2. झाँसी के ऊपर एक वर्ष में सूर्य की किरणें कितनी बार ऊर्ध्वाधर होती हैं?
- (a) एक बार
(b) दो बार
(c) कभी नहीं
(d) पूरे वर्ष
Ans. (c):
3. भारत में जनसंख्या नीति उपायों के संबंध में सही कथनों की पहचान करें:
- A. परिवार नियोजन तरीकों को अपनाए जाने की दर बिहार में केरल की तुलना में दो गुनी है।
B. विस्तार उपागम का उद्देश्य संदेश तथा सेवाओं को देश के दूर-दराज क्षेत्रों में लोगों तक पहुंचाना था।
C. कैफेटेरिया उपागम का अभिप्राय परिवार नियोजन कार्यक्रम को आवश्यक उपाय के रूप में अधिरोपित करना था।
D. नई राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (2000) में शिक्षा तथा स्वास्थ्य क्षेत्रों के विकास पर ध्यान दिया गया था।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
- (a) केवल A और B
(b) केवल B और C
(c) केवल A और D
(d) केवल B और D
Ans. (d):
4. निम्नांकित देशों को वर्ष 2022 में उनके जनसंख्या घनत्व के आधार पर आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
- A. भूटान
B. बांग्लादेश

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते हैं, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT

NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

C. स्विटजरलैंड

D. मोनाको

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) B, A, D, C

(b) A, C, B, D

(c) C, D, A, B

(d) D, B, C, A

Ans. (b):

5. सही कथनों की पहचान करें:

A. प्रजाति-केंद्रिकवाद शब्दावली को विलियम ग्राहम समर द्वारा निरूपित किया गया था।

B. ब्लाश ने कहा था: "सांस्कृतिक परिदृश्य संस्कृति समूह द्वारा प्राकृतिक परिदृश्य से निर्मित होता है। संस्कृति कारक है, प्राकृतिक क्षेत्र माध्यम है, सांस्कृतिक परिदृश्य परिणाम है।"

C. भारत में, जनजातीय समाजों की सामाजिक अपवर्जनता के निवारण के लिए पृथक्ता तथा एकीकरण के बजाए आत्मसात्करण पर बल दिया गया।

D. हैन्सन तथा मैकडोवेल ने लैंगिक संबंधों में असमानताओं को उजागर किया, जो संस्कृति, समाज तथा स्थानों को आधार प्रदान करते हैं।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) केवल A और D

(b) केवल B, C और D

(c) केवल A, B और C

(d) केवल A और B

Ans. (a):

6. वैश्विक स्तर पर औसत वार्षिक वर्षण लगभग _____ सेमी. है।

(a) 50

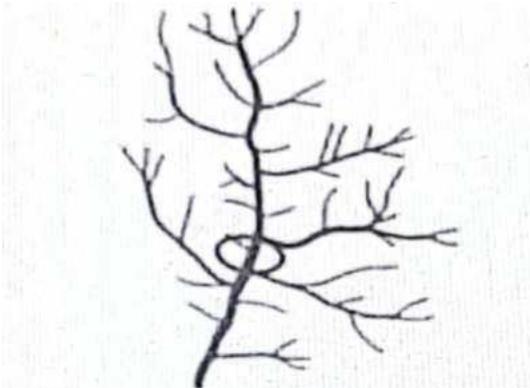
(b) 100

(c) 150

(d) 200

Ans. (b):

7. स्ट्रैह्लर की विधि के अनुसार चक्रित सरिता के अपवाह क्रम को चिह्नानंकित कीजिए:



जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते हैं, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**

NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

PROFESSORS ADDA NET NOTES INSTITUTE

- (a) तृतीय क्रम
- (b) चतुर्थ क्रम
- (c) पंचम क्रम
- (d) द्वितीय क्रम

Ans. (a):

8. $\frac{\sqrt{\sum_{i=1}^n (x_i - \bar{x})^2}}{N}$ इस सूत्र का प्रयोग किसके परिकलन के लिए किया जाता है:

- (a) माध्य विचलन
- (b) प्रसरण (परिवर्त्य) गुणांक
- (c) मानक विचलन
- (d) वैषम्यता

Ans. (c):

Let's Crack #JRF Asst Professor / Phd

ALL UGC NET SUBJECT AVAILABLE

Study group Benefits with privacy ↓

1. Concept/ Theory pdf Notes
2. MCQ Quiz
3. Latest PYQs
4. Quick Revision Amriut
5. Model Test Papers
6. Current Affairs Focus
7. All India Rank
8. Latest exam Updates
9. Brain Booster facts

Free Free --- Join UGC NET

Subject wise Free study group.

ALL subject available.

send us Subject + medium on this number
7690022111. Our team will add you

Click on link to join

<https://wa.link/9r0r0>

Don't Miss this opportunity

Join & share..... आज ही जुड़े और अपनी NET / JRF एक बार में सफलता सुनिश्चित करें .

Contact to team to join **+91 769000-22111 +91 92162-28788**

पेपर 1 और सभी नेट विषय के संपूर्ण नोट्स नए सिलेबस और पैटर्न के अनुसार उपलब्ध हैं।
निःशुल्क samples के लिए

अभी कॉल या व्हाट्सएप करें **7690022111 / 9216228788**

9. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

सूची-I (रोग)	सूची-II (कारण)
A. फेफड़े का कैंसर	I. पारा विषाक्तन
B. ब्लैक फुट रोग	II. धूम्र-कोहरा
C. त्वचा का कैंसर	III. भू-जल में आर्सेनिक की अधिक मात्रा
D. मिनीमाता रोग	IV. पराबैंगनी किरणों के विकिरण में अधिक उद्घाषण

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते हैं, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे
दिए Whats App No. पर MESSAGE करें अपना SUBJECT

NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

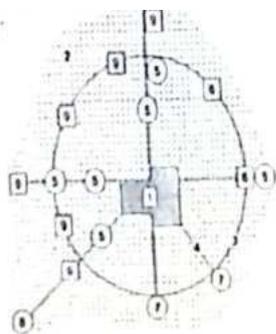
PROFESSORS ADDA NET NOTES INSTITUTE

Choose the correct answer:

- (a) A-IV, B-III, C-II, D-I
- (b) A-III, B-II, C-I, D-IV
- (c) A-II, B-III, C-IV, D-I
- (d) A-I, B-II, C-IV, D-III

Ans. (c):

10. दिए गए रेखाचित्र में D की पहचान कीजिए:



The Model of Downtown and Edge cities

- (a) केंद्रीय शहर
- (b) ऐज सिटी
- (c) आवासीय उपनगर
- (d) हवाई अड्डा

Ans. (b):

11. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

सूची-I (आर्द्रता)	सूची-II (के रूप में अभिव्यक्त)
A. निरपेक्ष आर्द्रता	I. %
B. विशिष्ट आर्द्रता	II. ग्राम/घन मीटर
C. मिश्रण अनुपात	III. Mass of Dry Air / जलवाष्प का भार / शुष्क वायु का भार
D. सापेक्ष आर्द्रता	IV. ग्राम/किलोग्राम

Choose the correct answer:

- (a) A-IV, B-II, C-III, D-I
- (b) A-II, B-IV, C-III, D-I
- (c) A-II, B-III, C-IV, D-I
- (d) A-IV, B-II, C-I, D-III

Ans. (b):

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते हैं, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**

NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

PROFESSORS ADDA NET NOTES INSTITUTE

12. टॉरनेडों के संदर्भ में सही कथनों की पहचान करें:

- A. समुद्र में टॉरनेडो जैसी परिघटना को जलस्तंभ कहा जाता है।
 - B. टॉरनेडो के विकास में मेसोसाइक्लोन का बनना एक पूर्व आवश्यकता है।
 - C. टॉरनेडो एक घुमावदार कीपाकार वायु स्तंभ को प्रदर्शित करता है जो कपासी वर्षा मेघों से नीचे धरातल तक पहुँचती है।
 - D. जापान विश्व का सर्वाधिक टॉरनेडो प्रवण क्षेत्र है।
- नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) केवल B, C तथा D
- (b) केवल B तथा D
- (c) केवल C तथा D
- (d) केवल A, B तथा C

Ans. (d):

13. निम्नलिखित शहरों को ग्रीष्म ऋतु में दिवालोको की अवधि के अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

- A. चेन्नई
- B. ढाका
- C. मास्को
- D. शंघाई

Choose the correct answer from the options given below:

- (a) C, D, B, A
- (b) D, C, B, A
- (c) C, D, A, B
- (d) D, C, A, B

Ans. (a):

14. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

सूची-I (सूत्र / समीकरण)	सूची-II (उद्देश्य)
A. $(h \times r)/H$	I. उच्चावच विस्थापन के परिकलन हेतु
B. $f / (H - h)$	II. वायव चित्र से किसी वस्तु की ऊँचाई के परिकलन हेतु
C. $(H - h) \times dp / (P + dp)$	III. वायव चित्र के मापक के परिकलन हेतु
D. f/d	IV. शटर की गति के परिकलन के लिए

Choose the correct answer from the options given below:

- (a) A-I, B-III, C-II, D-IV
- (b) A-I, B-II, C-III, D-IV
- (c) A-IV, B-III, C-II, D-I
- (d) A-IV, B-III, C-I, D-II

Ans. (c):

15. निम्नलिखित भू-पत्रकों को वृहत् मापक से लघु मापक के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

- A. 47D/11
- B. 63
- C. 55J
- D. 63K/7/2

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते हैं, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**

NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

UGC-NET CSIR PGT SET CUET JRF ASST. PROF

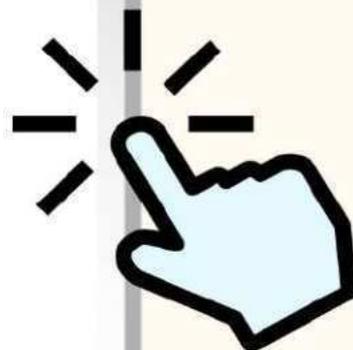
PDF

UGC NET

ALL

SUBJECT

NOTES



click here

**SPECIAL
PRICE**

REGULAR PRICE

~~₹ 2999~~

LIMITED TIME PRICE

₹ **9



+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

UGC NET भूगोल PYQ/MCQ प्रश्नपत्र विश्लेषण और ट्रेंड पैटर्न (PDF 2016 - JAN 2025 पर आधारित)

1. प्रश्न प्रारूपों में विविधता:

- **बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs):** सभी प्रश्न इसी प्रारूप में हैं, जिनमें चार विकल्प दिए गए हैं।
- **मिलान आधारित प्रश्न (Match List):** ये प्रश्न काफी संख्या में पूछे जा रहे हैं। इनमें दो सूचियाँ (List I और List II) होती हैं, जिनमें अवधारणाओं, विद्वानों, स्थानों, सिद्धांतों, उपकरणों आदि का मिलान करना होता है। यह प्रारूप विभिन्न इकाइयों जैसे भौगोलिक चिंतन, भू-आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, समुद्र विज्ञान, आर्थिक भूगोल, भारत का भूगोल और भौगोलिक तकनीकों में आम है।
- **अभिकथन और कारण (Assertion & Reason - A/R):** इन प्रश्नों की संख्या भी महत्वपूर्ण है। इनमें एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया जाता है, और परीक्षार्थी को उनके बीच संबंध और सत्यता का मूल्यांकन करना होता है। ये वैचारिक समझ का परीक्षण करते हैं।
- **कथन आधारित प्रश्न (Statement-based):** इनमें एक या अधिक कथन दिए जाते हैं और पूछा जाता है कि कौन सा/से कथन सही है/हैं या गलत है/हैं। ये तथ्यात्मक और वैचारिक दोनों तरह की जानकारी का परीक्षण करते हैं। इनमें अक्सर 4-5 कथन देकर सही/गलत संयोजन चुनने वाले प्रश्न (जैसे A, B सही हैं; C, D, E गलत हैं) शामिल होते हैं।

आगामी **UGC NET / JRF** परीक्षा के लिए इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ें। प्रोफेसर्स अड्डा विषय विशेषज्ञ टीम ने आपकी अध्ययन सहायता के लिए इसे बहुत मेहनत से तैयार किया है। हम अपने छात्रों की अंतिम सफलता तक उनकी मदद करने में हमेशा खुश रहते हैं।

- **कालानुक्रमिक क्रम (Chronological Order):** घटनाओं, विद्वानों, सिद्धांतों, प्रकाशनों या प्रक्रियाओं को उनके घटित होने के क्रम में व्यवस्थित करने वाले प्रश्न भी पूछे जाते हैं, विशेषकर भौगोलिक चिंतन और पर्यावरण भूगोल में।
- **आरोही/अवरोही क्रम (Ascending/Descending Order):** डेटा-आधारित इकाइयों जैसे जनसंख्या भूगोल, आर्थिक भूगोल, भारत का भूगोल में राज्यों/क्षेत्रों/देशों को किसी विशेष संकेतक (जैसे जनसंख्या घनत्व, साक्षरता, उत्पादन, HDI) के आधार पर क्रम में लगाने वाले प्रश्न।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- **परिच्छेद/गद्यांश आधारित प्रश्न (Passage-based):** एक गद्यांश दिया जाता है, जिस पर आधारित 5 प्रश्न पूछे जाते हैं। यह समझ और विश्लेषण क्षमता का परीक्षण करता है। (जैसे जलवायु परिवर्तन, माल्थस के सिद्धांत पर आधारित गद्यांश देखे गए)।
- **आरेख/मानचित्र आधारित प्रश्न (Diagram/Map-based):** किसी आरेख (जैसे ऊर्जा खपत पैटर्न, तापमान वितरण ग्राफ) या मानचित्र (जैसे भारत के दर्रे) के आधार पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

2. वैचारिक बनाम तथ्यात्मक प्रश्नों का संतुलन:

- प्रश्नपत्रों में वैचारिक स्पष्टता (Conceptual Clarity) और तथ्यात्मक जानकारी (Factual Knowledge) दोनों का अच्छा संतुलन दिखाई देता है।
- भौगोलिक चिंतन, भू-आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, समुद्र विज्ञान, जनसंख्या और अधिवास भूगोल, आर्थिक भूगोल जैसी इकाइयों में सिद्धांतों, मॉडलों और अवधारणाओं की गहरी समझ आवश्यक है।
- वहीं, भारत का भूगोल, संसाधन भूगोल, भौगोलिक तकनीकें और पर्यावरण भूगोल में तथ्यात्मक जानकारी (जैसे जनगणना डेटा, स्थानों के नाम, उपकरणों के नाम, संधियों/सम्मेलनों की तिथियां) का महत्व अधिक है।

3. प्रमुख फोकस क्षेत्र (Recurring Themes):

- **भौगोलिक चिंतन:** विभिन्न विचारधाराएं (नियतिवाद, संभववाद, प्रत्यक्षवाद, मानवतावाद आदि), प्रमुख भूगोलवेत्ता (विशेषकर ग्रीक, रोमन, अरब, जर्मन, फ्रांसीसी, अमेरिकी) और उनकी पुस्तकें/योगदान।
- **भू-आकृति विज्ञान:** अपरदन चक्र (डेविस, पेंक), प्लेट विवर्तनिकी, विभिन्न अपरदन कारकों द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ।
- **जलवायु विज्ञान:** कोपेन का वर्गीकरण, वायुमंडलीय परिसंचरण, मानसून, जलवायु परिवर्तन और संबंधित समझौते।
- **समुद्र विज्ञान:** महासागरीय धाराएँ, नितल उच्चावच, लवणता और तापमान।
- **पर्यावरण भूगोल:** पारिस्थितिकी तंत्र की अवधारणाएँ, जैव विविधता, प्रदूषण, आपदा प्रबंधन, सतत विकास।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- **जनसंख्या एवं अधिवास भूगोल:** जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल, माल्थस का सिद्धांत, प्रवास सिद्धांत, नगरीय संरचना मॉडल, केंद्रीय स्थान सिद्धांत, भारत की जनगणना (2011) के आंकड़े।
- **आर्थिक भूगोल:** कृषि और औद्योगिक अवस्थिति सिद्धांत (वॉन थ्यूनेन, वेबर), संसाधन वितरण (विशेषकर भारत में)।
- **भौगोलिक तकनीकें:** मानचित्रकला (मापनी, प्रक्षेप), सुदूर संवेदन (सेंसर, प्लेटफॉर्म, डेटा व्याख्या), GIS (डेटा मॉडल), सांख्यिकीय विधियाँ (सहसंबंध, प्रतिचयन, निकटतम पड़ोसी विश्लेषण)।
- **भारत का भूगोल:** भौतिक विभाग (पर्वत, नदियाँ, दर्रे), जलवायु, मृदा, वनस्पति, जनसंख्या, कृषि, खनिज।

4. कठिनाई स्तर:

- प्रश्नों का समग्र स्तर मध्यम से कठिन प्रतीत होता है। कई प्रश्नों में बहु-कथनात्मक प्रारूप और मिलान वाले प्रश्न होते हैं, जिनमें सटीक जानकारी और अवधारणाओं की स्पष्ट समझ आवश्यक होती है। अभिकथन-कारण वाले प्रश्न विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं।

निष्कर्ष:

इन प्रश्नपत्रों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि UGC NET भूगोल परीक्षा में सफलता के लिए पाठ्यक्रम की सभी इकाइयों की व्यापक और गहरी समझ आवश्यक है। केवल तथ्यों को याद करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि अवधारणाओं को समझना, विभिन्न सिद्धांतों की तुलना करना और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करना भी महत्वपूर्ण है। मिलान, अभिकथन-कारण, और कथन-आधारित प्रश्नों के अभ्यास पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पिछले वर्षों के प्रश्नों का गहन अध्ययन निश्चित रूप से तैयारी की सही दिशा निर्धारित करने में सहायक होता है।

अंतिम सफलता के लिए **प्रोफेसर्स अड्डा** का संपूर्ण अपडेटेड अध्ययन सामग्री पैकेज खरीदें।

हम साल में 2 बार **NET Exam** से पहले अप डेट करते हैं।

प्रिय स्टूडेंट्स हमारी अमृत नोट्स पुस्तिका छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

आप खुद से, कहीं से, कुछ भी पढ़ें, लेकिन एक बार हमारे स्टडी मटेरियल से जरूर पढ़ें ,

आपको बहुत फायदा होगा। गुणवत्तापूर्ण संपूर्ण मार्ग दर्शन देना हमारी प्राथमिकता है।

Contact **7690022111 / 9216228788**

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

आगामी **UGC NET / JRF** परीक्षा के लिए इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ें। प्रोफेसर्स अड्डा विषय विशेषज्ञ टीम ने आपकी अध्ययन सहायता के लिए इसे बहुत मेहनत से तैयार किया है। हम अपने छात्रों की अंतिम सफलता तक उनकी मदद करने में हमेशा खुश रहते हैं।

इकाई I: भू-आकृति विज्ञान (Geomorphology)

• विस्तृत अवधारणाएँ:

- **अपरदन के सामान्य चक्र:** डेविस (अवस्थाओं पर जोर), पेंक (ढाल विकास, प्राइमरिस्म, एन्ट्रिस्म), एल.सी. किंग (पेडिप्लेनेशन) के मॉडलों की मूलभूत संकल्पनाएं, मान्यताएं और तुलनात्मक अध्ययन।
- **स्थलाकृति विकास:** पेनिप्लेन, पैनप्लेन, पेडिप्लेन (इनकी निर्माण प्रक्रिया और अंतर)।
- **भू-आकृतिक प्रक्रियाएं:** अपक्षय (भौतिक, रासायनिक - जैसे ऑक्सीकरण, कार्बोनेशन, जलयोजन), वृहद् संचलन (प्रकार - मलबा प्रवाह, भूस्खलन, सोलिफ्लक्शन), अपरदन और निक्षेपण।
- **विभिन्न कारकों द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ:**
 - **नदीय:** वी-आकार घाटी, जलप्रपात, जलोढ़ पंख, प्राकृतिक तटबंध, विसर्प, गोखुर झील, डेल्टा (चापाकार, पंजाकार, ज्वारनदमुखी, रुण्डित)।
 - **हिमनदीय:** सर्क, अरेत, हॉर्न, यू-आकार घाटी, ड्रमलिन, एस्कर, केम, हिमोढ़ (प्रकार)।
 - **पवन (शुष्क):** यारडांग, ज्यूजेन, इनसलबर्ग, छत्रक शिला, बालुका स्तूप (बरखान, अनुदैर्घ्य, अनुप्रस्थ), लोएस, पेडिमेंट, प्लाया।
 - **कार्स्ट:** लैपीज, घोलरंध, डोलाइन, युवाला, पोल्ये, अंधी घाटी, कंदरा, स्टैलेक्टाइट, स्टैलेग्माइट।
 - **सागरीय:** क्लिफ, वेलांचली प्लेटफार्म, स्टैक, स्टंप, मेहराब, कंदरा, रोधिका बीच, स्पिट, हुक, लूप।
- **प्लेट विवर्तनिकी:** प्लेट सीमाएं (अभिसारी, अपसारी, संरक्षी/रूपांतरण - जैसे सैन एंड्रियास भ्रंश), संबंधित स्थलाकृतियाँ और घटनाएं (वलित पर्वत, भ्रंश घाटी, ज्वालामुखी, भूकंप)।
- **भ्रंश और वलन:** प्रकार और संबंधित स्थलाकृतियाँ।
- **भूकंप:** उद्गम केंद्र (फोकस), अधिकेंद्र (एपीसेंटर) का निर्धारण (न्यूनतम आवश्यक स्टेशन), परिमाण और तीव्रता।
- **ढाल विकास:** डेविस, पेंक, वुड, किंग के विचार, हाइड्रोलिक ढाल सिद्धांत (आर.ई. हॉर्टन)।
- **भू-आकृतिक जोखिम:** भूस्खलन (कारक, प्रकार, परिणाम), भूकंपीय क्षेत्र (भारत के संदर्भ में)।
- **क्रमबद्ध स्थलाकृतियाँ:** प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रम की स्थलाकृतियाँ (जैसे सर्क - तृतीय क्रम)।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

अमृत बुकलेट

PROFESSORS ADDA

यह क्या है, क्यों पढ़ें इसे?

- **AMRIT Booklet** को विषय की सभी प्रमुख पुस्तकों से परीक्षा उपयोगी सार निकाल एक जगह **PYQ** पैटर्न पर बनाया गया है। आपको बुक्स नहीं पढ़नी अब.
- यह सिर्फ एक सामान्य बुकलेट नहीं, बल्कि एक **Top-Level rstudy Tool** है, जिसे विशेष रूप से उन छात्रों के लिए तैयार किया गया है जो तेज़ रिवीजन, **Exam-Time Recall** और **Concept Clarity** चाहते हैं।
- इसमें आपको मिलेगा हर जरूरी टॉपिक का “अमृत निचोड़” — यानी वही बातें जो परीक्षा में बार-बार पूछी जाती हैं।
- यह **Booklet** हर विषय के **Core Concepts, Keywords, Thinkers, Definitions** और **Chronology** को एक जगह समेटती है — और वो भी एकदम **crisp** तरीके से प्रश्न और उत्तर शैली में।

लाभ और विशेषताएँ:

- ✓ Super Quick Revision Tool
- ✓ Exam Time Confidence Booster
- ✓ High Retention Format
- ✓ 100% Exam-Oriented – No Extra, No Fluff

ALL INDIA RANK

कैसे करें सर्वोत्तम उपयोग?

- ✓ पहले गाइड से टॉपिक का अमृत पेज पढ़ें
- ✓ Concepts के साथ-साथ Keywords को याद करें
- ✓ उसी दिन उस टॉपिक से MCQs हल करें
- ✓ परीक्षा से पहले सिर्फ इसी से रिवीजन करें — Time Saving, Score Boosting

🎁 Bonus Insides



🎯 यह किनके लिए है?

- ✓ NET / SET / PGT
- ✓ Assistant Professor Candidates
- ✓ जिन्हें समय कम है लेकिन **Result** चाहिए **Strong** और **SYLLABUS** भी पूरा हो

यह **Booklet** उन सभी के लिए है जो सिर्फ पढ़ना नहीं, “सही पढ़ना” चाहते हैं।

🔑 क्या-क्या मिलेगा इसमें?

- **One Page One Topic Format** – हर पेज पर एक पूरा टॉपिक क्लियर
- **2025** के नवीनतम बदलावों के अनुसार अपडेटेड

PROFESSORS
ADDA

Available in Digital PDF + Print Format

📌 अभी बुक करें | DM करें | WhatsApp करें | Link से डाउनलोड करें

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP



+91 7690022111 +91 9216228788

भूगोल वनलाइनर

- 1. प्रश्न:** 1912 में 'महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत' (Continental Drift Theory) का प्रस्ताव किसने दिया?
उत्तर: अल्फ्रेड वेगेनर।
- 2. प्रश्न:** राजनीतिक भूगोल में 'हृदय-स्थल सिद्धांत' (Heartland Theory) 1904 में किस ब्रिटिश भूगोलवेत्ता द्वारा प्रतिपादित किया गया था?
उत्तर: हैलफोर्ड मैकिंडर।
- 3. प्रश्न:** बस्तियों के वितरण की व्याख्या करने वाला 'केंद्रीय स्थान सिद्धांत' (Central Place Theory) 1933 में किस जर्मन भूगोलवेत्ता द्वारा दिया गया था?
उत्तर: वाल्टर क्रिस्टालर।
- 4. प्रश्न:** 'भौगोलिक अपरदन चक्र' (Geographical Cycle of Erosion) की अवधारणा किस अमेरिकी भूगोलवेत्ता द्वारा तैयार की गई थी?
उत्तर: विलियम मॉरिस डेविस।
- 5. प्रश्न:** किसे अक्सर उनके अनुभवजन्य कार्यों, विशेष रूप से पुस्तक कॉसमॉस (Kosmos) के लिए 'आधुनिक भूगोल का जनक' कहा जाता है?
उत्तर: अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट।
- 6. प्रश्न:** 'संभववाद' (Possibilism) की अवधारणा किस फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता से सबसे निकटता से जुड़ी है?
उत्तर: पॉल विडाल डी ला ब्लाश।
- 7. प्रश्न:** 'जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल' (Demographic Transition Model) का वर्णन सबसे पहले 1929 में किस अमेरिकी जनसांख्यिकीविद् द्वारा किया गया था?
उत्तर: वॉरेन थॉम्पसन।
- 8. प्रश्न:** भारतीय सर्वेक्षण विभाग (Survey of India) का मुख्यालय किस शहर में स्थित है?

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

उत्तर: देहरादून।

9. प्रश्न: शहरी भूमि उपयोग का 'सेक्टर मॉडल' (Sector Model) 1939 में किस अर्थशास्त्री द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: होमर होयट।

10. प्रश्न: पृथ्वी की पपड़ी में गुरुत्वाकर्षण संतुलन की स्थिति का वर्णन करने के लिए 'आइसोस्टैसी' (isostasy) शब्द 1889 में किस अमेरिकी भूविज्ञानी द्वारा गढ़ा गया था?

उत्तर: क्लेरेंस डटन।

11. प्रश्न: क्षेत्रीय विकास का 'कोर-परिधि मॉडल' (Core-Periphery Model) किस योजनाकार द्वारा विकसित किया गया था?

उत्तर: जॉन फ्रीडमैन।

12. प्रश्न: कोपेन जलवायु वर्गीकरण प्रणाली मुख्य रूप से किन दो चरों का उपयोग करती है?

उत्तर: तापमान और वर्षा।

13. प्रश्न: कौन सा अक्षांश 'गरजते चालीस' (Roaring Forties) के नाम से प्रसिद्ध है?

उत्तर: 40 डिग्री दक्षिण।

14. प्रश्न: पेरू और चिली के तट पर बहने वाली ठंडी महासागरीय धारा को किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर: हम्बोल्ट धारा (या पेरू धारा)।

15. प्रश्न: पृथ्वी की पपड़ी को मेंटल से अलग करने वाली सीमा का नाम किस क्रोएशियाई भूकंपविज्ञानी के नाम पर रखा गया है?

उत्तर: एंड्रिया मोहरोविसिक (मोहरोविसिक असातत्य)।

16. प्रश्न: प्रभावशाली पुस्तक ज्योग्राफी: ए मॉडर्न सिंथेसिस किसने लिखी?

उत्तर: पीटर हैगेट।

17. प्रश्न: 1826 में प्रकाशित 'वॉन थ्यूनेन मॉडल' एक केंद्रीय शहर के चारों ओर किस प्रकार की गतिविधि के पैटर्न की व्याख्या करता है?

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

उत्तर: कृषि भूमि उपयोग।

18. प्रश्न: 'रैंक-आकार नियम' (Rank-Size Rule), जो शहरों के जनसंख्या वितरण का वर्णन करता है, किस विद्वान से संबंधित है?

उत्तर: जॉर्ज ज़िफ।

19. प्रश्न: भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में 'काटो और जलाओ' कृषि को स्थानीय रूप से क्या कहा जाता है?

उत्तर: झूमिंग (या झूम)।

20. प्रश्न: दुनिया की सबसे बड़ी प्रवाल भित्ति, ग्रेट बैरियर रीफ, ऑस्ट्रेलिया के किस शहर के तट पर स्थित है?

उत्तर: क्वींसलैंड।

21. प्रश्न: 'सागर नितल प्रसरण' (Sea Floor Spreading) सिद्धांत 1960 के दशक की शुरुआत में किस भूभौतिकीविद् द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: हैरी हेस।

22. प्रश्न: 'मानसिक मानचित्र' (mental maps) की अवधारणा को भूगोल में किन विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किया गया?

उत्तर: पीटर गोल्ड और रॉडनी व्हाइट।

23. प्रश्न: भारत की सबसे ऊंची पर्वत चोटी कंचनजंगा किस राज्य में स्थित है?

उत्तर: सिक्किम।

24. प्रश्न: मरणोपरांत प्रकाशित पुस्तक जिओग्राफी ह्यूमेन (मानव भूगोल) किस फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता द्वारा लिखी गई थी?

उत्तर: जीन ब्रुन्स।

25. प्रश्न: 'प्रमुख शहर' (Primate City) की अवधारणा सबसे पहले 1939 में किस भूगोलवेत्ता द्वारा प्रस्तावित की गई थी?

उत्तर: मार्क जेफरसन।

26. प्रश्न: S-आकार का मध्य-महासागरीय कटक किस महासागर की एक प्रमुख विशेषता है?

उत्तर: अटलांटिक महासागर।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- 27. प्रश्न:** भारत के राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (NRSC) का मुख्यालय किस शहर में स्थित है?
उत्तर: हैदराबाद।
- 28. प्रश्न:** मात्रात्मक क्रांति का एक प्रमुख ग्रंथ, पुस्तक एक्सप्लेनेशन इन ज्योग्राफी (1969), किसके द्वारा लिखी गई थी?
उत्तर: डेविड हार्वे।
- 29. प्रश्न:** भारत में 'हरित क्रांति' किस फसल की उच्च उपज वाली किस्मों की शुरूआत के साथ सबसे निकटता से जुड़ी हुई है?
उत्तर: गेहूँ।
- 30. प्रश्न:** किस भूगोलवेत्ता को क्षेत्रीय भूगोल की नींव रखने का श्रेय दिया जाता है और उन्होंने जिओग्राफीया लिखी?
उत्तर: स्ट्रैबो।
- 31. प्रश्न:** औद्योगिक अवस्थिति का 'न्यूनतम लागत सिद्धांत' (Least Cost Theory) किस जर्मन अर्थशास्त्री द्वारा तैयार किया गया था?
उत्तर: अल्फ्रेड वेबर।
- 32. प्रश्न:** 'होटलिंग का मॉडल' व्यावसायिक स्थान के संदर्भ में किसके सिद्धांत की व्याख्या करता है?
उत्तर: स्थानीय अन्योन्याश्रयता (Locational Interdependence)।
- 33. प्रश्न:** प्रसिद्ध 'फूलों की घाटी' राष्ट्रीय उद्यान किस भारतीय राज्य में स्थित है?
उत्तर: उत्तराखंड।
- 34. प्रश्न:** 'रिमलैंड सिद्धांत' (Rimland Theory) निकोलस स्पाइकमैन द्वारा किस अन्य भू-राजनीतिक सिद्धांत के प्रतिवाद के रूप में प्रस्तावित किया गया था?
उत्तर: हार्टलैंड सिद्धांत।
- 35. प्रश्न:** 'भू-राजनीति' (geopolitics) शब्द सबसे पहले 1899 में किस स्वीडिश राजनीतिक वैज्ञानिक द्वारा गढ़ा गया था?
उत्तर: रूडोल्फ केजेलन।
- 36. प्रश्न:** शहरी संरचना का 'बहु-नाभिक मॉडल' (Multiple Nuclei Model)

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

1945 में किन दो भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: चौंसी हैरिस और एडवर्ड उलमैन।

37. प्रश्न: समताप मंडल (stratosphere) और मध्यमंडल (mesosphere) के बीच की सीमा को क्या कहा जाता है?

उत्तर: स्ट्रैटोपॉज़।

38. प्रश्न: 'बिग बैंग सिद्धांत', जो ब्रह्मांड की उत्पत्ति की व्याख्या करता है, सबसे पहले किस बेल्जियम के पादरी और खगोलशास्त्री द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

उत्तर: जॉर्जेज लेमैत्रे।

39. प्रश्न: 'लोकटक झील', जो अपने तैरते द्वीपों (फुमडी) के लिए प्रसिद्ध है, किस राज्य में स्थित है?

उत्तर: मणिपुर।

40. प्रश्न: 'अमेरिकी भूगोल का पिता' किसे कहा जाता है?

उत्तर: विलियम मॉरिस डेविस।

41. प्रश्न: 'सांस्कृतिक भूदृश्य' (Cultural Landscape) की अवधारणा को बर्कले स्कूल के किस अमेरिकी भूगोलवेत्ता ने बढ़ावा दिया?

उत्तर: कार्ल ओ. सॉअर।

42. प्रश्न: सुंदरबन, दुनिया का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन, गंगा, ब्रह्मपुत्र और किस अन्य नदी द्वारा निर्मित डेल्टा में स्थित है?

उत्तर: मेघना।

43. प्रश्न: प्रवासन का 'गुरुत्व मॉडल' (Gravity Model) जॉन क्यू. स्टीवर्ट द्वारा विकसित किया गया था, जो किस वैज्ञानिक के गुरुत्वाकर्षण के नियम से सादृश्यता पर आधारित था?

उत्तर: आइज़ैक न्यूटन।

PAID STUDENTS BENEFITS

✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

Topper's Tool Kit 2025

Topper's Tool Kit 2025

🧠 Benefits & Features:

- ✓ **Core Concepts** – हर टॉपिक का सार, आसान भाषा में
- ✓ **Key Thinkers & Theories** – नाम + विचार + साल = सब याद रहेगा
- ✓ **Important Books** – वही किताबें, जो exams में आती year सहित
- ✓ **Flow Charts** – हर जटिल टॉपिक को 1 पेज में समझो
- ✓ **Mind Maps** – तेज़ रिविजन के लिए **Visual Recall Hack**

PROFESSORS ADDA

Topper बनने और “Smart Study का असली formula”

🧠 **क्यों महत्वपूर्ण है**

विषय की नींव और आधार होते हैं विचारक और **concepts**. हर बार जरूर सवाल बनते हैं **UGC NET exam** से **interview** तक

ALL INDIA RANK

📖 **Topper बनना है? Toolkit है जवाब!**

📖 **Format: Digital PDF + Optional Print**

📅 **Latest Update: May 2025 तक**

🚀 **टॉपर्स इस पर भरोसा क्यों करते हैं?**

- **No Guesswork** – सिर्फ **Exam-Oriented** कंटेंट
- **Visual Learning** = तेज़ **Revision**
- टाइम बचे, स्कोर बढ़े
- घर बैठे **Smart Preparation**



PROFESSORS
ADDA

📖 Available in Digital PDF + Print Format

📖 **Book Now | DM | WhatsApp | Download from the link**

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

📖 **Download PROFESSORS ADDA APP**



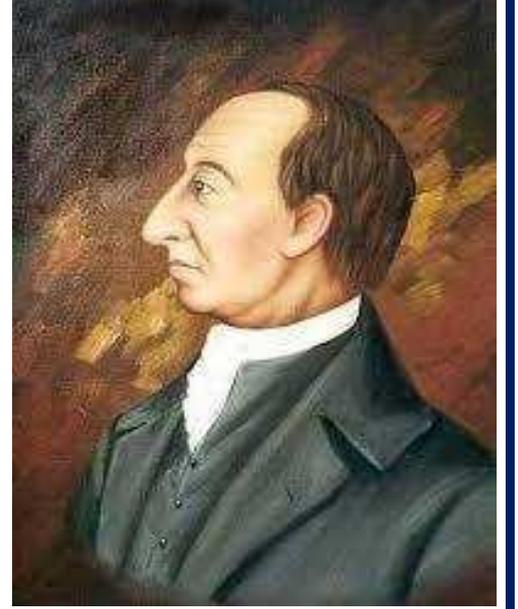
+91 7690022111 +91 9216228788

भूगोल विचारक टूल किट SAMPLE

1. जेम्स हटन (1726-1797)

परिचय

- एक स्कॉटिश भूविज्ञानी, चिकित्सक और प्रकृतिवादी, जिन्हें व्यापक रूप से "आधुनिक भूविज्ञान का जनक" माना जाता है।
- **एकरूपतावाद** के सिद्धांत की शुरुआत की, जो भूविज्ञान और भूआकृति विज्ञान का एक आधारभूत सिद्धांत है।
- उनका कार्य तत्कालीन प्रचलित **प्रलयवाद के सिद्धांत से काफी अलग था**, जो भू-आकृतियों को अचानक, अल्पकालिक, हिंसक घटनाओं के लिए जिम्मेदार मानता था।
- उन्होंने प्रस्तावित किया कि पृथ्वी पहले से मानी गई अवधि से कहीं अधिक पुरानी है, तथा उन्होंने "गहन समय" की अवधारणा प्रस्तुत की।
- उनके विचारों ने पृथ्वी की सतह को आकार देने वाली धीमी, निरंतर प्रक्रियाओं को समझने के लिए आधार तैयार किया।



प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- **एकरूपतावाद** : यह उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। सिद्धांत कहता है कि वही प्राकृतिक नियम और प्रक्रियाएँ जो अब ब्रह्मांड में काम करती हैं, वे हमेशा ब्रह्मांड में अतीत में काम करती रही हैं और हर जगह लागू होती हैं। भूविज्ञान में, इसका अर्थ है "वर्तमान अतीत की कुंजी है।"
- **रॉक चक्र**: हटन ने सबसे पहले चट्टानों की चक्रीय प्रकृति का प्रस्ताव रखा था। उन्होंने बताया कि कैसे चट्टानें जमाव से बनती हैं, फिर संकुचित होकर ऊपर उठती हैं और अंत में क्षरण के कारण प्रक्रिया फिर से शुरू होती है।
- **भूवैज्ञानिक "गहरा समय"**: भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की धीमी गति को देखकर हटन ने निष्कर्ष निकाला कि पृथ्वी अविश्वसनीय रूप से पुरानी होनी चाहिए, न कि केवल कुछ हज़ार साल, जैसा कि आम तौर पर माना जाता है। उन्होंने इस भूवैज्ञानिक इतिहास के बारे में प्रसिद्ध रूप से लिखा, "हमें शुरुआत का कोई निशान नहीं मिलता, अंत की कोई संभावना नहीं है।"
- **प्लूटोनवाद** : उन्होंने तर्क दिया कि ग्रेनाइट जैसी चट्टानें पृथ्वी के अंदर पिघली हुई चट्टान (मैग्मा) के ठंडा होने से बनी हैं, जिससे उन्होंने "नेपच्यूनवादी" सिद्धांत को चुनौती दी कि सभी चट्टानें महासागर से निकली हैं।
- **कटाव और निक्षेपण**: उन्होंने विस्तृत अवलोकन प्रदान किया कि किस प्रकार हवा और पानी भूमि का कटाव करते हैं और परिणामस्वरूप तलछट परतों में जमा होकर अंततः नई चट्टानों का निर्माण करते हैं।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- **असंगतियाँ:** उन्होंने "असंगतियों" का अध्ययन किया - भूवैज्ञानिक अभिलेखों में अंतराल - और उन्हें समय की विशाल अवधि के साक्ष्य के रूप में सही ढंग से व्याख्या किया, जिसके दौरान नई, क्षैतिज परतों के शीर्ष पर जमा होने से पहले पुरानी, झुकी हुई चट्टानें नष्ट हो गईं। स्कॉटलैंड के सिकर पॉइंट पर "हटन की असंगति" का उनका अध्ययन प्रसिद्ध है।
- **गतिशील पृथ्वी:** उन्होंने पृथ्वी को एक गतिशील, निरंतर बदलती प्रणाली के रूप में देखा, जो रचनात्मक शक्तियों (उत्थान) और विनाशकारी शक्तियों (क्षरण) के संतुलन द्वारा आकार लेती है।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **पृथ्वी का सिद्धांत; या ग्लोब पर भूमि की संरचना, विघटन और पुनर्स्थापना में देखे जा सकने वाले नियमों की जांच (1788):** एडिनबर्ग की रॉयल सोसाइटी को प्रस्तुत इस शोधपत्र में पहली बार भूविज्ञान के उनके सम्पूर्ण सिद्धांत को रेखांकित किया गया।
- **पृथ्वी का सिद्धांत, प्रमाणों और उदाहरणों के साथ (2 खंड, 1795):** यह उनकी दो खंडों वाली प्रमुख पुस्तक है, जिसमें उनके 1788 के शोधपत्र को अवलोकन संबंधी साक्ष्यों के साथ विस्तारित किया गया है। तीसरा खंड बहुत बाद में संपादित करके प्रकाशित किया गया।

तथ्य

- जेम्स हटन कोई पेशेवर भूविज्ञानी नहीं थे; वे एक मेडिकल डॉक्टर और एक बेहद सफल सज्जन किसान थे। खेती के लिए मिट्टी और ज़मीन की उनकी गहरी समझ ने उन्हें पृथ्वी के इतिहास के बारे में अभूतपूर्व अवलोकन करने के लिए प्रेरित किया।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

2. विलियम मॉरिस डेविस (1850-1934)

परिचय

- एक अमेरिकी भूगोलवेत्ता, भूविज्ञानी और मौसम विज्ञानी, जिन्हें अक्सर "अमेरिकी भूगोल का जनक" कहा जाता है।
- वह "भौगोलिक चक्र" के विकास के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं, जिसे सामान्यतः अपरदन चक्र के नाम से जाना जाता है।
- उनके मॉडल ने समय के साथ भू-आकृतियों के विकास को समझाने के लिए एक व्यापक सिद्धांत प्रदान किया।
- 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में भू-आकृति विज्ञान में डेविसियन मॉडल प्रमुख प्रतिमान था।
- उन्होंने भू-आकृति विज्ञान के लिए एक वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण की वकालत की, तथा अपने मॉडल को प्रसिद्ध वाक्यांश "परिदृश्य संरचना, प्रक्रिया और अवस्था का एक कार्य है" में संक्षेपित किया।



प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- **भौगोलिक चक्र (क्षरण चक्र):** उनका मुख्य सिद्धांत, जो भू-आकृतियों के क्रमिक विकास का वर्णन करता है। यह मानता है कि एक भू-दृश्य, क्षरण के दौरान पूर्वानुमानित चरणों की एक श्रृंखला से गुजरता है।
- **संरचना, प्रक्रिया और चरण (या समय):** उनके मॉडल में भूदृश्य विकास को नियंत्रित करने वाले तीन प्रमुख कारक। **संरचना** भूविज्ञान को संदर्भित करती है, **प्रक्रिया** भूआकृतिक कारकों (जैसे पानी) को संदर्भित करती है, और **चरण** बीता हुआ समय दर्शाता है।
- **विकास के चरण:** यह चक्र तीन मुख्य चरणों से होकर गुजरता है:
 1. **युवा: तीव्र गति से** कटाव, वी आकार की घाटियाँ और उच्च राहत द्वारा विशेषता।
 2. **परिपक्वता:** ऊर्ध्वाधर कटाव में कमी, पार्श्व कटाव में वृद्धि, अच्छी तरह से विकसित जल निकासी नेटवर्क और अधिकतम राहत द्वारा विशेषता।
 3. **वृद्धावस्था:** इसकी विशेषता बहुत ही मंद भूदृश्य, विस्तृत बाढ़ के मैदान और एक प्रायद्वीपीय मैदान का निर्माण है।
- **पेनीप्लेन :** आर्द्र जलवायु चक्र का अंतिम उत्पाद। यह एक कम ऊँचाई वाला, धीरे-धीरे लहरदार मैदान है, जो आधार स्तर के करीब कटाव के अंतिम चरण को दर्शाता है।
- **चक्र में रुकावटें:** डेविस ने माना कि चक्र **पुनर्जीवन के कारण बाधित हो सकता है**, जो टेक्टोनिक उत्थान या समुद्र स्तर में गिरावट के कारण होता है, जिससे चक्र पुनः शुरू हो जाएगा।
- **निगमनात्मक दृष्टिकोण:** उनकी पद्धति मुख्यतः निगमनात्मक थी। उन्होंने एक सैद्धांतिक मॉडल विकसित किया और फिर वास्तविक दुनिया में इसके उदाहरण खोजने की कोशिश की।
- **विभिन्न जलवायु के लिए प्रयोज्यता:** बाद में उन्होंने शुष्क जलवायु (कटाव का **शुष्क चक्र**) और हिमनद जलवायु (कटाव का **हिमनद चक्र**) के लिए मॉडल बनाने के लिए अपने "सामान्य" चक्र

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

(आर्द्र जलवायु के लिए) को अनुकूलित किया।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **भौगोलिक निबंध (1909):** यह कोई एक किताब नहीं है, बल्कि डगलस विल्सन जॉनसन द्वारा संपादित उनके सबसे महत्वपूर्ण शोधपत्रों और निबंधों का संग्रह है। इसमें उनके चक्रीय क्षरण सिद्धांत की पूरी व्याख्या है।

तथ्य

- अपने चक्रीय मॉडल के अत्यधिक प्रभाव के बावजूद, विलियम मॉरिस डेविस की बाद के भू-आकृति विज्ञानियों द्वारा "चरण" (समय) पर अत्यधिक जोर देने और उनके निगमनात्मक दृष्टिकोण के लिए आलोचना की गई, जिसके कारण कभी-कभी वे ऐसे साक्ष्यों को नजरअंदाज कर देते थे जो उनके सिद्धांत के अनुरूप नहीं थे।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

3. वाल्थर पेंक (1888-1923)

परिचय

- एक जर्मन भूविज्ञानी और भू-आकृति विज्ञानी, जो डेविसियन अपरदन चक्र के सबसे महत्वपूर्ण आलोचकों में से एक थे।
- उन्होंने टेक्टोनिक उत्थान की दर और अनाच्छादन की दर के बीच संबंध के आधार पर भू-आकृति विकास का एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तावित किया।
- उनके कार्य ने इस बात पर बल दिया कि भू-आकृति विकास एक अनुक्रमिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें उत्थान और क्षरण एक साथ होते हैं।
- पहाड़ी ढलानों के आकार (ढलान प्रोफाइल) का उपयोग किसी क्षेत्र के टेक्टोनिक इतिहास की व्याख्या करने के लिए किया जा सकता है।
- यद्यपि उनके विचार जटिल थे और कभी-कभी गलत समझे जाते थे, फिर भी भू-आकृति विज्ञान को परिदृश्यों के अधिक गतिशील दृष्टिकोण की ओर मोड़ने में वे महत्वपूर्ण थे।



प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- **"स्टेज" की अस्वीकृति:** पेनक ने डेविस की क्रमिक अवस्थाओं (युवावस्था, परिपक्वता, वृद्धावस्था) की अवधारणा को खारिज कर दिया। उन्होंने तर्क दिया कि प्रक्रिया और उत्थान निरंतर और एक साथ होते हैं।
- **उत्थान-अवक्रमण अनुपात:** उनका मॉडल उत्थान की दर (अंतर्जनित प्रक्रियाएं) और अवक्रमण की दर (बहिर्जनित प्रक्रियाएं) के बीच के अनुपात पर आधारित है।
- **विकास के तीन चरण:** उन्होंने इस अनुपात के आधार पर तीन मुख्य परिदृश्य प्रस्तावित किये:
 1. **वैक्सिंग विकास (ऑफस्टेइगेन्डे)। विकास (Entwicklung):** उत्थान दर, अपरदन दर से अधिक है, जिसके कारण उत्तल ढलान बनते हैं और उच्चावच बढ़ता है।
 2. **घटता हुआ विकास (एब्स्टेइगेन्डे)। विकास (Entwicklung):** उत्थान दर, अपरदन दर से कम है, जिसके कारण अवतल ढलान और घटती हुई उच्चावच उत्पन्न होती हैं।
 3. **समान विकास (ग्लीचफोर्मिज विकास):** उत्थान और अपरदन की दरें संतुलित होती हैं, जिससे सीधी/एकसमान ढलान और निरंतर उच्चावच प्राप्त होता है।
- **प्राइमट्रम्फ़ (प्राइमल रम्फ़):** महत्वपूर्ण उत्थान शुरू होने से पहले प्रारंभिक, कम-राहत वाली भूमि सतह। यह डेविस की प्रारंभिक सतह के समान है।
- **एंड्रम्फ़ (End Rumpf):** कटाव प्रक्रिया के अंत में निर्मित अंतिम, निम्न-राहत वाला मैदान, जो मोटे तौर पर डेविस के पेनेप्लेन के समतुल्य है।
- **ढलान प्रतिस्थापन:** उन्होंने तर्क दिया कि खड़ी ढलान वाले खंडों को धीरे-धीरे नीचे से कम कोण वाले ढलानों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है, इस प्रक्रिया को समानांतर ढलान वापसी के रूप में जाना जाता है।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

में जाना जाता है (हालांकि इस विचार को एलसी किंग द्वारा अधिक पूर्ण रूप से विकसित किया गया था)।

- **आगमनात्मक दृष्टिकोण:** डेविस की निगमनात्मक विधि के विपरीत, पेंक ने आगमनात्मक दृष्टिकोण की वकालत की, जहां भू-आकृतियों (विशेष रूप से ढलान प्रोफाइल) के अवलोकन का उपयोग उन टेक्टोनिक प्रक्रियाओं का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है, जिनसे उनका निर्माण हुआ।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **भू-आकृतियों का रूपात्मक विश्लेषण (आकृति विज्ञान विश्लेषण) (1924 में मरणोपरांत प्रकाशित):** यह उनकी प्रमुख और सबसे प्रसिद्ध रचना है। इसे उनके पिता ने उनकी असामयिक मृत्यु के बाद प्रकाशित किया था। इसकी जटिल जर्मन गद्य शैली के कारण इसे समझना मुश्किल था, और 1953 में इसके पहले अंग्रेजी अनुवाद के कारण कई गलत व्याख्याएँ हुईं।

तथ्य

- वाल्थर पेनक की 35 वर्ष की अल्पायु में ही मौखिक कैंसर के कारण मृत्यु हो गई। परिणामस्वरूप, उनके क्रांतिकारी विचारों को मरणोपरांत प्रकाशित किया गया तथा उन्हें पूर्ण रूप से विकसित नहीं किया जा सका, जिसके कारण उनके मॉडल के वास्तविक अर्थ के बारे में दशकों तक बहस और गलतफहमी बनी रही।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

4. लेस्टर चार्ल्स किंग (1907–1989)

परिचय

- एक ब्रिटिश-दक्षिण अफ्रीकी भूविज्ञानी और भूआकृति विज्ञानी।
- उन्होंने अपने करियर का अधिकांश समय अफ्रीका के परिदृश्यों का अध्ययन करने में बिताया, जिसके कारण उन्होंने परिदृश्य विकास का एक नया मॉडल प्रस्तावित किया।
- डेविसियन मॉडल के कट्टर आलोचक थे, उनका तर्क था कि यह केवल आर्द्र समशीतोष्ण जलवायु पर ही लागू होता है तथा शुष्क, अर्ध-शुष्क और सवाना क्षेत्रों के परिदृश्यों के लिए उपयुक्त नहीं है।
- उन्होंने **पेडिप्लेनेशन चक्र विकसित किया**, जो स्कार्प रिट्रीट और पेडिमेंट्स के गठन की भूमिका पर जोर देता है।
- गोंडवाना भूभागों (अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया) में भूदृश्य विकास को समझने के लिए एक सशक्त विकल्प प्रदान करता है।



प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- **पेडिप्लेनेशन चक्र:** डेविस चक्र के लिए किंग का वैकल्पिक मॉडल। यह बताता है कि कैसे शुष्क और सवाना क्षेत्रों में ढलानों के पीछे की ओर झुकने के कारण **भूदृश्य नीचे की ओर गिरते हैं।**
- **पेडिप्लेन:** किंग्स चक्र का अंतिम उत्पाद। यह एक विशाल, कम-उभरा हुआ मैदान है जो कई **पेडिमेंट्स के संलयन (जुड़ने) से बनता है।** पेनिप्लेन (डाउनवियरिंग द्वारा निर्मित) के विपरीत, पेडिप्लेन स्कार्प रिट्रीट द्वारा बनता है।
- **पेडिमेंट:** एक धीरे से ढलान वाली, चट्टानी सतह जो पीछे हटते हुए पहाड़ के अग्रभाग या ढलान के तल पर पाई जाती है। यह किंग के मॉडल में एक प्रमुख भू-आकृति है।
- **स्कार्प रिट्रीट (या बैकवियरिंग):** यह पेडिप्लेनेशन चक्र में केंद्रीय प्रक्रिया है। उन्होंने तर्क दिया कि पहाड़ी ढलान एक निरंतर कोण बनाए रखते हैं और अपने आप के समानांतर पीछे हटते हैं, जिससे उनके आधार पर एक पेडिमेंट बन जाता है।
- **इन्सलबर्ग:** जैसे-जैसे ढलानें पीछे हटती हैं और पेडिप्लेन फैलते हैं, पृथक अवशिष्ट पहाड़ियां, जिन्हें इन्सलबर्ग के रूप में जाना जाता है, मैदान पर खड़ी रह जाती हैं।
- **पेनिप्लेन की अस्वीकृति:** किंग ने तर्क दिया कि पेनिप्लेन, जैसा कि डेविस ने परिभाषित किया था, एक दुर्लभ या अस्तित्वहीन भू-आकृति थी और दुनिया में सबसे व्यापक कटाव वाले मैदान वास्तव में पेडिप्लेन थे।
- **"मानक" ढलान:** उनका मानना था कि विशिष्ट जलवायु और चट्टानी परिस्थितियों में, पहाड़ी ढलान एक "मानक" चार-तत्व प्रोफ़ाइल विकसित करते हैं: उत्तल (मोम जैसा ढलान), मुक्त

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

चेहरा (स्कार्प), स्थिर ढलान (मलबे का ढलान), और अवतल (पेडिमेंट)।

- **वैश्विक प्रयोज्यता:** उन्होंने तर्क दिया कि उनका पेडीप्लानेशन चक्र डेविस की तुलना में भूदृश्य विकास का अधिक सार्वभौमिक मॉडल था, जो जलवायु परिस्थितियों की एक व्यापक श्रृंखला पर लागू होता है।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **दक्षिण अफ्रीकी दृश्य: भू-आकृति विज्ञान की एक पाठ्यपुस्तक (1942):** इस पुस्तक में, उन्होंने पहली बार दक्षिण अफ्रीकी परिदृश्यों के बारे में अपने अवलोकनों और विचारों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया, जो उनके पेडिप्लेनेशन सिद्धांत का आधार बने।
- **पृथ्वी की आकृति विज्ञान (1962):** उनका प्रमुख कार्य, जिसमें उन्होंने अपना पूर्ण पेडिप्लेनेशन चक्र प्रस्तुत किया और डेविसियन मॉडल के प्रभुत्व को चुनौती देते हुए इसके वैश्विक महत्व के लिए तर्क दिया।

तथ्य

- लेस्टर किंग एक प्रसिद्ध जीवाश्म विज्ञानी और महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के विशेषज्ञ भी थे, जिन्होंने दक्षिणी महाद्वीपों के भूदृश्यों और भूविज्ञान के अपने व्यापक ज्ञान का उपयोग करते हुए एक पूर्व महाद्वीप, गोंडवानालैंड के विचार का समर्थन किया था।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

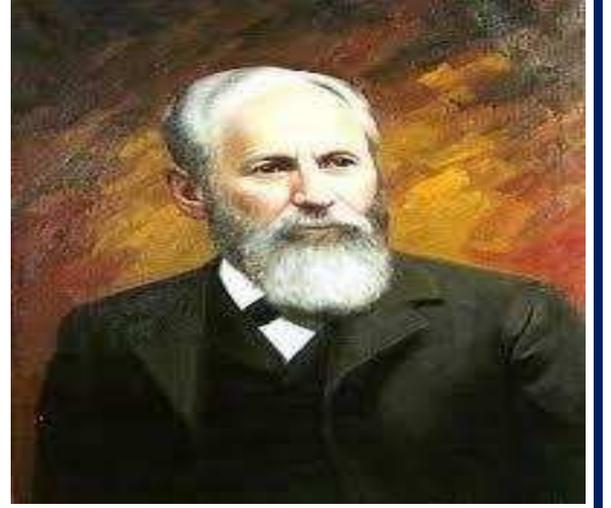
PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

5. ग्रेव कार्ल गिल्बर्ट (1843-1918)

परिचय

- एक अग्रणी अमेरिकी भूविज्ञानी जो अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के दिग्गजों में से एक थे।
- उन्हें आधुनिक प्रक्रिया-आधारित भू-आकृति विज्ञान के संस्थापकों में से एक माना जाता है।
- डेविस के विपरीत, जिन्होंने ऐतिहासिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया, गिल्बर्ट ने भू-आकृतिक प्रक्रियाओं के यांत्रिकी पर ध्यान केंद्रित किया।
- उन्होंने भू-आकृति विज्ञान को एक भौतिक विज्ञानी की तरह देखा, तथा चालक शक्तियों (जैसे गुरुत्वाकर्षण और बहता पानी) और प्रतिरोधी शक्तियों (जैसे चट्टान की ताकत) के बीच के संबंध को समझने का प्रयास किया।
- नदी प्रक्रियाओं, कटाव और भूदृश्य संतुलन पर उनका कार्य अपने समय से बहुत आगे था।



प्रमुख अवधारणाएँ / योगदान

- **प्रक्रिया भूआकृति विज्ञान:** गिल्बर्ट ने भूआकृति प्रक्रियाओं के अध्ययन में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि भू-आकृतियाँ कैसे बनती हैं, कटाव और परिवहन के यांत्रिकी को मापना और उनका विश्लेषण करना।
- **गतिशील संतुलन:** यह उनका सबसे महत्वपूर्ण वैचारिक योगदान है। उन्होंने परिदृश्यों को गतिशील संतुलन की स्थिति में देखा, जहाँ बल और प्रतिरोध संतुलित अवस्था में होते हैं। एक चर (जैसे, जलवायु) में परिवर्तन से सिस्टम एक नए संतुलन में समायोजित हो जाएगा।
- **ग्रेड/ग्रेडेड स्ट्रीम:** उन्होंने एक "ग्रेडेड" स्ट्रीम की अवधारणा पेश की, एक नदी जिसने तलछट परिवहन की अपनी क्षमता और इसे आपूर्ति की गई तलछट की मात्रा के बीच संतुलन हासिल कर लिया है, जिसके परिणामस्वरूप एक चिकनी, स्थिर अनुदैर्घ्य प्रोफाइल है।
- **मात्रात्मक विश्लेषण:** वे मात्रात्मक तरीकों का उपयोग करने वाले पहले भू-आकृति विज्ञानियों में से एक थे, जिन्होंने बहते पानी द्वारा तलछट परिवहन का अध्ययन करने के लिए फ्लूम प्रयोग आयोजित किए।
- **भू-आकृति विकास के नियम:** उनका मानना था कि भू-आकृतियाँ यादृच्छिक नहीं होतीं, बल्कि भौतिक नियमों द्वारा नियंत्रित होती हैं। उन्होंने इन "क्षरण के नियमों" और "संरचना के नियमों" की खोज करने की कोशिश की।
- **नदी प्रणालियों का अध्ययन:** हेनरी पर्वतों पर उनका मोनोग्राफ नदी के कटाव, जल निकासी बेसिन विकास और असमान गतिविधि के सिद्धांत (एक प्रणाली के कुछ हिस्से दूसरों की तुलना में तेजी से काम करते हैं) का एक उत्कृष्ट अध्ययन है।
- **लैकोलिथ्स:** इसी मोनोग्राफ में, उन्होंने सही ढंग से लैकोलिथ्स की पहचान की और उनका नाम

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

दिया, जो मशरूम के आकार के आग्नेय घुसपैठ हैं जो ऊपरी तलछटी परतों को ढंकते हैं।

- **यांत्रिकी पर ध्यान दें, इतिहास पर नहीं:** उनका दृष्टिकोण डेविस के ऐतिहासिक/चक्रीय मॉडल से मौलिक रूप से भिन्न था। गिल्बर्ट की रुचि भू-आकृतियों को नियंत्रित करने वाले कालातीत भौतिक सिद्धांतों में थी, न कि उन्हें विकास के अनुक्रमिक चरण में रखने में।

प्रमुख प्रकाशन पुस्तकें

- **हेनरी पर्वतों के भूविज्ञान पर रिपोर्ट (1877):** यह उनकी सबसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली रचना है। यह भूवैज्ञानिक अवलोकन और तर्क की एक उत्कृष्ट कृति है, जहाँ उन्होंने नदी के कटाव और गतिशील संतुलन के अपने मौलिक सिद्धांतों को प्रस्तुत किया है।
- **बोनविले झील (1890):** यूटा में प्राचीन वर्षा झील पर एक स्मारकीय मोनोग्राफ, जो झील के किनारे की विशेषताओं, डेल्टाओं और आइसोस्टेटिक रिबाउंड (बर्फ की चादरों के भारी वजन को उठाने के बाद भूमि द्रव्यमान का उदय) का एक उत्कृष्ट अध्ययन है।

तथ्य

- जी.के. गिल्बर्ट पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सही रूप से यह पहचाना कि चंद्रमा पर गड्ढे ज्वालामुखी विस्फोट के कारण नहीं बल्कि प्रभावों के कारण बने थे, यह एक ऐसा विचार था जो अपने समय से आधी सदी से भी अधिक आगे था और अपोलो युग तक व्यापक रूप से स्वीकार नहीं किया गया था।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

1. जेम्स हटन (1726-1797)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	स्कॉटिश भूविज्ञानी; आधुनिक भूविज्ञान के जनक माने जाते हैं।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- एकरूपतावाद - गहन समय - पृथ्वी एक गतिशील प्रणाली के रूप में
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष सहित)	- पृथ्वी का सिद्धांत (1795)
उल्लेखनीय तथ्य	- प्रस्तावित किया कि पृथ्वी की प्रक्रियाएँ धीमी और निरंतर हैं - चार्ल्स लेयेल से प्रभावित

2. विलियम मॉरिस डेविस (1850-1934)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	अमेरिकी भूगोलवेत्ता, भूविज्ञानी और मौसम विज्ञानी; 'अमेरिकी भूगोल के जनक' के रूप में जाने जाते हैं।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- भौगोलिक चक्र (क्षरण चक्र) - भू-आकृति विकास का डेविसियन मॉडल
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष सहित)	- अनेक पत्रिका लेख और व्याख्यान (कोई एकल परिभाषित पुस्तक नहीं)
उल्लेखनीय तथ्य	- भू-आकृतियों का व्यवस्थित अध्ययन शुरू किया - भू-आकृति विज्ञानियों की कई पीढ़ियों को प्रभावित किया

3. वाल्थर पेंक (1888-1923)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	जर्मन भूविज्ञानी और भूआकृति विज्ञानी; डेविसियन चक्र के आलोचक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- रूपात्मक प्रणाली - एक साथ उत्थान और अनाच्छादन - अंतर्जात प्रक्रियाएँ
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष सहित)	- भू-आकृतियों का रूपात्मक विश्लेषण (मरणोपरांत प्रकाशित)
उल्लेखनीय तथ्य	- भूदृश्य विकास का प्रस्तावित वैकल्पिक मॉडल - संरचना और उत्थान पर जोर दिया गया

4. लेस्टर चार्ल्स किंग (1907-1989)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	दक्षिण अफ्रीकी भू-आकृति विज्ञानी; भूदृश्य विकास के आधुनिक सिद्धांत।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- पेडिप्लेनेशन सिद्धांत - स्कार्प रिट्रीट और बैकवियरिंग - एचप्लेनेशन
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष सहित)	- दक्षिण अफ्रीकी दृश्यावली (1942) - लैंडस्केप इवोल्यूशन के सिद्धांत (1953)
उल्लेखनीय तथ्य	- ढलान विकास पर परिष्कृत विचार - डेविस और पेनक दोनों की आलोचना की

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

5. ग्रोव कार्ल गिल्बर्ट (1843-1918)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	अमेरिकी भूविज्ञानी और भूआकृति विज्ञान एवं जल विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- ग्रेडेड रिवर थ्योरी - डायनेमिक इक्विलिब्रियम - लेक बोनविले अध्ययन
प्रमुख पुस्तकें (वर्ष सहित)	- हेनरी पर्वतों के भूविज्ञान पर रिपोर्ट (1877) - बोनविले झील (1890)
उल्लेखनीय तथ्य	- भू-आकृतियों में संतुलन की अवधारणा प्रस्तुत की - प्रक्रिया भू-आकृति विज्ञान में प्रारंभिक योगदानकर्ता

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

भूगोल महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं तालिका

1. **भूगोल की प्रकृति** (1939) - **रिचर्ड हार्टशोर्न** : भौगोलिक विचार में एक आधारभूत पाठ जिसने भूगोल की अवधारणा को एक वर्णिक विज्ञान (क्षेत्रीय विभेदन) के रूप में प्रस्तुत किया।
2. **एक्सप्लेन इन जियोग्राफी** (1969) - **डेविड हार्वे** : एक ऐतिहासिक पुस्तक जिसने भूगोल के लिए अधिक वैज्ञानिक, मात्रात्मक और सैद्धांतिक दृष्टिकोण की वकालत की, जिसने मात्रात्मक क्रांति में एक महत्वपूर्ण मोड़ को चिह्नित किया।
3. **भौतिक भूगोल - सविन्द्र सिंह** : भू-आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान और समुद्र विज्ञान सहित भौतिक भूगोल के सभी पहलुओं के लिए भारत में एक व्यापक और मानक पाठ्यपुस्तक।
4. **भू-आकृति विज्ञान** - डब्ल्यू.डी . **थॉर्नबरी** : एक क्लासिक ग्रन्थ जो भू-आकृतियों के विकास को नियंत्रित करने वाली मौलिक अवधारणाओं और सिद्धांतों को रेखांकित करता है।
5. **अपरदन चक्र** (पत्र, 1899) - **डब्ल्यू.एम. डेविस** : एक मौलिक सिद्धांत जिसने युवावस्था, परिपक्वता और वृद्धावस्था के चरणों के माध्यम से भू-आकृति विकास का एक अनुक्रमिक मॉडल प्रस्तावित किया।
6. **कोस्मोस** (1845) - **अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट** : एक बहु-खंडीय कार्य जिसने वैज्ञानिक ज्ञान की विविध शाखाओं को एकीकृत करने का प्रयास किया, जिसे आधुनिक भूगोल का आधारभूत कार्य माना जाता है।
7. **एर्डकुंडे** (1817) - **कार्ल रिटर** : तुलनात्मक क्षेत्रीय भूगोल में एक अग्रणी कार्य जिसने मानव इतिहास पर भौतिक पर्यावरण के प्रभाव पर जोर दिया।
8. **एंथ्रोपोजियोग्राफी** (1882) - **फ्रेडरिक रेटज़ेल** : एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ जिसने राजनीतिक भूगोल की नींव रखी और लेबेन्स्राम (रहने की जगह) जैसी अवधारणाओं को प्रस्तुत किया, तथा पर्यावरणीय नियतिवाद को बढ़ावा दिया।
9. **जलवायु का परिचय** - **जीटी ट्रेवर्थ** : जलवायु विज्ञान पर एक क्लासिक और मानक पाठ्यपुस्तक।
10. **जलवायु वर्गीकरण प्रणाली** - **व्लादिमीर कोपेन** : तापमान और वर्षा के आधार पर विश्व की जलवायु को वर्गीकृत करने के लिए सबसे व्यापक रूप से प्रयुक्त प्रणाली।
11. **केंद्रीय स्थान सिद्धांत** (पुस्तक, 1933) - **वाल्टर क्रिस्टालर** : शहरी भूगोल में एक आधारभूत सिद्धांत जो आवासीय प्रणाली में मानव बस्तियों की संख्या, आकार और स्थान की व्याख्या करता है।
12. **पृथक राज्य** (1826) - **जोहान हेनरिक वॉन थुनेन** : एक क्लासिक कार्य जिसने कृषि भूमि उपयोग का पहला मॉडल विकसित किया, जिसमें दिखाया गया कि कैसे विभिन्न कृषि गतिविधियां एक बाजार शहर के चारों ओर संकेंद्रित वलयों में व्यवस्थित होंगी।
13. **औद्योगिक स्थान का सिद्धांत** (पुस्तक, 1909) - **अल्फ्रेड वेबर** : आर्थिक भूगोल में एक आधारभूत सिद्धांत जो परिवहन और श्रम लागत को न्यूनतम करने के आधार पर औद्योगिक फर्मों के स्थान की व्याख्या करता है।
14. **हार्टलैंड सिद्धांत** (लेख, 1904) - **हेलफोर्ड मैकिंडर** : भू-राजनीति में एक प्रमुख सिद्धांत जिसने सुझाव दिया कि पूर्वी यूरोप ("हार्टलैंड") पर नियंत्रण विश्व को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण था।
15. **रिमलैंड सिद्धांत** (पुस्तक, 1944) - **निकोलस स्पाइकमैन** : हार्टलैंड का एक प्रति-सिद्धांत, जिसमें तर्क दिया गया कि तटीय क्षेत्रों ("रिमलैंड") पर नियंत्रण वैश्विक शक्ति की कुंजी थी।
16. **भूगोल में मॉडल** (1967) - रिचर्ड चोर्ले और पीटर **हैगेट द्वारा संपादित** : एक प्रभावशाली संग्रह जिसने भूगोल में मॉडल और मात्रात्मक तरीकों के उपयोग का समर्थन किया।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

17. **भारत: एक व्यापक भूगोल - डी.आर. खुल्लर** : भारत के भूगोल पर एक विस्तृत और संपूर्ण पाठ्यपुस्तक, जिसमें सभी भौतिक, आर्थिक और सामाजिक पहलुओं को शामिल किया गया है।
18. **भारत का भूगोल - माजिद हुसैन**: भारत के भूगोल के लिए एक और लोकप्रिय और मानक पाठ्यपुस्तक।
19. **मानवतावादी भूगोल - यी-फू तुआन** : मानवतावादी भूगोल के एक प्रमुख प्रस्तावक, तुआन की कृतियाँ (जैसे टोपोफिलिया) मानव अनुभव, धारणा और स्थान के प्रति लगाव पर जोर देती हैं।
20. **अस्थिर पृथ्वी - जेए स्टीयर्स** : भू-आकृति विज्ञान पर एक क्लासिक पाठ, विशेष रूप से तटीय भू-आकृति विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करता हुआ।
21. **अस्थिर पृथ्वी: भू-आकृति विज्ञान का परिचय - ए.एन. स्ट्रालर** : एक लोकप्रिय पाठ्यपुस्तक जो भू-आकृतियों के अध्ययन में मात्रात्मक विधियों को एकीकृत करती है।
22. **भू-आकृति विज्ञान के सिद्धांत - एलसी किंग** : भू-आकृति विकास के लिए पेडिप्लेनेशन चक्र का प्रस्ताव रखा, जो डेविसियन मॉडल का एक विकल्प था, तथा शुष्क और सवाना परिदृश्यों के लिए उपयुक्त था।
23. **भू-आकृतियों का रूपात्मक विश्लेषण - वाल्थर पेंक** : डेविसियन चक्र की एक अन्य आलोचना , पेंक के मॉडल ने उत्थान और अनाच्छादन की दर के बीच संबंध पर जोर दिया।
24. **कार्टोग्राफी के तत्व - आर्थर एच. रॉबिन्सन और सेल, मॉरिसन** : मानचित्र-निर्माण के सिद्धांतों और तकनीकों पर एक मानक पाठ्यपुस्तक।
25. **जीआईएस और विज्ञान - पॉल ए. लॉन्गले** , एट अल.: भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) के सिद्धांतों, तकनीकों और अनुप्रयोगों को समझाने वाला एक प्रमुख पाठ।
26. **शहरी भूगोल: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य - माइकल पैसिओन** : शहरी भूगोल में प्रमुख सिद्धांतों और प्रवृत्तियों को कवर करने वाली एक व्यापक पाठ्यपुस्तक।
27. **आर्थिक गतिविधियों के स्थान का सिद्धांत - अगस्त लोश** : सभी आर्थिक गतिविधियों के लिए स्थान का एक सामान्य सिद्धांत विकसित करने के लिए क्रिस्टालर के कार्य का विस्तार किया गया, जिससे आर्थिक क्षेत्रों का परिदृश्य तैयार हुआ।
28. **प्रवास के नियम (पत्र, 1885) - ई.जी. रेवेनस्टीन** : आधारभूत सिद्धांतों का एक समूह जो मानव प्रवास के पैटर्न का वर्णन करता है।
29. **गतिशीलता संक्रमण मॉडल - विल्बर ज़ेलिंस्की** : एक मॉडल जो समाज के आधुनिकीकरण और विकास के दौरान होने वाले प्रवासन पैटर्न में परिवर्तन का वर्णन करता है।
30. **साइलेंट स्प्रिंग (1962) - रेचल कार्सन** : पर्यावरण विज्ञान और भूगोल में एक ऐतिहासिक पुस्तक जिसमें कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग से होने वाले प्रतिकूल पर्यावरणीय प्रभावों का दस्तावेजीकरण किया गया है।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

तालिका 1: भू-आकृति विकास के सिद्धांत

सिद्धांत / मॉडल	समर्थक	मूल विचार	प्रमुख चरण / अवधारणाएँ
कटाव का भौगोलिक चक्र	डब्ल्यूएम डेविस	भू-आकृतियाँ क्रमिक विकास से गुजरती हैं, जो उत्थान की रुकावट से प्रेरित होती हैं। "भू-आकृतियाँ संरचना, प्रक्रिया और चरण का एक कार्य है।"	युवावस्था, परिपक्वता, वृद्धावस्था। पेनेप्लेन (अंतिम उत्पाद)।
भू-आकृति विकास का मॉडल	वालथर पेनक	भू-आकृतियों (ढलानों) का आकार उत्थान की दर और कटाव की दर के बीच संबंध का परिणाम है।	औफस्टेइगेंडे (तेजी से), ग्लेइचफोर्मिज (वर्दी), और एब्स्टेइगेंडे (धीमे) विकास। प्राइमरम्पफ, एंड्रम्पफ।
पेडीप्लानेशन चक्र	एल.सी. किंग	शुष्क और सवाना क्षेत्रों पर लागू होने वाला अपरदन का एक चक्र, जहां पहाड़ी ढलानें स्वयं के समानांतर पीछे हटती हैं, जिससे पेडिमेंट्स का निर्माण होता है।	पेडीप्लेन (अंतिम उत्पाद), इन्सेलबर्ग्स, स्कार्प रिट्रीट।
गतिशील संतुलन सिद्धांत	जेटी हैक	भू-आकृतियाँ गतिशील संतुलन की स्थिति में होती हैं, जहाँ रूप और प्रक्रिया संतुलन में होते हैं। क्रमिक चरणों के विचार को अस्वीकार करता है।	समय-स्वतंत्र, खुली प्रणाली, रूप और प्रक्रिया के बीच संतुलन।

तालिका 2: पृथ्वी का आंतरिक भाग

परत	संरचना (प्रमुख खनिज)	राज्य	मुख्य विशेषता / असंततता
क्रस्ट	महाद्वीपीय: सियाल (सिलिका, एल्युमिनियम)। महासागरीय: सिमा (सिलिका, मैग्नीशियम)।	ठोस	महासागरों के नीचे पतली, महाद्वीपों के नीचे मोटी। कॉनराड असंततता ऊपरी और निचली परत को अलग करती है।
आच्छादन	अल्ट्रामैफिक चट्टान (लोहा, मैग्नीशियम सिलिकेट)।	ठोस लेकिन प्लास्टिक (ऊपरी भाग में एस्थेनोस्फीयर)।	आयतन के हिसाब से सबसे बड़ी परत। मैग्मा का स्रोत। मोहोरोविसी ६ विच्छेदन (मोहो) क्रस्ट और मेंटल को अलग करता है। रेपेटी विच्छेदन ऊपरी और निचले मेंटल को अलग करता है।
बाहरी परत	लोहा, निकल (नाइफ)।	तरल	पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

भीतरी कोर	लोहा, निकल (नाइफ)।	ठोस	अत्यधिक दबाव के कारण ठोस गुटेनबर्ग असंतत्यता मेंटल और कोर को अलग करती है। लेहमैन असंतत्यता बाहरी और आंतरिक कोर को अलग करती है।
-----------	---------------------	-----	--

तालिका 3: प्लेट टेक्टोनिक्स – सीमाएं और विशेषताएं

सीमा प्रकार	प्लेट की गति	संबद्ध भू-आकृतियाँ / घटनाएँ	उदाहरण
भिन्न (रचनात्मक)	प्लेटें अलग हो जाती हैं (विचलित हो जाती हैं)।	मध्य महासागरीय कटक, दरार घाटियाँ, ज्वालामुखी, भूकंप।	मध्य अटलांटिक रिज, पूर्वी अफ्रीकी रिफ्ट घाटी।
अभिसारी (विनाशकारी)	प्लेटें एक दूसरे की ओर बढ़ती हैं (अभिसरित होती हैं)।	महासागरीय-महाद्वीपीय: खाइयाँ, ज्वालामुखीय पर्वत चाप। महासागरीय-महाद्वीपीय: खाइयाँ, ज्वालामुखीय द्वीप चाप। महाद्वीपीय-महाद्वीपीय: वलित पर्वत।	एण्डीज पर्वत, मारियाना ट्रेंच, हिमालय।
रूपांतरण (रूढ़िवादी)	प्लेटें एक दूसरे के ऊपर से क्षैतिज रूप से फिसलती हैं।	भ्रंश रेखाएं, भूकंप। भूपर्पटी का कोई निर्माण या विनाश नहीं।	सैन एंड्रियास फॉल्ट (कैलिफोर्निया)।

तालिका 4: प्रमुख बहिर्जात प्रक्रियाएं और परिणामी भू-आकृतियाँ

प्रक्रिया / एजेंट	अपरदनकारी भू-आकृतियाँ	निक्षेपण भू-आकृतियाँ
नदी (नदी)	वी आकार की घाटियाँ, घाटियाँ, घाटियाँ, गड्ढे, झरने, नदी की धारें।	जलोढ़ पंखे, बाढ़ के मैदान, तटबंध, डेल्टा, विसर्प, ऑक्सबो झीलें।
बहुत ठंडा	सर्क, एरेट, हॉर्न, यू-आकार की घाटियाँ, लटकती घाटियाँ, फ्योडर्स।	हिमोढ़ (पार्श्वीय, मध्यवर्ती, टर्मिनल), एस्कर्स, ड्रमलिंग्स, आउटवाश मैदान।
एओलियन (हवा)	डिफ्लेशन हॉलोज़, मशरूम रॉक्स, यार्डेंग्स, जुगेन्स, इनसेलबर्ग्स।	रेत के टीले (बार्चन्स, सेफ्स), लोएस मैदान।
कार्स्ट (भूजल)	सिंकहोल्स, स्वैलो होल, गुफाएं, कंदराएं, पोलजे, लैपिस।	स्टैलेक्टाइट्स, स्टैलेग्माइट्स, स्तंभ, ड्रिपस्टोन।
तटीय (लहरें)	चट्टानें, लहरों से कटे प्लेटफार्म, समुद्री गुफाएं, समुद्री मेहराब, डेर,	समुद्र तट, बार, स्पिट्स, टोम्बोलोस, लैगून।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

स्टंप।

तालिका 5: आइसोस्टैसी के सिद्धांत

सिद्धांत / मॉडल	समर्थक	वर्ष (लगभग)	मूल अवधारणा
एरी का मॉडल	सर जॉर्ज एरी	1855	"अलग-अलग मोटाई के साथ एकसमान घनत्व"। अलग-अलग क्रस्टल ब्लॉकों का घनत्व एक जैसा होता है लेकिन मोटाई अलग-अलग होती है, जैसे पानी में तैरते हिमखंड। पहाड़ों की जड़ें उनकी ऊंचाई को सहारा देने के लिए गहरी होती हैं।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें **7690022111 / 9216228788**

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

भूगोल मॉडल पेपर (यूजीसी नेट पैटर्न)

1. सूची I (भौगोलिक अवधारणा/सिद्धांत) को सूची II (संबद्ध विद्वान) के साथ सुमेलित करें।

सूची I (अवधारणा/सिद्धांत)	सूची II (विद्वान)
ए. हार्टलैंड सिद्धांत	आईडीएम स्मिथ
बी. लाभप्रदता का स्थानिक मार्जिन	II. एच.जे. मैकिंडर
सी. सांस्कृतिक परिदृश्य	III. डब्लू. क्रिस्टालर
डी. केंद्रीय स्थान सिद्धांत	IV. कार्ल ओ. सॉयर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

1. ए-II, बीआई, सी-IV, डी-III
2. ए-II, बी-IV, सीआई, डी-III
3. एआई, बी-II, सी-III, डी-IV
4. ए-III, बीआई, सी-IV, डी-II

उत्तर: 1. A-II, BI, C-IV, D-III

स्पष्टीकरण:

- **हार्टलैंड सिद्धांत:** हेलफोर्ड जे. मैकिंडर द्वारा प्रतिपादित , यूरेशियन भूभाग के सामरिक महत्व पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **लाभप्रदता के स्थानिक मार्जिन:** डीएम स्मिथ द्वारा शास्त्रीय स्थान सिद्धांतों के विस्तार/आलोचना के रूप में विकसित, उन क्षेत्रों पर विचार करते हुए जहां फर्म लाभप्रद रूप से काम कर सकती हैं।
- **सांस्कृतिक परिदृश्य:** सांस्कृतिक भूगोल में एक केंद्रीय अवधारणा , जो कार्ल ओ. सॉयर से दृढ़तापूर्वक जुड़ी हुई है, जो प्राकृतिक पर्यावरण पर मानवीय छाप पर जोर देती है।
- **केंद्रीय स्थान सिद्धांत:** वाल्टर क्रिस्टालर द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के प्रावधान के आधार पर बस्तियों के आकार, संख्या और वितरण की व्याख्या करने के लिए तैयार किया गया।
- ये जोड़ियां भौगोलिक विचार के अंतर्गत मौलिक अवधारणाओं और उनके प्रवर्तकों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

2. अभिकथन (A): महासागरीय जल का घनत्व सामान्यतः ध्रुवीय क्षेत्रों से भूमध्य रेखा की ओर घटता जाता है।
कारण (R): भूमध्य रेखा के पास उच्च तापमान और संभावित रूप से उच्च वर्षा/मीठे पानी का इनपुट ठंडे, नमकीन ध्रुवीय जल की तुलना में सतही जल के घनत्व को कम करता है।

उपरोक्त कथनों के आधार पर, सबसे उपयुक्त उत्तर चुनिए।

विकल्प :

1. (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
2. (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
3. (A) सही है लेकिन (R) सही नहीं है।
4. (A) सही नहीं है लेकिन (R) सही है।

उत्तर: 1. (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

स्पष्टीकरण:

- **अभिकथन (A):** महासागरीय जल का घनत्व मुख्य रूप से तापमान और लवणता से प्रभावित होता है। ठंडा पानी सघन होता है, और खारा पानी सघन होता है। ध्रुवीय जल आम तौर पर ठंडा होता है और नमकीन भी हो सकता है (नमक को छोड़कर बर्फ के निर्माण के कारण), जिससे वे गर्म भूमध्यरेखीय जल की तुलना में सघन हो जाते हैं।
- **कारण (R):** भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में उच्च सौर विकिरण का अनुभव होता है, जिससे सतह का पानी गर्म होता है (कम घनत्व)। उन्हें अक्सर महत्वपूर्ण वर्षा और नदी का निर्वहन भी मिलता है, जिससे मीठा पानी मिलता है जो लवणता और घनत्व को और कम करता है।
- (R) में उल्लिखित कारक सीधे तौर पर (A) में वर्णित घनत्व पैटर्न का कारण बनते हैं।
- इसलिए, दोनों कथन सही हैं, और कारण कथन को स्पष्ट करता है।

3. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भूगोल में मात्रात्मक क्रांति की विशेषताओं या परिणामों का सटीक वर्णन करता है?

- A. इसमें सांख्यिकीय विधियों और गणितीय मॉडलों के उपयोग पर जोर दिया गया।
- B. इसका उद्देश्य भूगोल को अधिक वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ बनाना था।
- C. इससे क्षेत्रीय भूगोल दृष्टिकोण को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया गया।
- D. प्रमुख समर्थकों में शेफ़र, हैगेट, चोर्ले और बंगे शामिल थे।
- ई. यह मुख्य रूप से अद्वितीय स्थानों के गुणात्मक वर्णन पर केंद्रित था।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

1. केवल A, B, और D
2. केवल A, C, और E
3. केवल B, C, और D
4. केवल A, B, और E

उत्तर: 1. केवल A, B, और D

स्पष्टीकरण:

- उत्तर (सही): मात्रात्मक क्रांति का मूल स्थानिक पैटर्न का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय तकनीकों और गणितीय मॉडलिंग को अपनाना था।
- बी (सही): एक प्रमुख लक्ष्य भूगोल को अधिक कठोर, वैज्ञानिक अनुशासन की ओर ले जाना था, जिसमें मुहाबरेदार वर्णन की अपेक्षा वस्तुनिष्ठता और कानून की खोज पर जोर दिया गया।
- C (गलत): यद्यपि इसने पारंपरिक क्षेत्रीय भूगोल के प्रभुत्व को चुनौती दी, परन्तु इससे उसका पूर्णतः परित्याग नहीं हुआ; क्षेत्रीय अध्ययनों ने इसे अपनाया और जारी रखा।
- डी (सही): फ्रेड के. शेफर की अपवादवाद की आलोचना ने आधार तैयार किया, जबकि पीटर हैगेट, रिचर्ड चोर्ले और विलियम बंगे मात्रात्मक तरीकों को लागू करने वाले प्रमुख व्यक्ति थे।
- E (गलत): गुणात्मक विवरण से ध्यान हटाकर सामान्य स्थानिक नियमों और पैटर्न की पहचान करने की ओर केन्द्रित हो गया।

4. वॉन थुनेन के कृषि भूमि उपयोग मॉडल के अनुसार, समदैशिक मैदान को मानते हुए, कौन सी गतिविधि आम तौर पर केंद्रीय बाजार के सबसे करीब स्थित होगी?

1. पशुपालन
2. अनाज की खेती (तीन-क्षेत्र प्रणाली)
3. जलाऊ लकड़ी और इमारती लकड़ी का उत्पादन
4. बाज़ार बागवानी और डेयरी फार्मिंग

उत्तर: 4. बाज़ार बागवानी और डेयरी फार्मिंग

स्पष्टीकरण:

- वॉन थुनेन का मॉडल भूमि किराया, परिवहन लागत और उत्पाद की खराब होने की क्षमता के आधार पर एक केंद्रीय बाजार के चारों ओर संकेंद्रित वलयों में कृषि गतिविधियों की व्यवस्था करता है।
- बाज़ार बागवानी और डेयरी फार्मिंग: ये खराब होने वाले और भारी सामान (जैसे दूध, फल, सब्जियाँ) का उत्पादन करते हैं, जिन्हें लंबी दूरी तक ले जाना महंगा होता है और उन्हें बाज़ार तक जल्दी पहुँचाना पड़ता है। वे उच्च कीमतों पर बिक सकते हैं, जो शहर के पास उच्च भूमि किराए को उचित ठहराता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- जलाऊ लकड़ी और इमारती लकड़ी: भारी और परिवहन के लिए महंगी, दूसरे रिंग में स्थित।
- अनाज की खेती: डेयरी/सब्जी की तुलना में कम शीघ्र खराब होने वाली तथा प्रति इकाई भार के हिसाब से परिवहन में कम महंगी होती है, क्योंकि यह खेती दूर स्थित होती है।
- पशुपालन: इसके लिए व्यापक भूमि की आवश्यकता होती है और यह सबसे कम खराब होता है, यह बाजार से सबसे दूर स्थित होता है, जहां भूमि का किराया सबसे कम होता है।

5. अभिकथन (A): 'हार्टलैंड' सिद्धांत बताता है कि वैश्विक भूभाग पर नियंत्रण के लिए पूर्वी यूरोप पर नियंत्रण महत्वपूर्ण है।

कारण (R): मैकिंडर ने यूरेशियाई भूभाग को, विशेष रूप से इसके दुर्गम 'पिवट क्षेत्र' या 'हार्टलैंड' को, इसकी संसाधन क्षमता और समुद्री शक्ति से सुरक्षा के कारण विश्व प्रभुत्व के लिए प्रमुख भौगोलिक आधार के रूप में देखा।

उपरोक्त कथनों के आधार पर, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनिए:

1. (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
2. (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
3. (A) सही है लेकिन (R) सही नहीं है।
4. (A) सही नहीं है लेकिन (R) सही है।

उत्तर: 1. (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

स्पष्टीकरण:

- अभिकथन (A): मैकिंडर की प्रसिद्ध उक्ति कहती है: "जो पूर्वी यूरोप पर शासन करता है, वह हृदयस्थल पर शासन करता है; जो हृदयस्थल पर शासन करता है, वह विश्व-द्वीप पर शासन करता है; जो विश्व-द्वीप पर शासन करता है, वह विश्व पर शासन करता है।" यह हृदयस्थल के प्रवेशद्वार के रूप में पूर्वी यूरोप के सामरिक महत्व को उजागर करता है।
- कारण (R): सिद्धांत का मुख्य विचार विशाल, संसाधन-समृद्ध यूरेशियाई आंतरिक क्षेत्र (हार्टलैंड) का रणनीतिक महत्व है, जो समुद्री शक्ति के हमले से काफी हद तक प्रतिरक्षित था, जिससे यह एक प्रमुख स्थलीय शक्ति के लिए संभावित आधार बन गया।
- हार्टलैंड का रणनीतिक महत्व, जैसा कि (आर) में बताया गया है, इस बात का आधार है कि इसके प्रवेशद्वार (पूर्वी यूरोप) को नियंत्रित करना, जैसा कि (ए) में बताया गया है, महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है।
- इसलिए, दोनों कथन सही हैं और (R) (A) के लिए अंतर्निहित तर्क प्रदान करता है।

6. एडवर्ड उलमैन के अनुसार निम्नलिखित में से कौन से स्थानिक अंतःक्रिया को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व माने

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

जाते हैं ?

- A. संपूरकता
- बी. हस्तांतरणीयता
- सी. हस्तक्षेप का अवसर
- डी. संकुलन अर्थव्यवस्थाएं
- ई. डीग्लोमरेशन प्रभाव

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

1. केवल A, B, और C
2. केवल A, C, और D
3. केवल B, D, और E
4. केवल A, B, और E

उत्तर: 1. केवल A, B, और C

स्पष्टीकरण:

- एडवर्ड उलमैन ने स्थानिक अंतःक्रिया के लिए तीन आवश्यक आधारों की पहचान की:
- **क. संपूरकता** : एक स्थान पर आपूर्ति दूसरे स्थान पर मांग से मेल खानी चाहिए।
- **बी. हस्तांतरणीयता**: वह आसानी और लागत जिसके साथ किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। बातचीत केवल तभी होती है जब आवागमन की लागत निषेधात्मक न हो।
- **C. मध्यवर्ती अवसर**: आपूर्ति या मांग के निकटवर्ती, वैकल्पिक स्रोत की उपस्थिति अधिक दूरस्थ स्थानों के बीच परस्पर क्रिया को कम कर देती है।
- **डी एंड ई (गलत)**: एग्लोमरेशन और डीग्लोमरेशन अर्थव्यवस्थाएं स्थानिक अंतःक्रिया के लिए उलमैन की प्राथमिक स्थितियों की तुलना में औद्योगिक स्थान कारकों (वेबर, हूवर) से अधिक संबंधित हैं।

7. भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए मौलिक ' एकरूपतावाद का सिद्धांत ' सबसे प्रसिद्ध रूप से किस विद्वान से जुड़ा है?

1. डब्ल्यूएम डेविस
2. जेम्स हटन
3. चार्ल्स लेयेल
4. जीके गिल्बर्ट

उत्तर: 2. जेम्स हटन (अक्सर चार्ल्स लेल द्वारा लोकप्रिय/विस्तारित)

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

स्पष्टीकरण:

- **जेम्स हटन (सही):** अपने "थ्योरी ऑफ़ द अर्थ" (1788/1795) में हटन ने प्रस्तावित किया कि आज पृथ्वी को आकार देने वाली भूवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ वही हैं जो अतीत में संचालित होती थीं ("वर्तमान अतीत की कुंजी है")। यह एकरूपतावाद का सार है।
- **चार्ल्स लेल:** हटन के विचारों को उनके "भूविज्ञान के सिद्धांतों" में लोकप्रिय और परिष्कृत किया, जिससे एकरूपतावाद व्यापक रूप से स्वीकार्य हो गया। महत्वपूर्ण होने के बावजूद हटन ने मूल अवधारणा की शुरुआत की।
- **डब्ल्यूएम डेविस:** "भौगोलिक चक्र" या क्षरण चक्र के लिए जाने जाते हैं, जो एकरूपतावादी सिद्धांतों पर आधारित है लेकिन एक अलग मॉडल है।
- **जी.के. गिल्बर्ट:** भू-आकृति विज्ञान, विशेष रूप से नदी प्रक्रियाओं और लैकोलिथ निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया, तथा एकरूपतावादी विचारों को लागू किया।

8. सूची I (जलवायु का प्रकार - कोपेन प्रतीक) को सूची II (विशिष्ट वनस्पति/क्षेत्र) के साथ सुमेलित करें।

सूची I (जलवायु प्रकार)	सूची II (विशेषता/क्षेत्र)
ए.एफ	I. भूमध्यसागरीय स्क्रब (चैपरल)
बी. सीएसए	II. उष्णकटिबंधीय वर्षावन
सी. डीएफसी	III. टुंड्रा
डी. ई.टी.	IV. बोरियल वन (टैगा)

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

1. ए-II, बीआई, सी-IV, डी-III
2. ए-II, बी-IV, सीआई, डी-III
3. एआई, बी-II, सी-III, डी-IV
4. ए-III, बीआई, सी-IV, डी-II

उत्तर: 1. A-II, BI, C-IV, D-III

स्पष्टीकरण:

- **अफ (उष्णकटिबंधीय वर्षावन जलवायु):** वर्ष भर उच्च तापमान और वर्षा की विशेषता, जो घने उष्णकटिबंधीय वर्षावन वनस्पति को बढ़ावा देती है।
- **सीएसए (भूमध्यसागरीय जलवायु - गर्म ग्रीष्मकाल):** गर्म, शुष्क ग्रीष्मकाल और हल्की, गीली सर्दियां, जो चैपरल (भूमध्यसागरीय झाड़ी) जैसी सूखा-प्रतिरोधी झाड़ीदार वनस्पति को बढ़ावा देती हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- डीएफसी (उप-आर्कटिक जलवायु - ठंडी ग्रीष्म ऋतु): इसमें लंबी, ठंडी सर्दियां और छोटी, ठंडी ग्रीष्म ऋतु होती है, जो विशाल शंकुधारी वनों को सहारा देती है, जिन्हें बोरियल वन या टैगा के नाम से जाना जाता है।
- ईटी (टुंड्रा जलवायु): वर्ष के अधिकांश समय में शून्य से नीचे तापमान के साथ अत्यंत ठंडी परिस्थितियां, कम उगने वाली टुंड्रा वनस्पति (काई, लाइकेन, बौनी झाड़ियां) को बढ़ावा देती हैं।
- ये युग्मन कोपेन जलवायु प्रकारों को उनके विशिष्ट संबद्ध वनस्पति बायोम से मेल खाते हैं।

9. अभिकथन (A): शहरी ताप द्वीप (UHI) की विशेषता यह है कि शहरी क्षेत्रों में उनके आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में, विशेष रूप से रात में तापमान काफी अधिक होता है।

कारण (R): शहरी सतहें (कंक्रीट, डामर) अधिक सौर विकिरण को अवशोषित करती हैं और धीरे-धीरे गर्मी छोड़ती हैं, साथ ही वनस्पति आवरण कम होता है और मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न अपशिष्ट गर्मी शहरी तापमान को बढ़ाने में योगदान देती है।

उपरोक्त कथनों के आधार पर, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनिए:

1. (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
2. (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
3. (A) सही है लेकिन (R) सही नहीं है।
4. (A) सही नहीं है लेकिन (R) सही है।

उत्तर: 1. (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

स्पष्टीकरण:

- अभिकथन (A): शहरी ऊष्मा द्वीप प्रभाव एक अच्छी तरह से प्रलेखित घटना है जहां शहर आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक गर्म होते हैं, और तापमान का अंतर अक्सर सूर्यास्त के बाद शांत रातों के दौरान सबसे अधिक स्पष्ट होता है।
- कारण (R): यह कथन प्राथमिक कारणों की सही पहचान करता है: शहरी सामग्रियों की कम एल्विडो और उच्च तापीय क्षमता के कारण अधिक ऊष्मा अवशोषण और अवधारण होता है; कम वनस्पति के कारण कम वाष्पोत्सर्जन होता है; और इमारतों, वाहनों और उद्योग से मानवजनित ऊष्मा का उत्सर्जन होता है।
- (R) में सूचीबद्ध कारक प्रत्यक्ष भौतिक तंत्र हैं जो (A) में वर्णित तापमान अंतर का कारण बनते हैं।
- इसलिए, दोनों कथन सही हैं और (R) (A) को स्पष्ट करता है।

10. निम्नलिखित में से कौन सी भौगोलिक विशेषताएँ सामान्यतः हिमानी अपरदन से निर्मित होती हैं?

ए. ड्रमलिस

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

- बी. सर्कस (कोरीस)
- सी. एस्कर्स
- डी. एरेटेस
- ई. मोरेन्स

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

1. केवल A, C, और E
2. केवल B और D
3. केवल A, B, और D
4. केवल C, D, और E

उत्तर: 2. केवल B और D

स्पष्टीकरण:

- ए. ड्रमलिंग्स (गलत): बर्फ की चादर के नीचे हिमनद जमाव द्वारा निर्मित सुव्यवस्थित पहाड़ियाँ।
- बी. सर्कस (कोरीज़) (सही): घाटी के ग्लेशियर के शीर्ष पर हिमनदीय अपरदन द्वारा निर्मित कटोरे के आकार के गड्ढे।
- सी. एस्कर्स (गलत): ग्लेशियरों के भीतर, नीचे या ऊपर बहने वाली पिघली हुई जल धाराओं द्वारा निर्मित रेत और बजरी की लकीरें (निक्षेपण)।
- डी. एरेट्स (सही): दो समीपवर्ती सर्कों के एक-दूसरे से सटे होने के कारण हिमनदीय अपरदन के कारण बनी तीखी, चाकू जैसी धार वाली लकीरें।
- ई. हिमोड (गलत): हिमोड (अनसॉर्टेड मलबे) का संचय जो ग्लेशियरों द्वारा जमा किया जाता है (जैसे, पार्श्व, मध्यवर्ती, टर्मिनल हिमोड)।

11. जनसांख्यिकी संक्रमण मॉडल के किस चरण की विशेषता कम जन्म दर और कम मृत्यु दर है, जिसके परिणामस्वरूप स्थिर या धीमी गति से बढ़ती जनसंख्या होती है?

1. चरण 1 (उच्च स्थिर)
2. चरण 2 (प्रारंभिक विस्तार)
3. चरण 3 (देर से विस्तार)
4. चरण 4 (निम्न स्थिर)

उत्तर: 4. चरण 4 (निम्न स्थिर)

स्पष्टीकरण:

All Subject's Complete Study Material KIT available.

Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788



TESTIMONIALS



Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."



Ravindra Yadav
UGC NET (Commerce)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."



Priya Mehta
UGC NET (Education)
Bangalore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."



Swati Verma
UGC NET (English Literature)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."



Aman Joshi
UGC NET (Sociology)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."



Riya Sharma
UGC NET (Psychology)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."



Anjali Singh
UGC NET (Political Science)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."



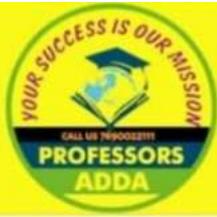
Aditya Verma
UGC NET (History)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY



+91 7690022111 +91 9216228788



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers



**GET BEST
SELLER
HARD COPY
NOTES**



**PROFESSORS
ADDA**

**CLICK HERE
TO GET**



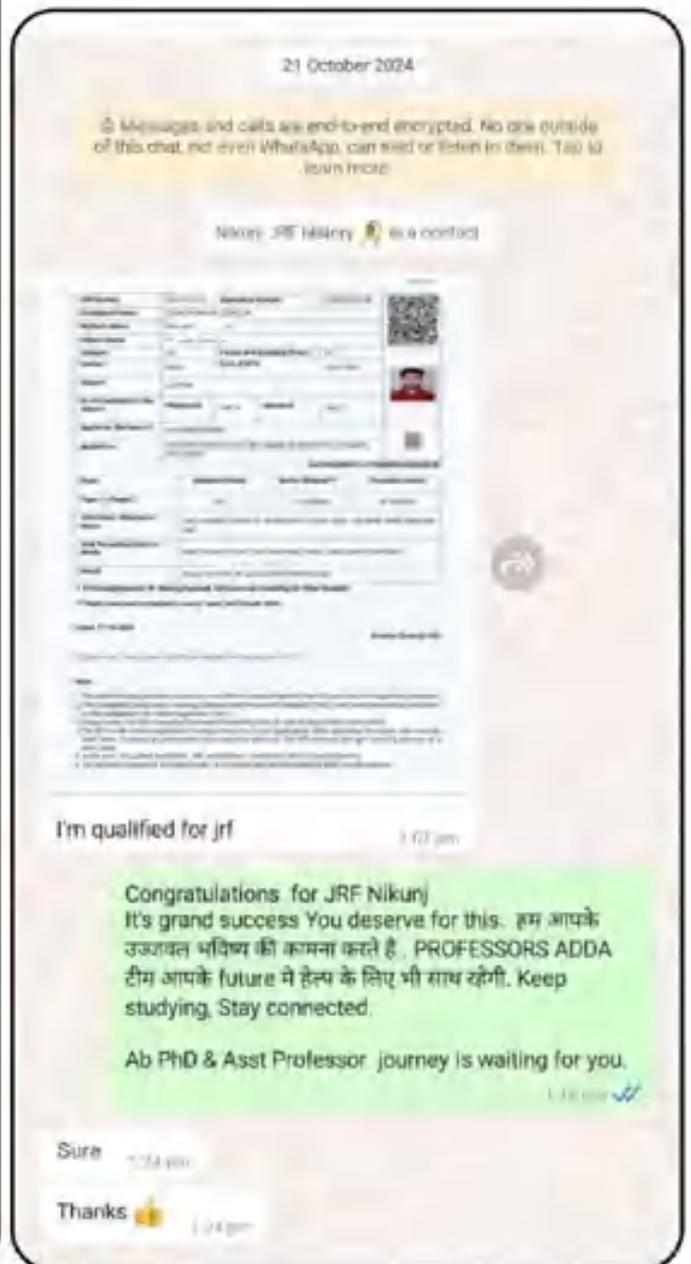
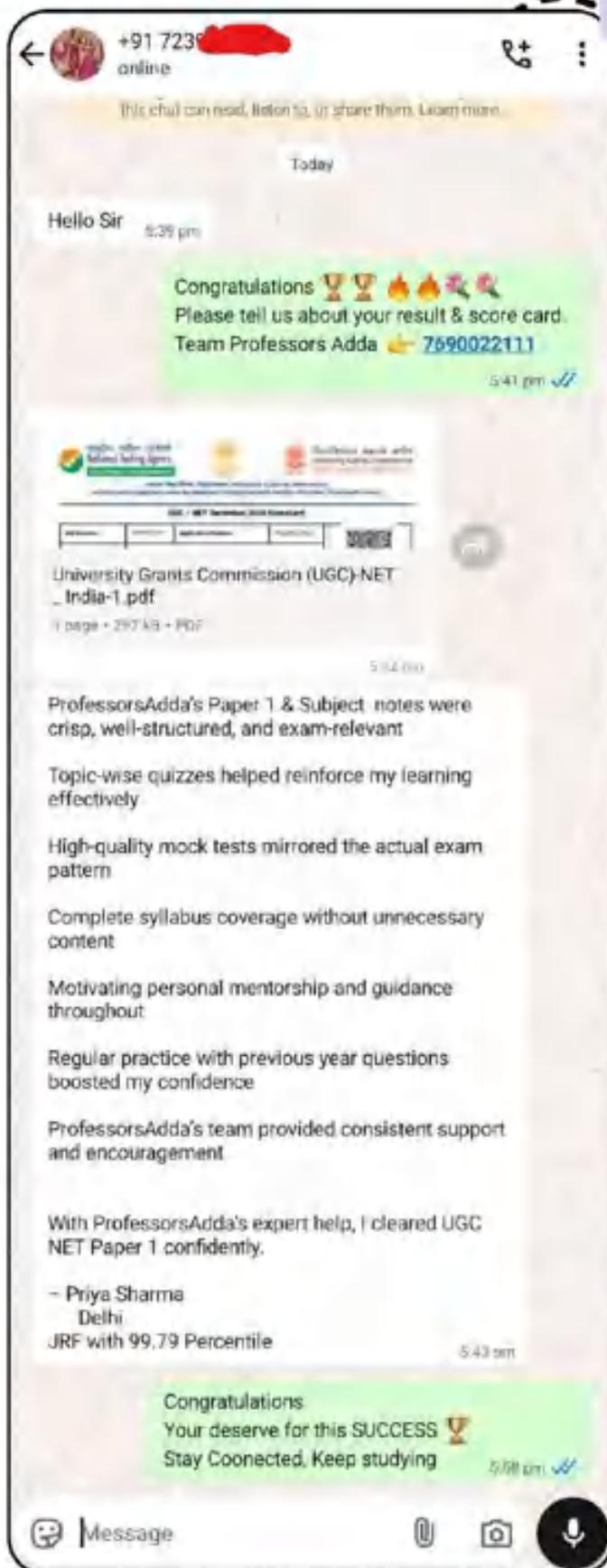
+91 7690022111 +91 9216228788



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers



+91 7690022111 +91 9216228788



TESTIMONIALS



Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."



Ravindra Yadav
UGC NET (PAPER 1)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."



Priya Mehta
UGC NET (PAPER 1)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."



Swati Verma
UGC NET (PAPER 1)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."



Aman Joshi
UGC NET (PAPER 1)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."



Riya Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."



Anjali Singh
UGC NET (PAPER 1)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."



Aditya Verma
UGC NET (PAPER 1)
Guwahati

"The institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY



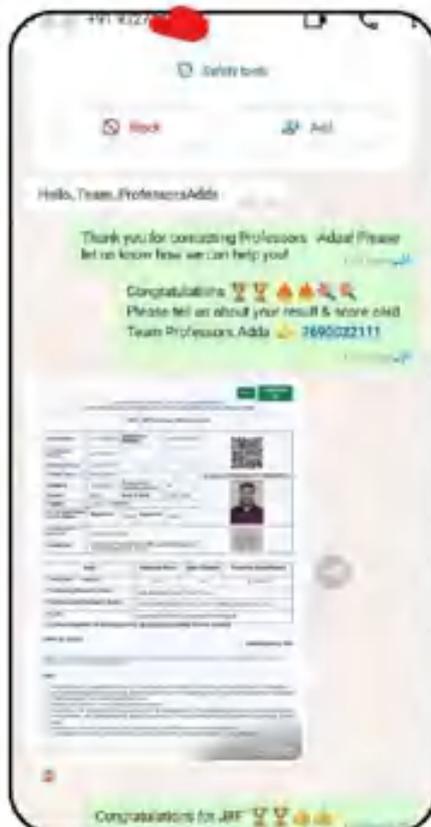
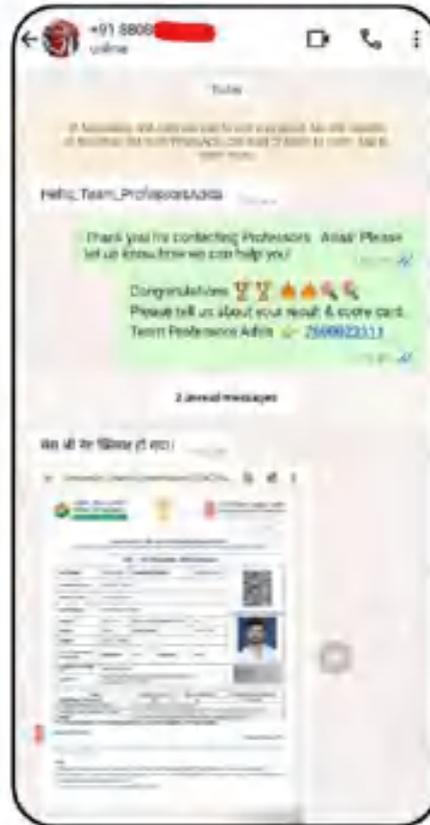
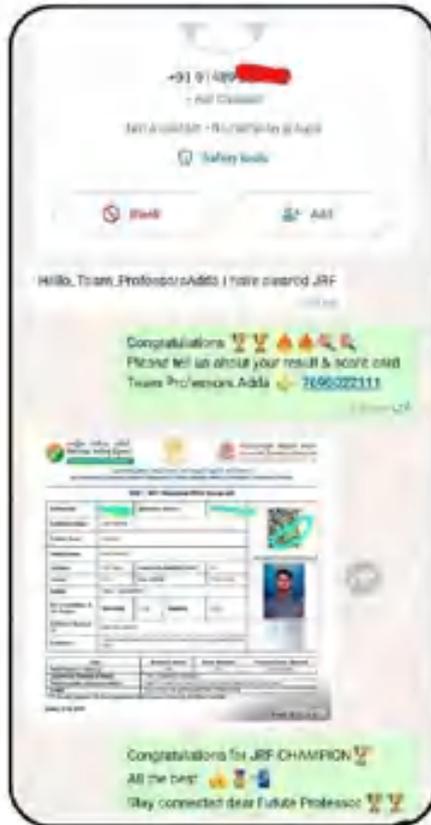
+91 7690022111 +91 9216228788



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers



+91 7690022111 +91 9216228788



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

←  Professors Adda UGC NE 
87162 members, 2123 online

 **Pinned Message** 
Offer 🌸 UGC -NET / JRF ASST PROFESSO...

   2478 join requests 

 ProfessorsAdda NET JRF

Dear Students ! Hme daily NET / JRF Qualified students ke msg mil rhe hai. So, aap bhi aapne Result pr tick kre  ..Agr hmari Hard work aapke result me convert hoti hai, to hmari Team NET students ke liye aur bhi EXTRA work kregi . @ProfessorsAdda

Anonymous Poll

- 28% NET + PhD NET+PhD SELECTION 631 
- 17% JRF JRF SELECTION 383 
- 23% Only PhD 
- 30% Planning for upcoming NET exam 
- 13% Already NET / JRF Cleared . Next target for PhD / Asst Professor Exams . 
- 8% Get Asst Professor study kit & future Academic help from our EXPERT team. WhatsApp 7690022111 

2254 votes

 53.3K 7:38 AM 

**OUR
UGC NET
SELECTION
RESULTS**



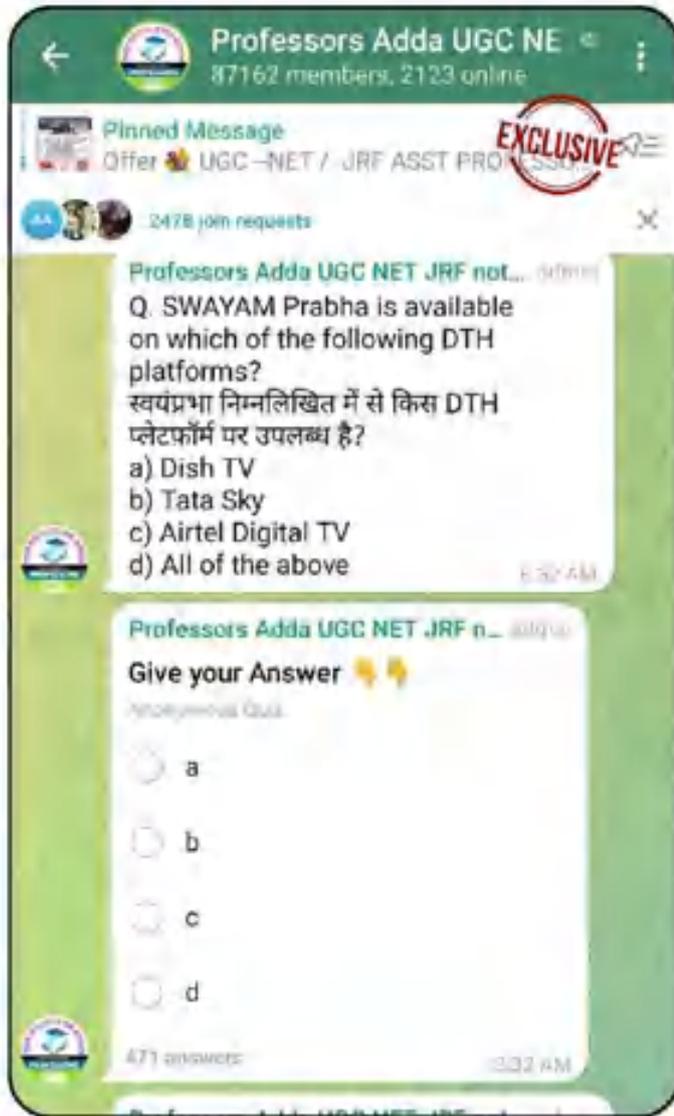
+91 7690022111 +91 9216228788



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Exclusive English
GROUP



INDIA'S NO 1 UGC NET
GROUP



CLICK HERE TO JOIN



+91 7690022111 +91 9216228788



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

**OUR
UGC NET
SELECTION
RESULTS**

MANY MORE SELECTION



+91 7690022111 +91 9216228788



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

10 Unit Theory Notes

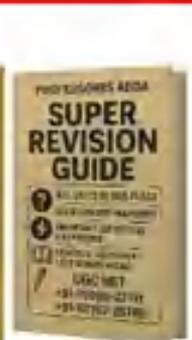
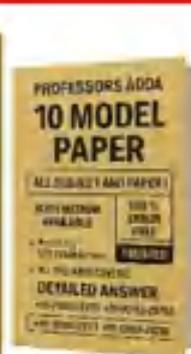
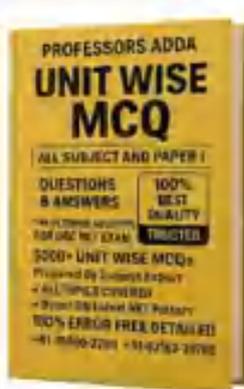
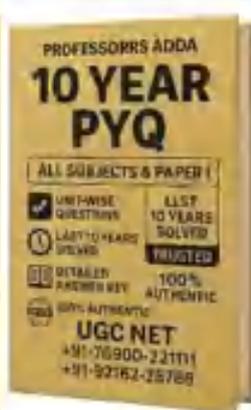
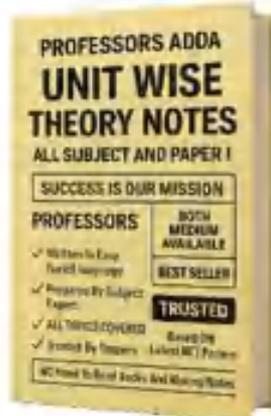
Unit Wise MCQ Bank

Latest 10 YEAR PYQ

Model Papers

One Liner Quick Revision Notes

Premium Group Membership



FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP



91-76900-22111



PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

**NEW
PRODUCT**

10 Unit Theory Notes

Unit Wise MCQ Bank

Latest PYQ

Model Papers

One Liner Quick
Revision Notes

Premium Group
Membership

PROFESSORS ADDA

ONE STOP SOLUTION FOR UGG NET JRF PGT

PROFESSORS ADDA

ONE STOP SOLUTION FOR UGG NET JRF PGT

PROFESSORS ADDA

ONE STOP SOLUTION FOR UGG NET JRF PGT

PROFESSORS ADDA

ONE STOP SOLUTION FOR UGG NET JRF PGT

NAME DR ANKIT SHARMA

PROFESSORS ADDA

ONE STOP SOLUTION FOR UGG NET JRE PGT

NAME **Waiting for your name**

**Address : Waiting for
your Addrees**



FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

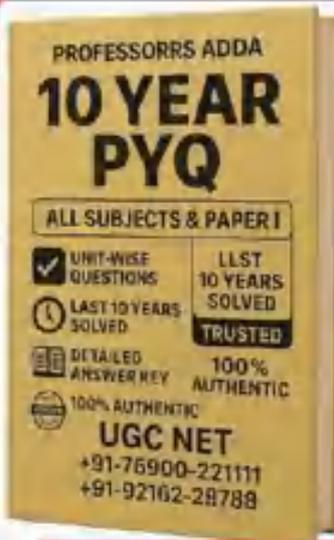
Download **PROFESSORS ADDA APP**



91-76900-22111

OUR ALL PRODUCTS

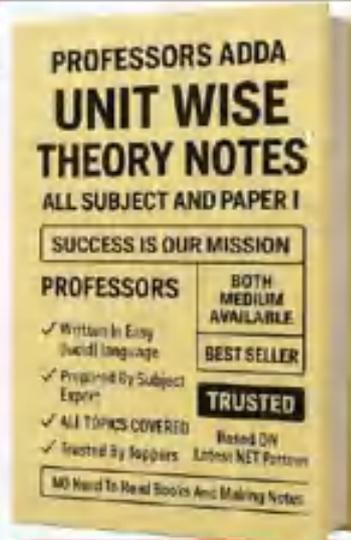
NEW PRODUCT



CLICK HERE



NEW PRODUCT



CLICK HERE



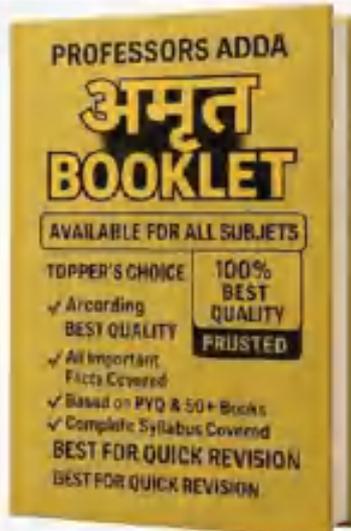
NEW PRODUCT



CLICK HERE



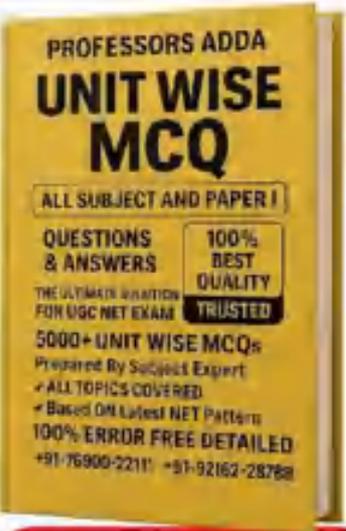
NEW PRODUCT



CLICK HERE



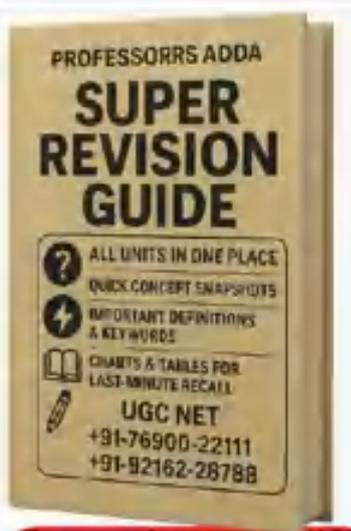
NEW PRODUCT



CLICK HERE



NEW PRODUCT



CLICK HERE



+91 7690022111 +91 9216228788